राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

अध्यापक सहायक पुस्तिका

कक्षा आठवीं व नवीं द्वितीय भाषा हिंदी
की
नवीन पाठ्यपुस्तकों के लिए

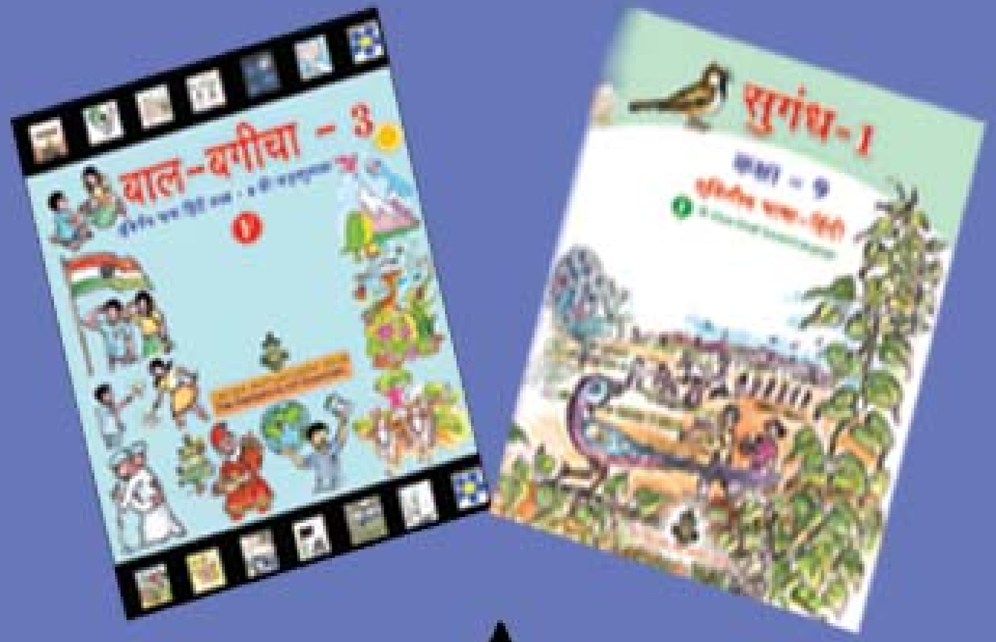
बाल-बगीचा - 3
सुगंध-1
कक्षा - 9
द्वितीय भाषा-हिंदी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

छात्रों, अध्यापकों के लिए शिक्षोपयोगी वेबसाइटों की सूची

www.saralhindi.com
www.ncert.nic.in
www.pustak.org
hi.wikipedia.com
books.hinkhoj.com
www.computerseekho.com
www.kavitakosh.com
www.gadyakosh.com
www.egurucool.com
www.schoolcircle.com
www.netvarsity.com
www.onlinevarsity.com
www.shiksha.com
www.buckleyourshoe.com
www.freeskills.com
www.smartforce.com/smb
www.examsonline.com
www.competitionmaster.com
www.mastertutor.com
www.zeelearn.com
www.netprotraining.com
www.careerlauncher.com
www.classteacher.com
www.gurukulonline.com
www.iln.net
www.esaras.com
www.lycoszone.com
www.pinkmonkey.com
www.schoolsofcalcutta.com
www.entranceguru.com
www.pentafour.com
www.Qsupport.com
www.intelsyseducation.com
www.niit.com
www.aptech.com
www.institute.net
www.indiaedu.com
www.educationbangalore.com
www.upsc.gov.in
www.ed.gov
www.educationworld.com
www.nativechild.com
www.educationtimes.com
www.chemketaonline.com
www.getsmartonline.com
www.fastboot.scom
www.batchmates.com
www.fluentzy.com
www.teenfunda.com
www.sparkinglearning.com
www.zipahead.com
www.wiltiky.com
www.bostonci.com
www.sophiaopp.org
www.mindzones.com
www.kaplancollege.com
www.tutor4computer.com
www.talentduniya.com
www.worlduonline.com
www.englishpractice.com
www.barkeley.edu
www.utexas.edu
www.mit.edu
www.umich.edu
www.uiuc.edu
www.upenn.edu
www.wisc.edu
www.harvard.edu
www.cornell.edu
www.unc.edu
www.education-world.com
www.novell.com
www.gnacademy.org
www.shawguides.com
www.ias.org
www.apple.com
www.classroom.net
www.allindia.com
www.funbrain.com
www.petersons.com
www.educationplanet.com
www.discoveryschool.com
www.eduplace.com.com
www.free-ed.net

®

अनमोल वचन

बिना शिक्षा प्राप्त किये कोई व्यक्ति अपनी परम ऊँचाइयों को नहीं प्राप्त कर सकता।
- अब्राहम लिंकन

शिक्षा अपने क्रोध या अपने आत्मविश्वास को खोये बिना लगभग कुछ भी सुनने की क्षमता है। **- रॉबर्ट फ्रोस्ट**

शिक्षा स्वतंत्रता के स्वर्ण दूवार खोलने की कुंजी है। **- जॉर्ज वाशिंगटन**

जो आपने सीखा है उसे भूल जाने के बाद जो रह जाता है, वह शिक्षा है। **- स्किनर**

शिक्षा का लक्ष्य है खाली दिमाग़ को खुले दिमाग़ में परिवर्तित करना **- मैल्कम फोर्ब्स**

जिम्मेदारी शिक्षित करती है। **- वेंडेल फिलिप्स**

भविष्य में वो अनपढ़ नहीं होगा जो पढ़ ना पाये, बल्कि अनपढ़ वो होगा जो ये नहीं जानेगा कि सीखा कैसे जाता है। **- अल्विन टोफ्लर**

शिक्षा का उद्‌देश्य है सभी अवस्था के लोगों को जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करना
- एम. हचिंस

जीवन में बस वही वास्तविक असफलता है जिससे आपने सीख नहीं ली।
- अंथोनी डी. एंजिलो

शिक्षा की जड़ कड़वी है, किंतु उसके फल मीठे हैं। **- अरस्तु**

बच्चों को शिक्षित किया जाना चाहिए, किंतु उन्हें स्वयं भी शिक्षित होने के लिए स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। **- एर्न्स्ट डिम्नेट**

सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी संसाधक, एस. सी. ई. आर. टी., आंध्र प्रदेश

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री मोहम्मद सुलेमान 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री जयप्रकाश जोसफ
जिला हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री के. शिवराजन
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

डॉ. मोहम्मद खदीरुल्ला
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

समन्वयक

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी संसाधक, एस. सी. ई. आर. टी., आंध्र प्रदेश

डॉ. राजीव कुमार सिंह
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

श्री मोहम्मद सुलेमान 'आदिल'
राज्य हिंदी संसाधक, आंध्र प्रदेश

विषय सलाहकार

श्री सुवर्ण विनायक
शैक्षिक सलाहकार, एस.सी.ई.आर.टी., आंध्र प्रदेश

आयोजन प्रभारी

डॉ. एन. उपेंदर रेड्डी
प्रोफेसर, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तक विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., आंध्र प्रदेश

प्रधान कार्यकारी अधिकारी

श्री जी. गोपाल रेड्डी
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., आंध्र प्रदेश

आमुख

विद्‌यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवीन पाठ्‌यपुस्तकें तैयार करने का कार्य गत तीन वर्षों से चल रहा है। इसी क्रम में गत वर्ष छठवीं, सातवीं की पाठ्‌यपुस्तकें तैयार की गयी थीं। इस वर्ष आठवीं व नवीं कक्षा की पुस्तकें तैयार की गयी हैं।

राष्ट्रीय आवश्यकता और बदलती परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए स्थानीय पाठ-सारणी में परिवर्तन कर राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने की दिशा में प्रांतीय पाठ्‌यपुस्तकों में परिवर्तन लाना सहज है। इस संदर्भ में राज्य शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश के द्‌वारा निर्मित पुस्तकों के बारे में अध्यापकों को पूर्ण रूप से ज्ञान होने पर ही विद्‌यार्थियों को अपेक्षित अधिगम उपलब्धियाँ प्राप्त हो सकेंगी और लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायता मिलेगी। इसकी सफलता के लिए सहायक पुस्तिका तैयार की गयी है। आठवीं व नवीं की हिंदी पाठ्‌यपुस्तकों के संचालन व उपयोग के संबंध में पूर्ण जानकारी एक सहायक-पुस्तिका के द्‌वारा ही दी जा सकती है, ऐसी हमारी सोच है। इसी उद्‌देश्य से इस सहायक-पुस्तिका का निर्माण किया गया है।

आशा है कि अध्यापक इसका लाभ उठायेंगे। इसके लिए रटने की पद्‌धति को छोड़कर अनुभव के आधार पर सचेतन दृष्टिकोण विकसित किया जाना चाहिए। महान अध्यापक डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है- ''डिग्री के साथ-साथ मानवीय गुणों का विकास भी होना चाहिए। मानव जीवन भी प्रकृति की तरह ही गतिशील है। इसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है।''

मनुष्य ने अपने स्वनिर्मित कुछ नियम, आचार-विचार, विश्वास, रीति-रिवाज आदि बना रखे हैं। उनकी बनायी हुई परंपराएँ ही आज रूढ़ियाँ बन गई हैं। इस कारण पीढ़ियों का संघर्ष, बदलते नैतिक मूल्य आदि देखे जा सकते हैं। इन रूढ़ियों को तोड़ने के लिए हमें अपने छात्रों को तैयार करना होगा। छठवीं, सातवीं की पाठ्‌यपुस्तकों के प्रति अध्यापकों, विद्‌यार्थियों व समाज द्‌वारा प्राप्त सुझावों से यह साबित हुआ है। इस प्रेरणा से आठवीं व नवीं की हिंदी पाठ्‌यपुस्तक को और अधिक गुणात्मक, आकर्षक, उद्‌देश्यपूर्ण बनाने का प्रयत्न किया गया है।

पाठ्‌यपुस्तक को पूर्ण रूप से अवगत कराना ही इस सहायक पुस्तिका का मुख्य उद्‌देश्य है। पुस्तकों को समझने के लिए केवल इसके पाठों को समझना ही काफ़ी नहीं है। पुस्तक में पाठ के अंतर्गत दिये, 'प्रस्तावना प्रसंग', 'पाठ का उद्‌देश्य', 'अभ्यास-कार्य', 'स्वमूल्यांकन' आदि को समझकर उसके समुचित निर्वाह की भी आवश्यकता है। इन सभी को समझने पर ही पाठ्‌यपुस्तक को पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। इसके लिए हम आशा करते हैं कि अध्यापक पाठ्‌यपुस्तक को पूर्ण रूप (आमुख से शब्दकोश तक) से पढ़ने व समझने का प्रयास करेंगे।

साधारणतः आजकल पाठ्‌यक्रम पूरा करना ही अध्यापन समझा जा रहा है, जो पर्याप्त नहीं है। किस

पाठ का क्या उद्‌देश्य है, किस अभ्यास के द्‌वारा किन उद्‌देश्यों की पूर्ति की जा सकती है, विविध अभ्यास-प्रश्नों के स्वरूप में क्या अंतर है, इन सब विषयों को हमें ध्यान में रखना होगा। पाठ्‌यपुस्तक में दी गई अपेक्षित दक्षताओं को शिक्षण व मूल्यांकन के समय ध्यान में रखना आवश्यक है।

आमुखः पाठ्‌यपुस्तक के उद्‌देश्य, पृष्ठभूमि, अपेक्षित दक्षताओं आदि की जानकारी।

अध्यापकों के लिए सूचनाएँः शिक्षण सामग्री, शिक्षण योजना, पाठ संयोजन, अभ्यास का स्वरूप, सतत्‌ समग्र मूल्यांकन आदि संबंधी जानकारी।

संगीत वाद्‌य कितना भी कीमती हो, उसके उपयोग के कितने भी सुलभ तरीके हों, लेकिन संगीतकार कुशल न हो तो सब निरर्थक है, उसी प्रकार पाठ्‌यपुस्तक की गुणवत्ता का लाभ कुशल अध्यापकों के सार्थक प्रयत्न द्‌वारा ही संभव है।

यह कार्य समग्र, संपूर्ण रूप से सफलतापूर्वक पूर्ण करने में सभी का दायित्व है। इसमें भाग लेने में सभी के प्रति हम कृतज्ञ हैं। पाठ्‌यपुस्तक का उद्‌देश्य प्राप्त करने में सभी की सहायता की आशा करते हैं...

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,

आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

विषयसूची

अध्याय - 1 पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता पृष्ठ सं. 01

अध्याय - 2 अभ्यास-स्वभाव-विश्लेषण पृष्ठ सं. 10

अध्याय - 3 शिक्षण योजना नीति - सोपान पृष्ठ सं. 14

अध्याय - 4 पाठानुसार अपेक्षित दक्षताएँ पृष्ठ सं. 21

अध्याय - 5 शैक्षिक सोपान - पाठ योजना पृष्ठ सं. 38

अध्याय - 6 अध्यापक की तैयारी और संसाधन पृष्ठ सं. 53

अध्याय - 7 संदर्भ सूची पृष्ठ सं. 60

अध्याय - 8 उपसंहार पृष्ठ सं. 78

अध्याय-1

पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता

छात्रों में सब को समझने, संकटों का सामना करने व विविध परिस्थितियों में अर्जित ज्ञान का समुचित प्रयोग करने की क्षमताओँ का विकास करना ही पाठ्यपुस्तक का मूल लक्ष्य है। सब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अधिकारी हैं। यह राष्ट्र का प्राथमिक उद्देश्य है। इस संबंध में एनसीईआरटी ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 द्वारा अपने सुझाव दिये हैं। एनसीएफ-2005, आरटीई-2009, एपीएससीएफ-2011 आदि के सुझावों को ध्यान में रखते हुए राज्य शैक्षिक अनुंसधान एवं प्रशिक्षण परिषद, आंध्र प्रदेश ने नवीन पाठ्यपुस्तक की रूपरेखा तैयारी की है। इसके अनुसार बच्चों में कल्पनाशीलता व सहज गुणों का विकास करने में पाठ्यपुस्तक सहायक होनी चाहिए।

नवीन पाठ्यपुस्तकों की दार्शनिक पृष्ठभूमि समझने के लिए हमें नीचे दिये गये प्रश्नों पर विचार करना होगा।

1. पाठ्यपुस्तक किन-किन सूत्रों के आधार पर तैयार की गयी है?
2. नवीन पाठ्यपुस्तकों की क्या विशेषता है?
3. नवीन पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यांशों के भाव क्या हैं?
4. नवीन पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यांशों का संयोजन (इकाई संरचना) किस प्रकार है?
5. नवीन पाठ्यपुस्तकों में किन शिक्षण विधियों का समावेश है?
6. आमुख के मुख्य अंश क्या हैं?
7. अध्यापकों के लिए सूचना में किन-किन अंशों पर चर्चा की गयी है?

उपर्युक्त प्रश्नों पर विचार करने से नवीन पाठ्यपुस्तकों के मूल सूत्र पहचाने जा सकते हैं। वे हैं-

(अ) नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में निम्न विशेष गुण होने चाहिए-

1. छात्रों को सोचने के भरपूर अवसर मिलें।
2. छात्रों को परस्पर प्रतिक्रिया करने के अनुकूल हों।
3. छात्रों में मानवीय, जीवन कौशल संबंधी गुणों के विकास के संदर्भ होने चाहिए।
4. कक्षा में भाषा कौशलों के विकास व बहुभाषिकता को प्रधानता मिलनी चाहिए।
5. संस्कृति, संप्रदाय, कला, साहित्य से संबंधित पाठ्यांश सम्मिलित किये जाने चाहिए।
6. छात्रों को स्वाध्याय के अवसर मिलने चाहिए।
7. पाठ का प्रारूप सुगठित होना चाहिए।
8. दैनिक जीवन में उपयोग के अवसर मिलने चाहिए।
9. चर्चा को स्थान मिलना चाहिए।
10. विषयवस्तु रोचक और मनोरंजक होनी चाहिए।
11. छात्रों को तार्किक चिंतन करने के लिए उचित संदर्भ होने चाहिए।

12. समकालीन सामाजिक संदर्भों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक होनी चाहिए।

13. विद्यार्थियों के लिए स्वमूल्यांकन का अवसर होना चाहिए।

14. पाठ्यांशों को दर्शाने वाले चित्र आकर्षक होने चाहिए।

15. सृजनात्मक गतिविधियाँ उचित रूप से दी जानी चाहिए।

2. नवीन पाठ्यपुस्तकों की क्या विशेषता है?

♦ यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर तैयार की गई है।

इसमें पारंपरिक एवं नवीन भाषा-शिक्षण की प्रविधियों का समावेश है।

यह भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानती है।

पाठ्यक्रम के चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता भी ध्यान में रखा गया है।

इसमें प्रकृति, समाज, विज्ञान, बाज़ार, इतिहास इत्यादि के प्रति विद्यार्थी को जिज्ञासु बनाने का प्रयास किया गया है, क्योंकि भाषा की भूमिका सर्वत्र है।

इस पाठ्यपुस्तक में मुद्रण एवं टंकण की दृष्टि से विविध प्रकार की प्रचलित पद्धतियों का प्रयोग किया गया है ताकि छात्र इनसे भी अवगत हो सकें।

सृजनात्मक साहित्य हमारी भाषिक दक्षता को और सक्षम बनाता है। यह सौंदर्य-बोध को भी समृद्ध करता है। इसीलिए इसकी पाठ्य सामग्री में विषयगत विविधता, नवीनता है।

इस बात पर विशेष ज़ोर दिया गया है कि उन रचनाओं से बहुलवादी और धर्म-निरपेक्ष समाज का रूप भी सामने आए।

हम साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील व्यवहार का विकास कर सकें।

भारतीय समाज के बहुभाषिक परिवेश को भी ध्यान में रखा गया है।

3. नवीन पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यांशों के भाव क्या हैं?

पाठ्यांशों के भावों को मूलतः छह भागों में विभाजित किया गया है-

- सामाजिक मुद्दा

नारी शिक्षा, पर्यावरण, भेद-भाव, अस्पृश्यता, अंध-विश्वास आदि।

- बाल स्वभाव एवं रुचि

आदर्श बाल व्यक्तित्व, बाल सहज कल्पना, खेल-कूद आदि।

- वैज्ञानिक अंश

अंतरिक्ष विज्ञान, उपग्रह, साफ़-सफ़ाई, विज्ञान की देन आदि।

- हास्य, मनोरंजन, सृजनात्मकता

हास्य कथा, विज्ञापन, सिनेमा, पत्रिका, डायरी आदि।

- मानव मूल्य व संसाधन

नीति, मानवता, जीवन कौशल, सूक्ति आदि।

- संस्कृति, संप्रदाय व धर्म

त्यौहार, ऐतिहासिक कथा, उत्सव आदि।

4. नवीन पाठ्यपुस्तकों में पाठ्यांशों का संयोजन (इकाई संरचना) किस प्रकार है?

पाठ्यपुस्तक के बारह पाठों में विविध विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। इन्हें चार इकाइयों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक इकाई पाठ में तीन-तीन पाठ हैं। इनके अतिरिक्त प्रत्येक इकाई में एक पठन हेतु व उपवाचक पाठ हैं। इकाई विभाजित करते समय कालांशों को ध्यान में रखा गया है।

5. नवीन पाठ्यपुस्तकों में किन शिक्षण विधियों का समावेश है?

नवीन पाठ्यपुस्तकों में विविध शिक्षण प्रविधियों को सम्मिलित रूप से प्रयोग किया गया है। इसमें प्रमुख हैं- क्रिया द्वारा सीखना, अनुभव द्वारा सीखना, निरीक्षण करके सीखना, सर्वेक्षण करके सीखना, अभ्यास द्वारा सीखना, व्यक्तिगत व सामूहिक क्रियाकलाप द्वारा सीखना आदि।

6. आमुख के मुख्य अंश क्या हैं?

ग्यारह-बारह वर्ष आयु में बालक भाषा का अर्थ और महत्व समझते हैं।

साथ-साथ अपनी मातृभाषा व अंग्रेज़ी की भी जानकारी रखते हैं।

वे अपने अड़ोस-पड़ोस से भी कुछ हिंदी भाषा के शब्द सीख लेते हैं।

बालक भाषा अधिगम साधारणतया सहज व व्यावहारिक रूप में करते हैं।

इन बातों व एनसीएफ-२००५, आरटीई-२००९, एससीएफ-२०१० एवं आधार पत्र-२०११ के सुझाव।

इस स्तर पर छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना, छात्रों को जिज्ञासु बनाना व सहज, व्यावहारिक एवं मनोरंजक रूप से भाषार्जन के लिए प्रेरित करना हिंदी शिक्षण के उद्देश्य रहे हैं।

सातवीं कक्षा के स्तर पर सुनना,बोलना कौशलों में छात्रों को सक्षम बनाने का प्रयास किया गया है।

आठवीं कक्षा के स्तर पर पठन व लेखन के साथ-साथ सृजनात्मकता में सक्षम बनाने के अनुरूप पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है।

इस पाठ्य-पुस्तक में गीत, कविताएँ, कहानियाँ, भाषण लेख, साक्षात्कार, समीक्षा, पत्र, निबन्ध आदि के साथ-साथ रोचक द्रुत पाठ भी दिये गये हैं।

इन्हें बालकों के व्यावहारिक जीवन से जोड़ा गया है।

इनके द्वारा छात्रों में, सोच-विचार कर उत्तर देना, तुलना कर निष्कर्ष निकालना और नवीन ज्ञान का संबंध पूर्व ज्ञान से जोड़ने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

इससे बालक को सृजनशीलता के भरपूर अवसर मिलते हैं। वे अर्जित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान की रचना करते हैं। ये अभ्यास सहज व व्यावहारिक रूप से भाषार्जन करने में सहायक हैं।

7. अध्यापकों के लिए सूचना में किन-किन अंशों पर चर्चा की गयी है?

✳ इस पाठ्य-पुस्तक में 12 पाठ हैं। इन्हें चार इकाइयों में विभाजित किया गया है। इन्हें निर्धारित वार्षिक पाठयोजना के अनुसार पढ़ायें।

✳ इस पाठ्य-पुस्तक में अपेक्षित कौशलों व सामर्थ्यों की सूची दी गयी है। इसी के आधार पर छात्रों में दक्षताओं और उच्चतम बौद्धिक कौशलों (HOTS) का विकास करने पर ध्यान दें।

✳ पाठ्य-पुस्तक में पाठ संबंधी चित्र दिये गये हैं। इनके माध्यम से छात्रों से बातचीत करवायें। दिये गये प्रश्नों के आधार पर बालकों को विविध दृष्टिकोण से सोचने का अवसर दें।

✳ पाठ का अध्यापन संदर्भोचित चित्र या प्रस्तावना चित्र से आरंभ हुआ है। इनसे संबंधित

विचारशील प्रश्न पूछें।

* हर पाठ के अभ्यास में **अर्थग्राहूयता-प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता, भाषा की बात व परियोजना कार्य** संबंधी अभ्यास दिये गये हैं। इन सभी का सदुपयोग कर छात्रों में भाषागत कौशलों व विविध दक्षताओं का समुचित विकास करने का प्रयास करें। कविता, गीत, पद्य, वार्तालाप या कहानी आदि पाठों के लिए सुनने-बोलने संबंधी क्रियाएँ कक्षा में सामूहिक रूप से करवायें। सबको स्वतंत्र व सहज रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

* अभिव्यक्ति-सृजनात्मक अभ्यास कार्य छात्रों को समूहों में बाँटकर करवायें, जिससे उनमें सामूहिक रूप से कार्य करने की प्रवृत्ति का विकास हो। इन अभ्यास कार्यों के निर्देश छात्रों को भली-भाँति समझने का अवसर दें, जिससे वे स्वयं अभ्यास कर सकें।

* इस पाठ्य-पुस्तक में बालक के व्यावहारिक जीवन में आनेवाली शब्दावली का प्रयोग किया गया है। इस पर ध्यान देते हुए भाषा-अधिगम की प्रक्रिया का संबंध बालक के जीवन से जोड़ें ताकि बालक सरलता से भाषागत विकास कर सकें।

* यह पुस्तक बालक को पुस्तकालय की विविध पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरणा देती है। अतः इस दिशा में बालकों को प्रेरित करें।

* हर इकाई में एक द्रुत पाठ भी दिया गया है। छात्र इस पाठ का पठन करके आत्मसात करने की क्षमता का विकास कर सकें। इस संदर्भ में अध्यापक छात्रों का सहयोग व मार्गदर्शन करें।

* विविध पाठों के आधार पर संदर्भानुसार छात्रों को मानव मूल्य, पर्यावरण, शांति, अहिंसा, संवैधानिक मूल्य आदि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दें, जिससे छात्र आदर्श नागरिक बन सकें और अपने भावी जीवन का निर्माण कर सकें।

* पाठ्यपुस्तक एक साधन मात्र है, साध्य नहीं। इस से छात्रों को विविध संचार माध्यमों से जोड़ने का प्रयास करें।

7. पाठः

प्रत्येक पाठ के आरंभ में बच्चों को पाठ के प्रति आकर्षित करने के लिए उन्मुखीकरण चित्र दिया गया है। बच्चों को स्वयं अध्ययन के लिए सूचनाएँ दी गयी हैं। विविध विधाओं के पाठ रखे गये हैं। कवि के चित्र के साथ कवि परिचय दिया गया है। पद्य भाग में भाव दिया गया है। इसी के साथ अपेक्षित दक्षताओं से संबंधित अभ्यास दिये गये हैं। साथ ही परियोजना कार्य भी दिये गये हैं।

8. अपेक्षित दक्षताओं पर आधारित अभ्यासः

भाषा अधिगम के लक्ष्य में प्रति पाठ के अंत में सात दक्षताओं पर आधारित अभ्यास दिये गये हैं। वे हैं-

आठवीं कक्षाः

1. सुनो-बोलो
2. पढ़ो
3. लिखो

4. शब्द-भंडार
5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति
6. प्रशंसा
7. भाषा की बात

- **प्रस्तावना प्रसंग** के शिक्षण में विशेष महत्व है। ये प्रत्येक पाठ के आरंभ में चित्र के साथ दिये गए हैं। प्रस्तुत प्रस्तावना प्रसंग के प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करवाते हुए पाठ के शिक्षण का आरंभ करें। यह मौखिक होना चाहिए।
- प्रत्येक पाठ में **परियोजना** है। इसका उद्‌देश्य अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार करना है।
- **'क्या मैं ये कर सकता हूँ'** में बच्चा स्वयं अपना आकलन करें, जिससे वह अपने सीखने के विकास से अवगत हो सके। अध्यापक इससे उसके सीखने में आने वाले अवरोधों के विषय में जानकर सुधार के प्रयत्न कर सकते हैं।
- पाठ्‌यपुस्तक में अभ्यासों के उद्‌देश्य स्पष्ट करने हेतु अपेक्षित कौशलानुसार अभ्यास-कार्य दिए गए हैं। प्रत्येक अभ्यास क्रियाकलाप संबंधित कौशलों के विकास के साथ-साथ बालक को सोचने का अवसर प्रदान करता है। आठवीं कक्षा में अपेक्षित कौशलों को सात बिंदुओं में विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित हैं-

सुनिए-बोलिए- इस कौशल का उद्‌देश्य बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करना है। यह अभिव्यक्ति बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न की रटी रटाई। अतः इस कौशल के अभ्यास में पाठ के संदर्भों पर बालक को विविध दृष्टिकोणों से सोचने और अपनी बात कहने का मौका मिले।

पढ़िए- इस कौशल का उद्‌देश्य विद्‌यार्थियों को पाठ बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित करना है जिससे वे पाठ को बेहतर समझ सकें, साथ ही वाचन कौशल का विकास भी हो। ध्यान रहे कि वाचन से अभिप्राय है- भाव समझते हुए पढ़ना।

लिखिए- इसके अंतर्गत बच्चों की लिखित अभिव्यक्ति के विकास पर ध्यान दिया जाए। यह अभिव्यक्ति भी बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न की रटी रटाई। इसमें बच्चे के स्वलेखन की झलक हो। बच्चा जो कुछ भी किसी तत्व के बारे में जानता हो उसे वह अपने शब्दों में शुद्‌ध, मौलिक व सुव्यवस्थित रूप में लिख सके।

शब्द भंडार- इसका उद्‌देश्य शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि के संदर्भोचित प्रयोग की योग्यता का विकास करना है।

भाषा की बात- इसका उद्‌देश्य छात्रों को भाषा संबंधी नियमों के बारे में जानकारी देते हुए उनमें भाषिक संरचना की समझ का विकास करना है।

प्रशंसा- इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सके। ज्ञान के सटीक व संदर्भोचित सामाजिक उपयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना इस कौशल का उद्‌देश्य है। वह प्राप्त ज्ञान के महत्व को समझते हुए उस ज्ञान के प्रति प्रशंसा का भाव रख सके।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति- बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, भाषण आदि बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं।

परियोजना कार्य - इसका उद्‌देश्य छात्रों में भाषाई कौशलों का विकास करने वाले संग्रहण कार्य करवाना है।

इसी तरह नवीं कक्षा की नवीन पाठ्‌यपुस्तक में अपेक्षित कौशलों व दक्षताओं को मुख्यतः चार बिंदुओं में पूछा गया है।

नवीं कक्षाः

1.अर्थग्राह्‌यता-अभिव्यक्ति

. विचार-विमर्श

. पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार।

2. अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता

स्वाभिव्यक्ति

सृजनात्मक कार्य

प्रशंसा।

3 **भाषा की बात**

शब्द-भंडार

व्याकरण अंश

4 **परियोजना कार्य**

- **अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मकता-** इसके अंतर्गत कुल तीन स्तंभ हैं- **स्वाभिव्यक्ति, सृजनात्मक कार्य एवं प्रशंसा। स्वाभिव्यक्ति** में विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति के विकास पर ध्यान दिया गया है। यह बालक के अनुभव पर आधारित होनी चाहिए न की रटी रटाई। इसमें उनके स्वलेखन की झलक हो। **सृजनात्मक कार्य** को भाषा कौशल का चरम विकास माना जा सकता है। बच्चों में कल्पनात्मक अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न दक्षताएँ निहित होती हैं। उन्हें अपने विचार मौखिक तथा लिखित रूप में अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। वे अपनी खुद की कहानियाँ, गीत, संवाद, पत्र-लेखन, कर-पत्र, सूचनाएँ, विज्ञापन, नाटक आदि का सृजन कर सकें। पुस्तकों की समीक्षा, प्रतिवेदन, चर्चा, भाषण आदि बच्चों के सृजनात्मक अभिव्यक्ति को इंगित करते हैं। **प्रशंसा** के अंतर्गत इस बात पर बल दिया गया है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सके। ज्ञान के सटीक व संदर्भोचित सामाजिक उपयोग करने की योग्यता उत्पन्न करना इस कौशल का उद्देश्य है। वह प्राप्त ज्ञान के महत्व को समझते हुए उस ज्ञान के प्रति प्रशंसा का भाव रख सके।
- **भाषा की बात** का उद्देश्य छात्रों को भाषा संबंधी नियमों के बारे में जानकारी देते हुए उनमें भाषिक संरचना की समझ का विकास करना है। साथ ही साथ शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का विविध संदर्भों में प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना भी है।
- विद्यार्थियों की अर्थबोध संबंधी कठिनाई के निवारण हेतु पाठ्यपुस्तक के अंत में शब्द-संपदा दी गई है। इसमें शब्दों के पाठ में आए संदर्भानुसार अर्थ दिए गए हैं।
- सभी बच्चों की सहभागिता का विशेष महत्व है। छात्रों की विविधता को ध्यान में रखते हुए उन्हें सहभागिता के अवसर मुहैया कराएँ। बच्चों को विविध संदर्भों के विषय में बातचीत के अवसर दें। उनसे प्रश्न पूछें। उन्हें भी प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें। व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों ही प्रकार के शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जिससे छात्रों में सहभागिता एवं सहयोग की भावना का विकास हो।
- प्रस्तावना प्रसंग का शिक्षण में विशेष महत्व है। ये प्रत्येक पाठ के आरंभ में हैं। प्रस्तावना प्रसंग के प्रश्नों के प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करवाते हुए पाठ के शिक्षण का आरंभ करें। ये क्रियाकलाप मौखिक होने चाहिए।
- प्रत्येक पाठ में परियोजना है। इसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को बाहरी परिवेश से जोड़कर उसका विस्तार करना है।

नवीन पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकताः

साधारणतया शिक्षा के चार मूल स्तंभ हैं। जिनके ऊपर संपूर्ण शिक्षा प्रणाली खड़ी है। इन चारों में से किसी के महत्व को भी कम नहीं आंका जा सकता। ये चार स्तंभ निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षा का उद्देश्य
2. शिक्षा के साधन
3. शिक्षा के साधनों का नियोजन
4. मूल्यांकन

1. शिक्षा का उद्देश्यः

एनसीएफ-2005, एपीएससीएफ-2011 और आरटीई-2009, भाषा का आधार पत्र इत्यादि को पढ़ने के बाद शिक्षा के मूल सरोकारों को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। ये

उद्देश्य प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा के मूल सरोकार के रूप में विद्यमान रहे हैं। आज भी शिक्षा के उद्देश्य के रूप में निस्संदेह महत्व रखते हैं।

- * बच्चों को इतना सक्षम बनाना कि वे जीवन का अर्थ समझ सकें। - **गाँधी दर्शन**
- * अपनी योग्यताओं का विकास करते हुए अपना सर्वांगीण विकास कर सकें। - **स्वामी विवेकानंद**
- * अपना सर्वांगीण विकास करते हुए दूसरे व्यक्ति को भी सर्वांगीण विकास करने का अधिकार दें। - **रवींद्रनाथ टैगोर**

2. शिक्षा के साधनः

अब तक हम शिक्षा के साधन के रूप में श्यामपट, खड़ियाँ, पाठ्यपुस्तक, श्रव्य-दृश्य सामग्री आदि को देखते रहे हैं। किंतु ये शिक्षा के भौतिक साधन हैं। यहाँ ''शिक्षा के साधन'' से हमारा अभिप्राय इन साधनों के पीछे छिपे दार्शनिक तत्वों से हैं, जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

भारतीय परिवेश की कुछ अपनी विशिष्टताएँ हैं। यहाँ का छात्र साधारणतया ही बहुभाषिक होता है। भारतयीय संस्कृति से उसे एक से अधिक धर्मों का ज्ञान होता है। वह विविध धर्मों, संस्कृतियों, सभ्यताओं पर आधारित उत्सवों व त्यौहारों में भाग लेता है। अतः हमें इन विविधताओं को आधार बनाते हुए उसके व्यक्तित्व के संतुलित विकास का प्रयत्न करना चाहिए। इन विविधताओं, विशिष्टताओं को साधन के रूप में अपनाना चाहिए। जैसे कि इस पाठ्यपुस्तक में किया गया है। इसके मूल साधन इस प्रकार हैं-

- * बहुभाषिकता
- * संस्कृति
- * समानता
- * धर्म
- * भाषा
- * जाति
- * रीति-रिवाज
- * साहित्य
- * इतिहास
- * समाज
- * पर्यावरण
- * नैतिकता
- * जीवन कौशल / विधान
- * विज्ञान
- * राष्ट्रीयता
- * लिंग भेद

3. शिक्षा के नियोजनः

वस्ततुतः हम शिक्षा में अनेक विधियों और प्रविधियों का उपयोग प्राचीन काल से ही करते आ रहे हैं। किंतु आज भी हमें अपनी शिक्षण विधियों में परिवर्तन की आवश्यकता प्रतीत होती है। इसके पीछे कारण ये हैं कि समाज परिवर्तनशील है और इस परिवर्तन से समाज, व्यक्ति, परिस्थितियाँ, कुछ भी अछूता नहीं है। अतः हमें इन प्रविधियों में से ऐसी प्रविधियों का चयन करना होगा, जो प्रत्येक परिस्थिति में उपयोगी सिद्‌ध हों तथा उनमें अनेक प्रविधियों का समावेश हो। साथ ही इनके प्रयोग द्‌वारा छात्र मानसिक रूप से सक्रिय रहे, उन्हें अनुभव को महत्व मिले, उन्हें ज्ञान निर्माण का अवसर भी मिले। ऐसी कुछ प्रविधियाँ निम्नलिखित हैं-

* निरीक्षण द्‌वारा सीखना
* सर्वेक्षण द्‌वारा सीखना
* अभ्यास द्‌वारा सीखना
* अंतःप्रेरणा द्‌वारा सीखना
* परियोजना द्‌वारा सीखना
* सहभागिता द्‌वारा सीखना
* निर्माणात्मकता द्‌वारा सीखना
* समावेशी शिक्षा द्‌वारा सीखना
* बहुभाषिकता द्‌वारा सीखना

4. मूल्यांकन - सतत समग्र मूल्यांकन (सीसीई):

प्रस्तवाना

सतत समग्र मूल्यांकन का अर्थ

सतत का अर्थ है निरंतर (मूल्यांकन में सतत की अवधारणा का उद्‌देश्य मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत लाना।)

समग्र का अर्थ है व्यापक व संपूर्ण। (शारीरिक, मानसिक, नैतिक और ज्ञानात्मक क्षेत्र में विकास की समग्रता।)

मूल्यांकन का अर्थ है बच्चों की विकासात्मक स्थिति का अंकन।

मापन, आकलन और मूल्यांकन में अंतर

आकलन के प्रकार

सीखने का आकलन

सीखने के लिए आकलन

सीखते हुए या सीखते समय आकलन।

भाषा मूल्यांकन के क्षेत्र

भाषा कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, शब्द-भंडार, अधिभाषिक चेतना, सृजनात्मक

अभिव्यक्ति, प्रशंसा।)

स्वास्थ्य शिक्षा, कला शिक्षा, कार्य अनुभव, नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल, अन्य विषय (गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि।)

मूल्यांकन का निर्वाह

रचनात्मक मूल्यांकन (चार)

सारांशात्मक मूल्यांकन (दो)

रचनात्मक मूल्यांकन का स्वरूपः

- अध्यापकों द्वारा पूरे शैक्षणिक वर्ष तक औपचारिक और अनौपचारिक रूप से चलता रहता है।
- यह निदानात्मक तथा उपचारात्मक होता है।
- रचनात्मक परीक्षाओं का आयोजन बच्चों व अध्यापकों पर बोझ नहीं बनता।
- बालक को इस बात का आभास नहीं होता कि उसका मूल्यांकन हो रहा है।
- रचनात्मक मूल्यांकन स्वाभाविक परिस्थितियों में होता है।
- यह वर्ष में चार बार किया जाएगा।

सारांशात्मक मूल्यांकन का स्वरूपः

- अध्यापक द्वारा सत्रांत में आयोजित की जाने वाली परीक्षा है।
- इनका आयोजन वर्ष में दो बार किया जाएगा।
- इसमें अधिगम की प्रतिपुष्टि होती है।
- अध्यापकों द्वारा अभिभावकों प्रगतिसूचक पत्र बताये जाते हैं।
- यह अध्यापकों, अभिभावकों शिक्षण संस्थाओं व सामाजिक वर्गों के लिए अधिक उपयोगी होता है।
- इसमें मौखिक एवं लिखित परीक्षाओं (पेपर-पेंसिल टेस्ट) का आयोजन किया जाता है।

रचनात्मक मूल्यांकन के साधन

- कक्षा कार्य, गृहकार्य, अध्यापक डायरी, छात्र डायरी, पोर्ट फोलियो, निरीक्षण, दत्त कार्य, परियोजना कार्य, चेकलिस्ट, रेटिंग स्केल, घटना विवरण (अनेक्टाडल रेकॉर्ड), प्रतिवेदन, स्वमूल्यांकन, प्रश्न मंच, मौखिक व लिखित परीक्षा।

सारांशात्मक मूल्यांकन के साधन

- मौखिक व लिखित परीक्षा।

अध्याय-2

अभ्यास-स्वभाव-विश्लेषण

भाषागत निर्धारित दक्षताओं का विकास करना ही भाषा-शिक्षण का प्रथम लक्ष्य है। कक्षा-कक्ष में उचित वातावरण हो, जिससे छात्र अनुभव व आवश्यकतानुसार अधिगम क्रियाकलापों में भाग ले सकें। इसके लिए कक्षा में विविध क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए। पाठ्य पुस्तक में कौशलों के अनुसार क्रियाकलाप दिये गये हैं। इन अभ्यासों को छात्र स्वयं करने के लिए प्रेरित करें, जिस से कौशलों का विकास हो सकें। मूल्यांकन के लिए भी कौशलानुसार प्रश्न ही हो, जिस से उनकी कौशल संबंधी योग्यता का अनुपात लगाया जा सकें।

पाठ का उद्‌देश्य छात्रों को विषय बोध करना ही नहीं है। इन विषयों के माध्यम से छात्रों में विविध भाषिक योग्यताओं का विकास किया जाय। इसके लिए पाठ में दिये गए अभ्यासों का करवाना ज़रूरी है। आठवीं व नवीं कक्षाओं के अभ्यासों को समझने के लिए हमें नीचे दिये गए प्रश्नों पर विचार करना होगा-

पाठ में कौन-कौन से अभ्यास हैं?
इनका उद्‌देश्य क्या है?
इनका स्वभाव कैसा है?
इनके लिए पाठ्यपुस्तक में दिये अभ्यास देखें।
पाठ का शीर्षक तुम्हें कैसा लगा? क्यों?
साधु की जगह तुम होते तो बालक को क्या सुझाव देते?
नीचे दी गई घटना पढ़ो। इस घटना के पात्रों के नाम बताओ।
नीचे दी गई सूचना के आधार पर अनुच्छेद बनाओ।
विमला का जीवन प्रेरणादायक है। क्यों?
तेनाली राम के बारे में तुम क्या जानते हो?
पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखो।
सही उत्तर चुनकर कोष्टक में लिखिए।
रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
कल्पना करो कि यदि दादाजी शहर आते तो वहाँ के बारे में क्या कहते?
त्यौहार संबंधी तेलुगु की कोई कविता कक्षा में सुनाओ।
तुलसी और रहीम के दोहे सुनाओ।
हिंदी समाचार चैनल के पाँच मुख्य समाचार लिखो।

उपर्युक्त उदाहरण किन दक्षताओं के लिए सहायक हैं? इन का स्वभाव कैसा है?

अभ्यासों पर ध्यान देने से यह पता चलता है कि वे नीचे दी गयीं दक्षताओं की प्राप्ति में सहायक हैं।

सुनो बोलो, पढ़ो, लिखो, शब्द भंडार, सृजनात्मक अभिव्यक्ति, प्रशंसा, परियोजना कार्य, भाषा की बात अर्थ ग्राह्यता-प्रतिक्रिया

इसी प्रकार उपर्युक्त अभ्यासों का विश्लेषण करने से उनका यह प्रभाव समझा जा सकता है।

-विचार युक्त है।
-एक से अधिक उत्तर वाले प्रश्न हैं।
-स्व अनुभवों को एक दूसरे से बाँटा जा सकता है।
-सृजनात्मकता व काल्पनिक शक्ति के विकास का अवसर मिलता है।

-छात्रों में आसक्ति बढ़ती है।
इनसे स्व अध्ययन का अवसर मिलता है।
दैनिक जीवन से संबंधित हैं।
अभ्यास छात्र स्वयं कर सकते हैं।

कौशल का क्या अर्थ है? इसका स्वभाव कैसा है? इसका कक्षा में कैसे निर्वाहण किया जाय?

सुनना-बोलना

भाषाई कौशलों में सुनना, बोलना महत्वपूर्ण कौशल हैं। छात्र पाठशाला में प्रवेश पाने से पूर्व सुनना, सोचना व बोलना जैसी योग्यताएँ रखते हैं। बच्चों में समझने और अभिव्यक्त करने के लिए सुनना बहुत उपयोगी होता है। सोचकर बोलने का अवसर प्रदान करने से छात्र सुनने के प्रति प्रेरित होते हैं।

पाठ्य पुस्तक में दिये गये कुछ अभ्यास देखिये और उनके स्वभाव पर ध्यान दीजिए।

स्वभाव

विचारात्मक हैं।
एक से अधिक उत्तर वाले प्रश्न हैं।
स्व अनुभवों को एक दूसरे से बाँटा जा सकता है।
सृजनात्मकता व काल्पनिक शक्ति के विकास का अवसर मिलता है।
चित्रों का निरीक्षण होता है।
पाठों पर अपने विचार व्यक्त किये जा सकते हैं।
गीत रागयुक्त गा सकते हैं।
छात्रों में आसक्ति बढ़ती है।
इनसे स्व अध्ययन का अवसर मिलता है।
छात्र अपनी सरल भाषा में बोल सकते हैं।

कक्षा में निर्वाहण

कक्षा में सामूहिक रूप से कार्य किये जाय।
अध्यापक छात्रों को वृत्ताकार में अपने आस-पास बिठालें।
प्रश्न एक-एक करके पूछे जाय।
हर प्रश्न का उत्तर देने में सभी छात्रों को बोलने का अवसर मिलें।
हर एक छात्र की बात का समर्थन करें।
किसी की बात अस्वीकार न करें।
छात्रों को अपने अनुभव व विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें।
प्रश्न ऐसे हो जिनके एक नहीं बल्कि अनेक उत्तर दिये जा सकें।
गीत या पद्य को रागयुक्त गाने के लिए प्रेरित करें।
सभी छात्र सक्रिय रूप से भाग लने के अनुकूल वातावरण बनाये रखें।

पढ़ना-लिखना

भाषा अधिगम का उद्देश्य छात्रों को भाषा प्रभावपूर्ण व स्वतंत्र रूप से पढ़नेवाले बनाना है। इस लिए बच्चों में पढ़ने की आदत डालने के लिए पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त कहानी, गीत, कविता, संभाषण व निबंध आदि सहायक पुस्तकें उपलब्ध करवायें।

पढ़कर समझने और लिखने से संबंधित अभ्यास पाठ्य पुस्तक में देखकर उनके स्वभाव पर ध्यान दें।

स्वभाव

छात्रों द्वारा पाठ्यांश बार-बार पढ़ाया जा सकता है।

पढ़ा गया पाठ कहाँ तक समझ पाये, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

पात्रों के बीच संभाषण का पनःस्मरण किया जा सकता है।

पाठ के आधार पर सही, ग़लत का निर्धारण किया जा सकता है।

कक्षा में निर्वाहणः

पढ़ने के लिए दिये गए कार्य उनके स्वभाव के अनुसार सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से करवाये जा सकते हैं।

प्रत्येक अभ्यास छात्रों से पढ़वायें और किया जाने वाला कार्य बच्चों से कहलवायें।

जिन कार्यों को करवाने में अध्यापक की आवश्यकता समझी जाती है, उन कार्यों को छात्रों में चर्चा कर के सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से लिखवायें।

लिखना

लिखने का उद्देश्य केवल लिखना ही नहीं अपने विचारों को जोड़ कर लिखना है।

पाठ्य पुस्तक में दिये गये कुछ अभ्यास देखिये और उनके स्वभाव पर ध्यान दीजिए।

स्वभाव

गीत,पद्य,सारांश अपने आप लिख सकते हैं।

क्यों? कैसे? जैसे प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं।

कारण सोच कर लिख सकते हैं।

विश्लेषणयुक्त उत्तर लिखने के लिए अनुकूल हैं।

सोच कर लिखने योग्य हैं।

कक्षा में निर्वाहण

प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें।

श्यामपट पर प्रश्न लिख कर छात्रों से पढ़वायें।

छात्रों से संबंधित प्रश्नों की सहायता से उत्तर प्राप्त करें।

प्रश्नों के उत्तर छात्रों को समूहों में चर्चा करके लिखने के लिए प्रेरित करें।

सामूहिक कार्यों का प्रदर्शन करें।

शब्द भंडार

कक्षा में शब्द भंडार संदर्भानुसार सिखायें। शब्दों के प्रयोग के लिए प्रेरित करें।

पाठ्य पुस्तक में दिये गये कुछ अभ्यास देखिए और उनके स्वभाव पर ध्यान दीजिए।

स्वभावः

नवीन शब्दों के अर्थ जान सकते हैं।

संदर्भानुसार प्रयोग होने वाले शब्द सीख कर प्रयोग कर सकते हैं।

सीखे गये शब्दों से स्वयं वाक्य निर्माण कर सकते हैं।

कक्षा में निर्वाहण

अभ्यासों को समूहों में चर्चा करके लिखने के लिए कहा जाय।

लिखे गये अंशों को समूहों में प्रदर्शित करें और श्यामपट पर लिखें।

सृजनात्मकता

भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है। वह सृजनात्मकता के लिए सहयोगी है। सृजनात्मकता की अभिव्यक्ति मौखिक, लिखित,चित्र, कार्टून और प्रदर्शन के रूप में हो सकती है।

पाठ्य पुस्तक में दिये गये कुछ अभ्यास देखिये और उनके स्वभाव पर ध्यान दीजिए।

स्वभाव

सृजनात्मक विचार किया जाता है।
अपने विचार और अनुभव जोड़ कर बता सकते हैं।
नाटकीकरण के अनुकूल हैं।
सोच कर बोला जा सकता है।

कक्षा में निर्वाहणः

अध्यापक छात्रों को सूचनाएँ दें।
छात्रों को समूहों में बिठा कर लिखने के लिए प्रेरणा दें।
सामूहिक कार्यों का प्रदर्शन करवायें।
चर्चा करें।
व्यक्तिगत रूप से लिखवायें।
लिखे गये विषयों को पोर्टफ़ोलियों में सुरक्षित रखें।

प्रशंसा

छात्रों में सानुकूल दृष्टिकोण बढ़ाने के लिए यह कौशल बहुत उपयोगी है। बच्चों में पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और विशेष आवश्यकतावालों की सहायता करने का स्वभाव सहज होता है।

पाठ्य पुस्तक में दिये गये कुछ अभ्यास देखिये और उनके स्वभाव पर ध्यान दीजिए।

स्वभाव

दया, सहानुभूति जैसे गुण छात्रों में बढ़ते हैं।
सबकी प्रशंसा कर पाते हैं।
समानता की भावना बढ़ती है।

कक्षा में निर्वाहणः

प्रश्न श्यामपट पर लिखें।
छात्रों में चर्चा करवायें।

भाषा के प्रति जानकारी

छात्र अर्जित भाषा का संदर्भोचित प्रयोग कर सकें। पाठशाला में भाषा सीखने के उद्देश्य हैं कि छात्र नये विचारों को एकत्र करें, भाषा भेद, काल, विराम चिह्न का उपयोग कर सकें।

पाठ्य पुस्तक में दिये गये कुछ अभ्यास देखिये और उनके स्वभाव पर ध्यान दीजिए।

स्वभाव

भषा प्रयोग के गुण छात्रों में बढ़ते हैं।
सब के विषय में चर्चा कर पाते हैं।
समानता की भावना बढ़ती है।

कक्षा में निर्वाहणः

प्रश्न श्यामपट पर लिखें और छात्रों में चर्चा करवायें।

अध्याय-3

शिक्षण योजना नीति - सोपान

पहले शिक्षण अध्यापक केंद्रीत था। अब शिक्षण बाल केंद्रीत है। इसके कारण छात्रों में सहभागिता, स्व-अभ्यास के अवसर बढ़ गये हैं। इसके अनुरूप शिक्षण योजना नीति होने पर ही वह सफल होती है।

‘समय’ नीति के अमलीकरण में मुख्य भूमिका निभाता है।

पहले हम इसके बारे में चर्चा करते हैं।

पाठशाला कार्यदिवसः

शैक्षणिक वर्ष में कुल कार्यदिवसों की संख्या : 220
द्‍वितीय भाषा हिंदी अध्यापक के लिए प्राप्त होने वाले कालांशों की संख्या : 90

आठवीं कक्षा पाठ्‌यपुस्तक में कुल 12+4 = 16 पाठ हैं। नवीं कक्षा पाठ्‌यपुस्तक में भी कुल 12+4 = 16 पाठ हैं। पाठ शिक्षण तथा अभ्यास कार्यों की पूर्ति हेतु 79 कालांश तथा परीक्षा आदि के लिए 11 कालांश दिये गये हैं। इस तरह द्‍वितीय भाषा हिंदी अध्यापक के लिए निर्धारित लगभग 90 कालांशों का विभाजन हुआ है। तत्संबंधी कक्षाओं के पाठों के लिए कालांशों का विभाजन आगे दी गयी तालिका से समझ सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर अध्यापक स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप फेर-बदल कर सकता है।

तत्संबंधी कक्षावार अपेक्षित दक्षताओं को ध्यान में रखकर पाठों का कालांशवार विभाजन कर अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

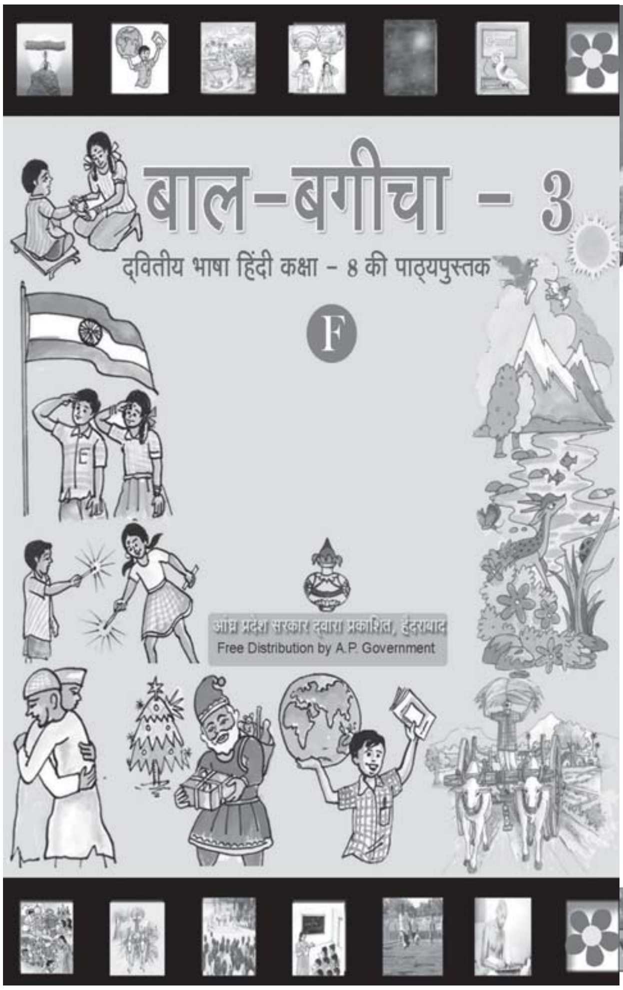
बाल-बगीचा - 3
द्‍वितीय भाषा हिंदी कक्षा - 8 की पाठ्‌यपुस्तक
F
आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद
Free Distribution by A.P. Government

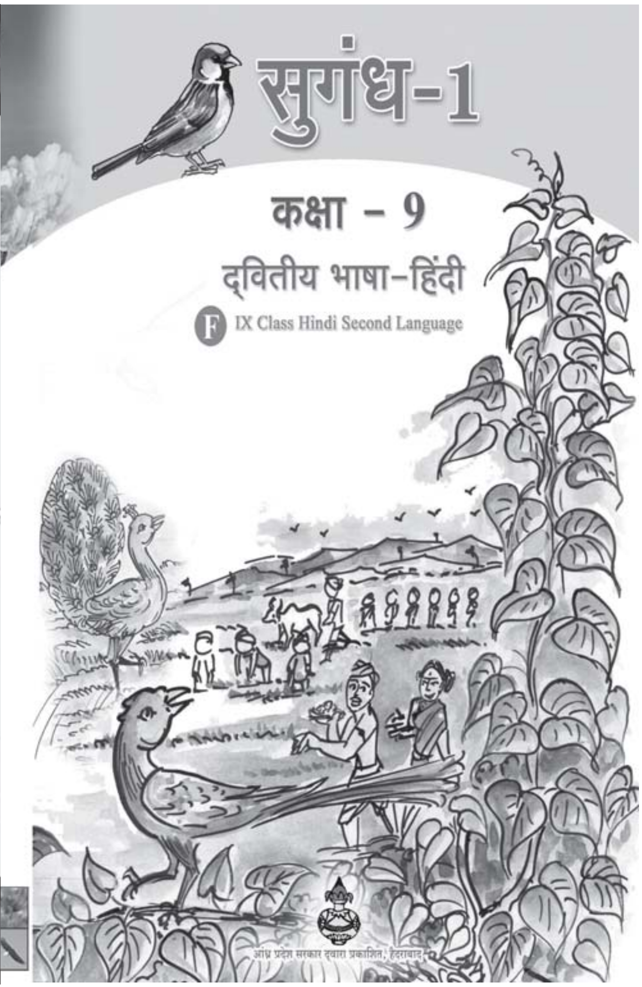
सुगंध-1
कक्षा - 9
द्‍वितीय भाषा-हिंदी
F IX Class Hindi Second Language
आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

आठवीं कक्षा - द्‌वितीय भाषा हिंदी

वार्षिक योजना - पाठ - शैक्षिक मापदंड - कालांशों की संख्या

इकाई संख्या	पाठ संख्या	पाठ का शीर्षक	उन्मुखीकरण, चित्र के बारे में बातचीत, पाठ के चित्र के बारे में बातचीत	पाठ शिक्षण - चर्चा - अवधारणा	सुनो-बोलो - पढ़ो	लिखो - सृजनात्मक अभिव्यक्ति - प्रशंसा	परियोजना - स्वमूल्यांकन	कुल कालांश
I	1.	हम होंगे कामयाब	1	2	1	1	1	6
	*	हँसी-खुशी		1				1
	2.	राजा बदल गया	1	2	1	1	1	6
	3.	प्यारा गाँव	1	2	1	1	1	6
II	4.	कौन?	1	2	1	1	1	6
	*	ऐसा प्यारा देश हमारा		1				1
	5.	धरती की आँखें	1	2	1	1	1	6
	6.	दिल्ली से पत्र	1	2	1	1	1	6
III	7.	त्यौहारों का देश	1	2	1	1	1	6
	8.	चावल के दाने	1	2	1	1	1	6
	9.	मैं सिनेमा हूँ	1	2	1	1	1	6
	*	वाह! क्या बात है		1				1
IV	10.	अनमोल रत्न	1	3	1	1	1	7
	11.	हार के आगे जीत है	1	3	1	1	1	7
	12.	बढ़ते कदम	1	3	1	1	1	7
	*	आओ पत्रिका निकालें		1				1
		कुल योग	12	31	12	12	12	79

नवीं कक्षा - द्‍वितीय भाषा हिंदी
वार्षिक योजना - पाठ - शैक्षिक मापदंड - कालांशों की संख्या

इकाई संख्या	पाठ संख्या	पाठ का शीर्षक	उन्मुखीकरण, चित्र के बारे में बातचीत, पाठ के चित्र के बारे में बातचीत	पाठ शिक्षण - चर्चा - अवधारणा	अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	भावाभिव्यक्ति-सृजनात्मकता	परियोजना	कुल कालांश
I	1.	जिस देश में गंगा बहती है	1	2	1	1	1	6
	2.	गाने वाली चिड़िया		1				1
	3.	बदलें अपनी सोच	1	2	1	1	1	6
	*उपवाचक	तारे ज़मीं पर	1	2	1	1	1	6
II	4.	प्रकृति की सीख	1	2	1	1	1	6
	5.	फुटबॉल		1				1
	6.	बेटी के नाम पत्र	1	2	1	1	1	6
	*उपवाचक	सम्मक्का-सारक्का	1	2	1	1	1	6
III	7.	मेरा जीवन	1	2	1	1	1	6
	8.	यक्ष प्रश्न	1	2	1	1	1	6
	9.	रमज़ान	1	2	1	1	1	6
	*उपवाचक	बुद्‍धिमान बालक		1				1
IV	10.	अमर वाणी	1	3	1	1	1	7
	11.	सुनीता विलियम्स	1	3	1	1	1	7
	12.	जागो ग्राहक जागो	1	3	1	1	1	7
	*उपवाचक	अपना स्थान स्वयं बनायें		1				1
		कुल योग	12	31	12	12	12	79

शिक्षणः

पहले जिन शिक्षण पद्धतियों का उपयोग किया जाता था, उन्हीं शिक्षण पद्धतियों का उपयोग वर्तमान में हो रहा है। आवश्यकता के अनुसार शिक्षण पद्धतियों में थोड़े-बहुत परिवर्तन करने की संभावना होती है। कारण, नीति सदैव गतिशील होती है। भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य सभी बालकों को भाषा कौशलों में निपुण बनाना होता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक को छात्रों में अपेक्षित दक्षताओं की प्राप्ति हेतु अभ्यासों के आयोजन पर ध्यान देना चाहिए।

शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 में शिक्षण अभ्यासों के बारे में इस तरह बताया गया है-

- बाल अनुकूल और बाल केंद्रीत रीति में क्रियाकलापों, प्रकटीकरण और खोज के द्वारा शिक्षण
- बालक को भय, मानसिक अभिघात और चिंतामुक्त बनाना और बालक को स्वतंत्र रूप से मत व्यक्त करने में सहायता करना।
- बालक के समझने की शक्ति और उसे उपयोग कर सकने की योग्यता का व्यापक और सतत मूल्यांकन

इन सभी अंशों को ध्यान में रखकर शिक्षण योजना की तैयारी की गयी है।

पहले प्रत्येक कालांशवार पाठ योजना (कालांश योजना) तैयार की जाती थी। अब इसके बदले एक पूरे पाठ को लेकर उन्मुखीकरण से प्रारंभ कर पाठ की समाप्ति, स्वमूल्यांकन तक, के लिए सोपानों का निर्धारण किया गया है। इन सोपानों के क्रमों पर एक बार ध्यान देते हैं।

शिक्षण नीति

सोपान एक - **उन्मुखीकरण**
सोचो-बोलो के चित्र देखकर बातचीत करना
सोपान दो - **उद्देश्य**
सूचनाओं के अनुसार उद्देश्य, भूमिका बताना
सोपान तीन - **अर्थ पता लगाना - स्पष्टीकरण**
सोपान चार - **पाठ्य शिक्षण - चर्चा - स्पष्टीकरण**
सोपान पाँच - **सुनो-बोलो-पढ़ो**
सोपान छह - **लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा**
सोपान सात - **भाषा की बात**
शब्द-भंडार, व्याकरण
सोपान आठ - **परियोजना कार्य सौंपना**
'क्या मैं ये कर सकता हूँ' (स्वमूल्यांकन) करवाना (**आठवीं कक्षा**)

सोपान एक - **उन्मुखीकरण**

- दिये गये चित्र पर बातचीत करवाना / अंश पढ़वाना।
- विचारोत्तेजक प्रश्न पूछना।
- पाठ की ओर तैयार करना।

सोपान दो - **उद्देश्य**

- निर्देशों के अनुसार उद्देश्य बताना।
- व्यक्तिगत, समूह में बातचीत करवाना।
- निर्देशानुसार पाठ पढ़वाना।

सोपान तीन - **अर्थ पता लगाना - स्पष्टीकरण**

- समझ में न आने वाले शब्दों के नीचे रेखा खींचने के लिए कहना।
- उन्हें मित्रों में चर्चा करना।
- शब्द सूची की सहायता से समझना।
- अधिक बालकों के द्वारा रेखांकित किये गये शब्दों को समझाना।

सोपान चार - **पाठ्य शिक्षण - चर्चा - स्पष्टीकरण**

- पाठ्य शिक्षण के अंतर्गत पाठ की विधा पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
- आठवीं, नवीं कक्षाओं में कविता, पद्य, गीत, निबंध, कहानी, भाषण लेख, पत्र, साक्षात्कार, वार्तालाप, आत्मकथा, जीवनी, डायरी, प्रायोगिक निबंध, चुटकुले, संवाद आदि विधाएँ हैं।

पद्य - पद्य रागयुक्त गाना चाहिए।

- स्पष्ट उच्चारण होना चाहिए।
- भावोत्प्रेरक, रसोत्पेदक होना चाहिए।

गीत - श्रुति, लय, तालबद्ध ढंग से गाना चाहिए।

कविता - लयबद्ध ढंग से सुनाना चाहिए।

उपर्युक्त सभी विधाओं में रसानुभूति महत्वपूर्ण है। विषय ज्ञान के साथ-साथ रसानुभूति को अधिक महत्व देते हुए पढ़ाना चाहिए।

कहानी - अध्यापक को चाहिए कि वह सबसे पहले कहानी को अपने शब्दों में बताये।

- इस तरह बताते समय विचारोत्तेजक प्रश्न पूछना चाहिए।
- जिज्ञासा पैदा करने वाले स्थान पर कहानी को रोककर, छात्रों की कल्पना व सोच को महत्व देना चाहिए।
- भिन्न-भिन्न ढंग से कहानी समापन करने वाली कल्पनाशक्ति को बाहर लाना चाहिए।
- अपने द्‌वारा सुनी / पढ़ी हुई कहानी के साथ समन्वय करना चाहिए।

निबंध - निबंध के लिए प्रस्तावना, विषय-विस्तार, उपसंहार का विशेष महत्व होता है। कैसे आरंभ किया गया? किस तरह विषय विस्तार किया गया? किस तरह विश्लेषण किया गया? किस तरह समाप्त किया गया? किस तरह के उपशीर्षक हैं? किस तरह समाप्त किया गया? आदि अंशों पर ध्यान आकर्षित करवाना चाहिए।

- प्रत्येक अनुच्छेद में मुख्य शब्दों की पहचान करने के लिए कहना चाहिए। उन शब्दों के आधार पर पुनः अनुच्छेद बताने की क्षमता प्राप्त करवानी चाहिए।
- नये निबंध लिखवाने चाहिए।

आत्मकथा- प्रसिद्‌ध व्यक्तियों की आत्मकथाएँ, महत्वपूर्ण घटनाएँ छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास करती हैं। आत्मविश्वास दिलाती हैं।

- आत्मकथाओं के कथन उत्तम या प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम में होते हैं।

सोपान पाँच - **अभ्यास कार्य**

- सुनो-बोलो, पढ़ो (विषय की समझ के प्रति प्रतिक्रिया करना।)
- छात्रों को व्यक्तिगत / पूर्ण कक्षावार प्रश्न पूछना।
- सुने हुए अंशों के प्रति किस तरह प्रतिक्रिया करते हैं, के प्रति ध्यान देना।
- पठित अंश के विश्लेषण पर ध्यान देना।

सोपान छह - **लिखो - सृजनात्मक अभिव्यक्ति - प्रशंसा**

- लिखो अभ्यास के एक, दो प्रश्न कक्षा में करवाकर शेष प्रश्न गृहकार्य के रूप में देना चाहिए। अगले दिन देखना चाहिए।

- लिखो अभ्यास के प्रश्न देखर चर्चा करवानी चाहिए।
- समूह में लिखवाते हुए निरीक्षण करना चाहिए।
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति, प्रशंसा अभ्यास कक्षा में करवाना चाहिए। आवश्यकतानुसार अध्यापक सहायता करते हुए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

सोपान सात - **भाषा की बात**

- शब्द-भंडार में तत्संबंधी अभ्यासों पर ध्यान देने के लिए कहना चाहिए।
- उदाहरण में दिये गये पर्याय शब्द, भिन्नार्थ, शुद्ध-अशुद्ध आदि अंशों को पढ़कर समझने और करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- व्याकरण के अंतर्गत शब्द को अलग करना, जोड़ना, होने वाले परिवर्तन पर ध्यान देना - सूत्रीकरण करवाना चाहिए।
- कुछ अभ्यास कक्षा में करवाना चाहिए। शेष अभ्यास गृहकार्य के रूप में दे सकते हैं।

सोपान आठ - **परियोजना कार्य**

- पाठ के आरंभ से लेकर समाप्ति तक तत्संबंधी अभ्यास में अध्यापक परियोजना कार्य दे सकता है।
- किये गये परियोजना कार्य को प्रदर्शित करना चाहिए।
- परियोजना कार्य को मूल्यांकन का अंतर्भाग मानना चाहिए।
- परियोजना कार्य के प्रदर्शन से छात्रों में प्रशंसा गुण का विकास होता है।

- आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में हर पाठ की समाप्ति के बाद छात्र ने उस पाठ को कहाँ तक सीखा है, कि जाँच करने के लिए 'क्या मैं ये कर सकता हूँ?' की तालिका दी गयी है।
- बालक किन अंशों में पिछड़े हुए हैं, पर ध्यान देकर पुनर्भ्यास करवाने में यह तालिका सहायता करती है।

अध्याय-4 पाठानुसार अपेक्षित दक्षताएँ

दूवितीय भाषा हिंदी - आठवीं कक्षा

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
1.	हम होंगे कामयाब	गीत	सामाजिकता	**1. सुनो-बोलो** • शीर्षक के बारे में बातचीत कर सकेंगे। • विश्वास के महत्व पर चर्चा कर सकेंगे। • कामयाबी के कारणों पर विचार-विमर्श कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये भाव से संबंधित पंक्तियाँ पहचान सकेंगे। • दिये गये शब्द का अर्थग्रहण कर वाक्य बना सकेंगे। • चित्र के बारे में लिख सकेंगे। • पाठ पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • विश्वास, डर, एकता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • शब्दों के अर्थ मातृभाषा में लिख सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • कविता लय के साथ गा सकेंगे। • कविता का अभिनय कर सकेंगे। **6. प्रशंसा** • कामयाब होने के उपाय बता सकेंगे। **7. भाषा की बात** • तू, तुम, आप, यह, ये, वह, वे का प्रयोग जान सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • अपनी मातृभाषा में कामयाबी पर आधारित अन्य कविताएँ एकत्रित कर सकेंगे।
2.	राजा बदल गया	कहानी	नैतिकता	**1. सुनो-बोलो** • पाठ के लिए अन्य शीर्षक पर विचार-विमर्श कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित विषय पर बातचीत कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठानुसार दिये गये वाक्य से संबंधित अनुच्छेद बता सकेंगे। • वाक्य सही क्रमानुसार लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
2.	राजा बदल गया	कहानी	नैतिक	**3. लिखो** • प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • कहानी अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • दिये गये शब्द के अंतिम अक्षर से नया शब्द बना सकेंगे। • संकेत के आधार पर वाक्य लिख सकेंगे। • दिये गये शब्दों के विलोमार्थी शब्द लिखकर, उनका वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • कहानी को संवाद रूप में लिख सकेंगे। **6. प्रशंसा** • 'ईमानदारी' के गुण की प्रशंसा करते हुए संबंधित उदाहरण दे सकेंगे। **7. भाषा की बात** • विरामचिह्नों का प्रयोग जान सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • दिये गये विषय से संबंधित कहानी, कविता आदि लिखवाकर दीवार-पत्रिका पर चिपका सकेंगे।
3.	प्यारा गाँव	संवाद	संस्कृति / जीवन कौशल	**1. सुनो-बोलो** • लुहार, कुम्हार, बढ़ई आदि से संबंधित व्यवसायियों पर चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • दिये गये वाक्यों का अर्थ बतलाने वाले शब्द पाठ में से ढूँढ़ सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • अपने पसंदीदा व्यवसाय के बारे में लिख सकेंगे। • घरेलू-उद्योगों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • लुहार, कुम्हार, बंसोर आदि के द्वारा बनाये जाने वाले सामानों के नाम लिख सकेंगे। • दिये गये शब्दों के अर्थ मातृभाषा में लिख सकेंगे। • वर्ग-पहेली के आधार पर व्यवसाय के नाम लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
3.	प्यारा गाँव	संवाद	संस्कृति / जीवन कौशल	**5. सृजनात्मक अभिव्यक्तिः** • कल्पना के आधार पर दिये गये विषय के बारे में लिख सकेंगे। **6. प्रशंसाः** • ग्राम्य जीवन से संबंधित कहानी सुना सकेंगे। **7. भाषा की बातः** • संज्ञा के भेद जान सकेंगे। • संज्ञा शब्द रेखांकित कर सकेंगे। **8. परियोजना कार्यः** • दिये गये विषय से संबंधित चित्र इकट्ठा कर, कक्षा में प्रदर्शित कर सकेंगे।
4.	कौन?	कविता	प्रकृति संबंधी	**1. सुनो-बोलोः** • चित्र के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • चाँद, सूरज, नदियाँ, पेड़, पर्वत, बादल आदि के महत्व पर विचार-विमर्श कर सकेंगे। **2. पढ़ोः** • पाठ पढ़कर मनपसंद पंक्तियाँ लिख सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्न रेखांकित कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • कविता पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखोः** • सूरज, पेड़, पर्वत आदि से संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • कविता का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडारः** • दिये गये शब्दों में से भिन्न शब्द पहचान सकेंगे। • दी गयी शब्द तालिका में सही स्थान पर लिख सकेंगे। • वर्ग-पहेली में से शब्द ढूँढ़कर लिख सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्तिः** • दिये गये नये शब्द कविता में जोड़कर कविता आगे बढ़ा सकेंगे। **6. प्रशंसाः** • दिये गये विषय के महत्व के बारे में समझा सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
4.	कौन?	कविता	प्रकृति संबंधी	**7. भाषा की बात** • 'विशेषण' व्याकरणांश की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। संज्ञा शब्द के सामने विशेषण शब्द जोड़ सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • दिये गये विषय से संबंधित अन्य कविताएँ एकत्रित कर सकेंगे।
5.	धरती की आँखें	कहानी	वैज्ञानिक	**1. सुनो-बोलो** • चित्र के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • शीर्षक पर चर्चा कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित विषय पर चर्चा कर सकेंगे। • पाठ का भाव अपने शब्दों में बता सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर 'क्यों' संबंधित प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे। • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य में 'इसलिए' शब्द जोड़कर वाक्य फिर से लिख सकेंगे। • चित्र के आधार पर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • दिये गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • मौसम, खनिज, समाचार आदि हमारी मदद कैसे करते हैं, बता सकते हैं। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • उपग्रह शिक्षक के रूप में क्या काम कर रहे हैं, के बारे में अपने शब्दों में बता सकते हैं। **6. प्रशंसा** • चंद्रमा की सुंदरता से जुड़ी कविता सुना सकेंगे। दिये गये विषय से संबंधित कार्य करेंगे। **7. भाषा की बात** • सर्वनाम व उसके भेदों के बारे में जान सकेंगे। • दिये गये अनुच्छेद से सर्वनाम शब्द चुनकर उनका वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • भारतीय उपग्रह समाचार संबंधी जानकारी एकत्रित कर सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
6.	दिल्ली से पत्र	पत्र	जीवन कौशल	**1. सुनो-बोलो** • चित्र से संबंधित चर्चा कर सकेंगे। • यात्रा से संबंधित चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य के आगे वाले वाक्य लिख सकेंगे। • चित्र देखकर उसके बारे में कुछ वाक्य लिख सकेंगे। • पाठ पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • कविता पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • दिये गये पत्र के आधार पर उत्तर देते हुए अन्य पत्र लिख सकेंगे। • दिल्ली के दर्शनीय स्थानों के बारे में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • दिये गये चित्रों के बारे में दो-दो वाक्य लिख सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • किसी स्थान का वर्णन कर सकेंगे। **6. प्रशंसा** • यात्रा के लिए आवश्यक तैयारी के बारे में लिख सकेंगे। **7. भाषा की बात** • विशेषण व उसके भेदों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। • विशेषण शब्द पहचान सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • विभिन्न दर्शनीय स्थानों के चित्र एकत्रित कर उनके बारे में जानकारी इकट्ठा कर सकेंगे।
7.	त्यौहारों का देश	कविता	संस्कृति	**1. सुनो-बोलो** • चित्र के बारे में विचार-विमर्श कर सकेंगे। • शीर्षक के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • त्यौहारों के बारे में चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्यों के भाव वाली पंक्तियाँ पहचान सकेंगे। • पाठ पढ़कर दी गयी पंक्तियाँ पूरी कर सकेंगे। • अनुच्छेद पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। • पाठ से संबंधित पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
7.	त्यौहारों का देश	कविता	संस्कृति	**3. लिखो** • दशहरा, पंद्रह अगस्त, दीपावली आदि के बारे में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • संकेतों के आधार पर वाक्य लिख सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • दिये गये विषय पर चित्र बनाकर उसके बारे में लिख सकेंगे। जैसे मनपसंद त्यौहार। **6. प्रशंसा** • त्यौहार संबंधी अन्य भाषा की कविता सुना सकेंगे। **7. भाषा की बात** • काल व उसके भेद के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। • काल दर्शाने वाले शब्द ढूँढ़कर लिख सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • मित्रों से जानकारी इकट्ठा कर लिख सकते हैं। जैसे मित्रों के द्वारा बनाये जाने वाले त्यौहार।
8.	चावल के दाने	कहानी	समय-स्फूर्ति	**1. सुनो-बोलो** • दिये गये चित्र पर चर्चा कर सकेंगे। • शीर्षक के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित विषय पर चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्यों की गलती पहचान सकेंगे। • पाठ के आधार पर वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • गद्यांश का अर्थ ग्रहण कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • श्रीकृष्णदेवराय व तेनालीराम से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • संख्या शब्दों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। • संख्याओं का उच्चारण हिंदी में कर सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • वार्तालाप आगे बढ़ा सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
8.	चावल के दाने	कहानी	समय-स्फूर्ति	**6. प्रशंसा** • दिये गये विषय के आधार पर अपने विचार बता सकेंगे। **7. भाषा की बात** • संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द अनुच्छेद में से ढूँढ़कर, उनका वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • दिये गये विषय से संबंधित अन्य कहानी एकत्रित कर सकेंगे। उन्हें पढ़कर भाव बता सकेंगे।
9.	मैं सिनेमा हूँ	आत्मकथा	ज्ञानवर्द्धक	**1. सुनो-बोलो** • सिनेमा, सिनेमाघर के बारे में चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर पाठ में आये अंग्रेजी शब्दों को ढूँढ़ सकेंगे। • उनका अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़कर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। • दिये गये पोस्टर को देखकर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। **3. लिखो** • सिनेमा के आरंभ, निर्देशक, पाइरेटेड सिनेमा के संबंध में प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • सिनेमा से जुड़े शब्दों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। • शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • दी गयी जानकारी के आधार पर पोस्टर तैयार कर सकेंगे। **6. प्रशंसा** • दिये गये विषय पर अपने विचार प्रकट कर सकेंगे। **7. भाषा की बात** • क्रिया व क्रिया के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।। • पाठ से क्रिया शब्द ढूँढ़कर उनका वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • हिंदी समाचार चैनल के आधार पर पाँच मुख्य समाचार एकत्रित कर सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
10.	अनमोल रत्न	कविता	नैतिक	**1. सुनो-बोलो** • शीर्षक के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित विषय पर चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य के भाव बताने वाली पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिख सकेंगे। • पाठ पढ़कर दी गयी पंक्तियों के आगे आने वाली पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिखो। • पद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • दशहरा, पंद्रह अगस्त, दीपावली आदि के बारे में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • दिये गये शब्दों से वाक्य बना सकेंगे। • मुहावरों के अर्थ जान सकेंगे। • दिये गये शब्द को विभिन्न भाषाओं में क्या कहते हैं, यह जान सकेंगे। • दोहे में आये शब्द का शुद्ध रूप जान सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • दिये गये विषय पर अनुच्छेद लिख सकेंगे। **6. प्रशंसा** • दिये गये विषय के आधार पर कक्षा में दोहे गाकर सुना सकेंगे। **7. भाषा की बात** • तुक बंदी वाले शब्द जान सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • दिये गये विषय के आधार पर जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रयुक्त कर सकेंगे।
11.	हार के आगे जीत है	जीवनी	प्रेरणा-समावेशी शिक्षा	**1. सुनो-बोलो** • शीर्षक के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित विषय पर चर्चा कर सकेंगे। • विज्ञापन पर चर्चा कर सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य किसने कहे, यह बता सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
11.	हार के आगे जीत है	जीवनी	प्रेरणा-समावेशी शिक्षा	• दिये गये चित्र से जुड़े वाक्य पाठ में रेखांकित कर सकेंगे। • मुहावरे का अर्थ जानकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • दिये गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • दिये गये शब्दों के अर्थ जान सकेंगे। • चित्र के बारे में लिख सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • दिये गये विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त कर सकेंगे। **6. प्रशंसा** • 'हार-जीत' में 'हार' के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकेंगे। **7. भाषा की बात** • वाक्य में रेखांकित शब्द का लिंग परिवर्तन कर वाक्य फिर से लिख सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • मन पसंद खिलाड़ी के बारे में जानकारी एकत्रित कर सकेंगे।
12.	बढ़ते कदम	डायरी	लिंग भेद-बालिका शिक्षा	**1. सुनो-बोलो** • पाठ के विषय पर चर्चा कर सकेंगे। • पाठशाला में किये जाने वाले कार्य पर विचार-विमर्श कर सकेंगे। • दिये गये विषय पर बातचीत करते हुए अंतर बता सकेंगे। • पाठ अपने शब्द में बता सकेंगे। **2. पढ़ो** • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य पाठ में रेखांकित कर सकेंगे। • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य में गलत शब्द पहचान कर सही शब्द लिख सकेंगे। • पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **3. लिखो** • दिये गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **4. शब्द भंडार** • दिये गये शब्दों के वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। • दिये गये वाक्य में रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्द लिख

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
12.	बढ़ते कदम	डायरी	लिंग भेद-बालिका शिक्षा	सकेंगे। • दिये गये शब्द को विभिन्न भाषाओं में क्या कहते हैं, यह जान सकेंगे। • अपने दोस्तों के नाम लिख सकेंगे। **5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति** • दिये गये विषय पर मित्र को पत्र लिख सकेंगे। **6. प्रशंसा** • अपने एक दिन के क्रियाकलाप को डायरी के रूप में लिख सकेंगे। **7. भाषा की बात** • क्रिया-विशेषण व उसके भेदों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। • क्रिया-विशेषण शब्द का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। **8. परियोजना कार्य** • दिये गये विषय के बारे में जानकारी एकत्रित कर कक्षा में प्रस्तुत कर सकेंगे।

द्वितीय भाषा हिंदी - नवीं कक्षा

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
1.	जिस देश में गंगा बहती है	गीत	मानवता, एकता	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • भारतीय संस्कृति से संबंधित विषय पर चर्चा कर सकेंगे। • पंक्तियाँ क्रमानुसार लिख सकेंगे। • भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • दी गयी पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • पाठ का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • दिये गये विषय पर कविता लिख सकेंगे। • दिये गये विषय पर अपने विचार लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • इसमें, उसमें, किसमें, जिसमें के निर्माण व प्रयोग रूप जान सकेंगे। • मुहावरों के अर्थ बता सकेंगे। • वाक्य रचना समझ सकेंगे, पहचान सकेंगे। • सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • राष्ट्रीय चिह्नों की जानकारी एकत्रित कर, कक्षा में प्रस्तुत कर सकेंगे।
2.	गाने वाली चिड़िया	कहानी	परिश्रम, कृषक का महत्व	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • पक्षियों के बारे में जान सकेंगे। • संगीत के विषय में चर्चा कर सकेंगे। • पाठ पढ़कर दिये गये वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • पाठ पढ़कर दियेगये वाक्य किसने किससे कहे, बता सकेंगे। • गद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • दी गयी पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • पाठ का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
2.	गाने वाली चिड़िया	कहानी	परिश्रम, कृषक का महत्व	**3. भाषा की बात** • इसमें, उसमें, किसमें, जिसमें के निर्माण व प्रयोग रूप जान सकेंगे। • मुहावरों के अर्थ बता सकेंगे। • वाक्य रचना समझ सकेंगे, पहचान सकेंगे। • सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • राष्ट्रीय चिह्नों की जानकारी एकत्रित कर, कक्षा में प्रस्तुत कर सकेंगे।
3.	बदलें अपनी सोच	भाषण लेख	पर्यावरण, विश्वकल्याण की भावना	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • संयुक्त राष्ट्र के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • युगरत्ला के सवालों के विषय पर चर्चा कर सकेंगे। • वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • अनुच्छेद पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • पर्यावरण विनाश के बारे में अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • जल संरक्षण के बारे में लिख सकेंगे। • युगरत्ला के प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • भाषण लेख का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • युगरत्ला के स्थान पर स्वयं को रखकर दिये जाने वाले भाषण के बारे में लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • शब्दार्थ बताकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। • पर्यायवाची शब्दों से जोड़ी बना सकेंगे। • सही अर्थ रेखांकित कर सकेंगे। • समुच्चय बोधक, संबंध बोधक, विस्मयादि बोधक, शब्द जोड़ सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • पर्यावरण पर दिया गया भाषण-लेख एकत्रित कर सकेंगे।
4.	प्रकृति की सीख	कविता	प्रकृति	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • नदियों की उपयोगिता के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • ऋतुओं के नियंत्रण में पर्वत की सहायता के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • पंक्तियों की जोड़ी बनाकर भाव बता सकेंगे। • पद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
4.	प्रकृति की सीख	कविता	प्रकृति	**2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • पर्वत, तरंग आदि विषय पर प्रश्न-उत्तर लिख सकेंगे। • कविता का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • कविता के भावानुसार सूक्ति लिख सकेंगे। • दी गयी पंक्तियों के आधार पर कविता लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • पुनरुक्त शब्द रेखांकित उनका प्रयोग कर सकेंगे। • विपरीतार्थक शब्द रेखांकित कर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। • शब्दों के अंतर समझकर उसी तरह के शब्द लिख सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • सोहनलाल द्विवेदी के बारे में जानकारी एकत्रित कर सकेंगे। उनकी कविता एकत्रित कर सकेंगे।
5.	फुटबॉल	संस्मरण	नेतृत्व व ईमानदारी गुण का विकास	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • खेलों के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • किसी एक खेल के बारे में बता सकेंगे। • वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • अनुच्छेद पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • फुलबॉल खेल में गोल रक्षक के महत्व के बारे में लिख सकेंगे। • नेतृत्व की भावना पर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • फुटबॉल खेल से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • किसी एक खेल के बारे में लिख सकेंगे। • ‘हार-जीत’ पर अपने विचार लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • विभिन्न प्रकार के वाक्यों के बारे में जान सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • वर्ग-पहेली में से खेलों के नाम पहचान सकेंगे। किसी एक खेल के बारे में जानकारी एकत्रित कर सकेंगे।
6.	बेटी के नाम पत्र	पत्र	पितृत्व प्रेम	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • पत्र के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • उत्सवों व शुभसंदर्भों पर दी जाने वाली शुभकामनाओं के बारे में बातचीत कर सकेंगे। • पाठ के आधार पर वाक्य जोड़कर सही वाक्य लिख सकेंगे। • गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
6.	बेटी के नाम पत्र	पत्र	पितृत्व प्रेम	**2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • पत्र के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • पत्र में नेहरू जी द्वारा कही गयी बात पर अपने विचार लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • एकवचन और बहुवचन के रूप को जान सकेंगे। • उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • बाल-अधिकार के बारे में जानकारी एकत्रित कर सकेंगे।
7.	मेरा जीवन	कविता	साहस, धैर्य व आत्मसंयम गुणों का विकास	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • हँसना-बोलना के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • खुशहाल जीवन की विशेषता पर चर्चा कर सकेंगे। • वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • पद्यांश पढ़कर भाव बता सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • कवयित्री से संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • कविता का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • किसी एक खेल के बारे में लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • समास व उसके प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। • दिये गये शब्द के सामासिक रूप लिख सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • सुभद्रा कुमारी चौहान की अन्य कविता संग्रहीत कर सकेंगे।
8.	यक्ष प्रश्न	कहानी	तार्किक ज्ञान का विकास	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • युधिष्ठिर के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • युधिष्ठिर के स्थान पर स्वयं को रखकर अपने विचार बता सकेंगे। • वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • पांडवों के वनवास, अरणी की लकड़ी आदि से संबंधित पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • यक्ष द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने विचार से

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
8.	यक्ष प्रश्न	कहानी	तार्किक ज्ञान का विकास	लिख सकेंगे। • यक्ष के स्थान पर स्वयं को रखकर प्रश्न बना सकेंगे। • पाठ के संबंध में अपने विचार प्रयोग कर सकेंगे। **3. भाषा की बात** • शब्दों के अर्थ बताकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। • पर्यायवाची शब्द पहचान सकेंगे। • संधि व उसके प्रकार के बारे में जान सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • पंचतंत्र की नीतिप्रद कहानियाँ एकत्रित कर सकेंगे।
9.	रमज़ान	निबंध	संस्कृति, धार्मिक सहिष्णुता	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • त्यौहारों के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • त्यौहार मनाने में बच्चों की खुशियों पर चर्चा कर सकेंगे। • पाठ पढ़कर वाक्य सही क्रम में लिख सकेंगे। • पाठ के आधार पर दी गयी पंक्तियों के भाव लिख सकेंगे। • पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • सहरी, रोज़े, भारत की विशेषता के संबंध में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • संदेश लिख सकेंगे। • उपवासों के गुण लिख सकेंगे। • इस्लामी महीनों के नाम जान सकेंगे। **3. भाषा की बात** • वाच्य व वाच्य के प्रकार के बारे में जान सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • व्यंजन बनाने की विधि की पता कर, लिख सकेंगे।
10	अमर वाणी	कविता	नैतिकता	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • हिंदी कवियों के नाम बता सकेंगे। • कबीर के बारे में बता सकेंगे। • अभ्यास के महत्व पर चर्चा कर सकेंगे। • पाठ पढ़कर भाव से संबंधित दोहा लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • कबीर के अनुसार 'किसी काम को धीरे-धीरे करना' का अर्थ अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
10	अमर वाणी	कविता	नैतिकता	• दोहों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। • भगवान के स्मरण, अभ्यास से संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **3. परियोजना कार्य** • दोहे एकत्रित कर सकेंगे।
11.	सुनीता विलियम्स	साक्षात्कार	विज्ञान जानकारी	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • अंतरिक्ष के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • अंतरिक्ष यात्रियों के नाम बता सकेंगे। • पाठ पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकेंगे। • अनुच्छेद पढ़कर उसके आधार पर प्रश्न बना सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • सुनीता विलियम्स से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे। • सुनीता विलियम्स से साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्न लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • काल व काल के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्‌वारा अंतरिक्ष में भेजे गये उपग्रहों की जानकारी एकत्रित कर सकेंगे।
12.	जागो ग्राहक जागो	संवाद	जागरूकता	**1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** • उपभोक्ता के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे। • उपभोक्ताओं को किस प्रकार जागरूक बनाया जा सकता है, इस बात पर चर्चा कर सकेंगे। • ग्राहकों की भलाई के लिए सरकार द्‌वारा किये जाने वाले कार्य पर चर्चा कर सकती है। • पाठ पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • पाठ पढ़कर पाठ में बच्चों द्‌वारा पूछे गये प्रश्न ढूँढ़कर लिख सकेंगे। **2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** • वस्तु की प्रामाणिकता, सरकारी प्रामाणिक चिह्न से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। • उपभोक्ता दिवस, उपभोक्ताओं व उपभोक्ताओं द्‌वारा

क्र. सं.	पाठ का शीर्षक	विधा	मूल्य	अपेक्षित दक्षताएँ
12.	जागो ग्राहक जागो	संवाद	जागरूकता	ध्यान में रखने वाली बातों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। **3. भाषा की बात** • 51 से 100 तक संख्या शब्द जान सकेंगे। **4. परियोजना कार्य** • जल संरक्षण के उपायों से संबंधित विज्ञापन एकत्रित कर सकेंगे।

बस एक क़दम और...

बस एक क़दम और इस बार किनारा होगा,
बस एक प्रयास और यह जगत तुम्हारा होगा।
अंबर के नीचे बस बदली के पीछे कोई तो किरण होगी,
इस अंधकार से लड़ने को कोई तो किरण होगी।
बस एक पहर और इस बार उजाला होगा,
बस एक क़दम और इस बार किनारा होगा।
जो लक्ष्य को भेदे वो कहीं तो तीर होगा,
इस तपती भूमि में कहीं तो नीर होगा।
बस एक प्रयास और अब लक्ष्य हमारा होगा,
बस एक क़दम और इस बार किनारा होगा।
जो मंज़िल तक पहुँचे वो कोई तो राह होगी,
अपने मन को टटोलो कोई तो चाह होगी।
जो मंज़िल तक पहुँचे वो क़दम हमारा होगा,
बस एक क़दम और इस बार किनारा होगा।
बस...एक प्रयास और...यह जगत तुम्हारा होगा,
बस...एक क़दम और...इस बार किनारा होगा।

शैक्षिक सोपान - पाठ योजना

नमूना पाठ

कक्षाः आठवीं

हम होंगे कामयाब (कविता पाठ)

पहला दिन

1.उन्मुखीकरणः

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद प्रस्तावना चित्र से संबंधित बातचीत करेगा। इसमें दो प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। जैसे-

1. चित्र देखकर उत्तर देनेवाले प्रश्न	2. चित्र के आधार पर सोचकर उत्तर देने वाले प्रश्न
1. चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?	1. इस चित्र से क्या भाव प्रकट होता है?
2. चींटी कहाँ है?	2. चित्र में चींटी क्या कहना चाहती होगी?
3. चींटी ने क्या उठाया?	3. चित्र से क्या संदेश मिलता है?

(इसी प्रकार के अन्य प्रश्न बनाकर छात्रों से पूछें)

2. उद्देश्यः

पाठ की अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त करने के लिए अध्यापक पाठ्य विषय संबंधी चित्रों के संबंध में छात्रों से बातचीत करेंगे। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनका उत्तर संज्ञा शब्द हो। जैसे-

रस्सी किसके हाथ में है?

पतंग किसके हाथ में है?

इस के बाद क्रिया शब्दों पर बातचीत करें, इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिन के उत्तर क्रिया शब्द (Action words) हो। जैसे-

लड़की रस्सी से क्या कर रही है?

पौधे के पास लड़की क्या कर रही है?

इसके बाद छात्रों से वाक्य रचना करवाने के लिए बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर पूर्ण वाक्य में दिये जा सकें। जैसे-

लड़का रंगों से क्या कर रहा है?

लड़कियाँ मैक के पास क्या कर रही हैं?

इसके बाद छात्रों से वार्तालाप संबंधी बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर वार्तालाप में दिये जा सकें। जैसे-

पतंग उड़ाने वाले लड़के से लड़की क्या कह रही होगी?

गेंद खेलने वाली लड़की से लड़का क्या कह रहा होगा?

सैकिल चलाने वाली लड़की पढ़ने वाली लड़की से क्या कह रही होगी?

इसके बाद छात्रों से कथावस्तु संबंधी बात करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर कहानी के रूप में दिये जा सकें। जैसे-

इस पाठ में दिये गये चित्रों को मिलाकर एक कहानी बनाओ।

पाठ में दिये गये चित्रों के प्रति अपने विचार व्यक्त करो।

3. पठन-पाठन काठिन्य निवारण

पाठ के विषयवस्तु संबंधी चित्रों के संबंध में अध्यापक छात्रों से बातचीत करने के बाद गीत को रागयुक्त गायेगा, और छात्र उसे ध्यान से सुनेंगे।

इसके बाद अध्यापक स्वयं गीत गाते हुए छात्रों से अनुकरण करवायेगा और सब मिलकर अभिनय के साथ गीत गायेंगे।

गृहकार्यः अभिनय सहित गीत गान के अभ्यास का गृहकार्य दिया जायेगा।

दूसरा दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे अभिनय के साथ गीत गाने को कहें।

समूहों में बैठे छात्रों से गीत में आये नये और कठिन शब्दों को रेखांकित करने और उनके अर्थ पुस्तक के अंत में दिये गए शब्दकोश की सहायता से जानने के लिए प्रेरित करेंगे। जब छात्र शब्द रेखांकित करेंगे तो सारे समूहों के शब्द और उनके अर्थ श्यामपट पर लिखें। छात्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में शब्दार्थ लिखेंगे। लिखे गये शब्दों को बिना देखे लिखवाने और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करवाने जैसे अभ्यास भी दिये जायें और उनकी जाँच करें।

गृहकार्यः कुछ नये शब्द देकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करने को कहा जायेगा।

तीसरा दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने को कहा गया था। उनकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना।

4. पाठ का विश्लेषण-चर्चा-स्पष्टीकरण

गीत को सुविधानुसार एक या दो भागों में विभाजित करके प्रत्येक भाग का विश्लेषण एक सत्र में करें। जैसे गीत के दो भागों में से यहाँ एक भाग लिया जा रहा है।

होंगे कामयाब, होंगे कामयाब,
हम होंगे कामयाब, एक दिन
हो हो! मन में है विश्वास,
पूरा है विश्वास, हम होंगे कामयाब एक दिन।।
होगी शांति चारों ओर, होगी शांति चारों ओर,
होगी शांति चारों ओर एक दिन।।
हो हो! मन में है विश्वास,
होगी शांति चारों ओर एक दिन।।

इस गीत को अध्यापक स्वयं गाते हुए छात्रों से अनुकरण करवायेगा। छात्रों के गायन की प्रशंसा करते हुए व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनकी उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ सुधारेगा। इसके बाद अध्यापक गीत गायेगा और उसे श्यामपट पर लिख कर छात्रों से चर्चा करेगा।

बच्चो! आपने गीत गाया है न? अब बताइए कि-
'कामयाब' का भाव क्या है?
जीवन में कामयाबी का क्या महत्व है?
'विश्वास' क्या है?
विश्वास के बारे में अपने शब्दों में बताइए।

इस तरह के प्रश्न गीत से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जाय, यदि छात्रों से उत्तर न मिला तो अध्यापक स्वयं ही उनका विवरण दें।श्यामपट पर लिखें। इस प्रकार चर्चा द्वारा (अनुवाद न करें) संपूर्ण विश्लेषण के बाद छात्रों से गीत का सारांश बताने को कहें।

गृहकार्यः विश्लेशित गीत का सारांश लिख कर आने को कहा जायेगा।

चौथा दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। इस तरह के प्रश्न गीत से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जायें, यदि छात्रों से उत्तर न मिले तो अध्यापक स्वयं बतायें। उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

इसके बाद गीत के अगले भाग की ओर अग्रसर हों।

हम चलेंगे साथ-साथ, डाल हाथों में हाथ,

हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन

हो हो! मन में है विश्वास,पूरा है विश्वास,

हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।।

नहीं डर किसी का आज, नही डर किसी का आज,

नहीं डर किसी का आज, एक दिन

हो हो! मन में है विश्वास,पूरा है विश्वास,

नहीं डर किसी का आज, एक दिन।।

उपर्युक्त गीत को अध्यापक स्वयं गाते हुए छात्रों से भी गाने को कहेगा। छात्रों के गायन की प्रशंसा करते हुए उनसे व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनके उच्चारण संबंधी दोशों को सही करेगा। जिसके बाद अध्यापक स्वयं स्पष्ट उच्चारण के साथ गीत गायेगा। गीत को श्यामपट पर लिख कर छात्रों से चर्चा करेगा-

बच्चों आपने गीत गाया हैं! अब बताइए कि आपने क्या समझा?

हमें किस प्रकार आगे बढ़ना है?

विश्वास कहाँ हो?

हम सब कैसे मिल कर रहें?

हमको किससे डरना चाहिए?

गीत में 'न डरने' का क्या भाव है?

इस गीत को अध्यापक स्वयं गाते हुए छात्रों से अनुकरण करवायेगा। छात्रों के गायन की प्रशंसा करते हुए व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनकी उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ सुधारेगा। इसके बाद अध्यापक गीत गायेगा और उसे श्यामपट पर लिख कर छात्रों से चर्चा करेगा।

गृहकार्यः गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखने के लिए कहा जायेगा।

पाँचवाँ दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में गीत का सारांश लिखने के लिए कहा गया था। उसकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना और आवश्यक सूचनाएँ देना। पढ़ाये गये गीत में से कुछ भाषा संबंधी प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में उन प्रश्नों के उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

5. सुनो-बोलो-पढ़ो

और

6. लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा

छात्रों को समूहों में बैठकर चर्चा करते हुए अभ्यास करने को प्रोत्साहन देगा। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

छठवाँ दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में सुनो-बोलो-पढ़ो-लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा आदि दक्षताओं पर अभ्यास करवाया गया था। उनका पुनरावृत्ति करें, छात्रों से चर्चा करें और आवश्यक सूचनाएँ दें, श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

7. शब्द भंडार-भाषा की बात

छात्रों को समूहों में बैठकर चर्चा करते हुए अभ्यास करने को प्रोत्साहन देगा। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

परियोजना कार्यः छात्रों को इसी प्रकार के कुछ गीत इकट्ठा करने को कहें।

अध्यापक छात्रों में हर दिन उत्साह बढ़ाने के लिए सहायक सामाग्री (चित्र, वस्तुएँ, उदाहरण, गीत आदि) का उपयोग करें।

राजा बदल गया (गद्य पाठ)

नमूना पाठ **कक्षाः आठवीं**

पहला दिन

1.उन्मुखीकरणः

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद प्रस्तावना चित्र से संबंधित बातचीत करेगा। इसमें दो प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। जैसे-

1. चित्र देखकर उत्तर देनेवाले प्रश्न	2. चित्र के आधार पर सोचकर उत्तर देने वाले प्रश्न
चित्र में क्या दिखाई दे रहा है?	इस चित्र से क्या भाव प्रकट होता है?
पुस्तक कहाँ है?	चित्र में बालक क्या कहना चाहती होगा?
बालक ने क्या उठाया?	चित्र से क्या संदेश मिलता है?

(इसी प्रकार के अन्य प्रश्न बनाकर छात्रों से पूछें)

2. उद्देश्यः

पाठ की अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त करने के लिए अध्यापक पाठ्य विषय संबंधी चित्रों के संबंध में छात्रों से बातचीत करेंगे। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनका उत्तर संज्ञा शब्द हो। जैसे-

लड़के के हाथ में क्या है?

साधू के हाथ में क्या हैं?

इस के बाद क्रिया शब्दों पर बातचीत करें, इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिन के उत्तर क्रिया शब्द (Action words) हो। जैसे-

घोड़ा क्या कर रहा है?

नीचे सिक्का देख कर लडका क्या कर रहा है?

इसके बाद छात्रों से वाक्य रचना करवाने के लिए बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर पूर्ण वाक्य में दिये जा सकें। जैसे-

लड़का राजा के पास क्या कर रहा है?

लड़का साधू के पास क्या कर रहा है?

इसके बाद छात्रों से वार्तालाप संबंधी बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर वार्तालाप में दिये जा सकें। जैसे-

लड़का साधू से क्या कह रहा होगा?

इसके बाद छात्रों से कथावस्तु संबंधी बात करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर कहानी के रूप में दिये जा सकें। जैसे-

इन सभी चित्रों को मिलाकर एक कहानी बनाओ।

इन चित्रों के प्रति अपने विचार व्यक्त करो।

3. पठन-पाठन काठिन्य निवारण

पाठ के विषयवस्तु संबंधी चित्रों के संबंध में अध्यापक छात्रों से बातचीत करने के बाद कुछ छात्र पाठ पढ़ेंगे और अध्यापक उनके अशुद्धियाँ सुधारेगा।

इसके बाद अध्यापक स्वयं पाठ का आदर्श वाचन करेगा।

गृहकार्यः छात्रों को पाठ पढ़कर आने का गृहकार्य दिया जायेगा।

दूसरा दिन

दूसरे सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पाठ पढ़ने को कहना-

छात्रों को समूहों में बिठाकर पाठ में नये और कठिन शब्दों को रेखांकित करने और उनके अर्थ पुस्तक के अंत में दिये गए शब्दकोश की सहायता से ढूंढ़ने को कहा जायेगा। (ये समूह नित्य प्रति दिन नहीं बनाये जाते एक बार बच्चों के स्तर के अनुकूल बनाये गए समूह हमेशा रहते हैं। समूह का एक नायक बनाया जाय। समूह के सभी सदस्य सक्रिय भाग लें।) जब छात्र शब्द रेखांकित करेंगे तो सारे समूहों के शब्द और उनके अर्थ श्यामपट पर लिखें या छात्रों से लिखवाया जाय। वे शब्दार्थ छात्र अपने अभ्यास पुस्तिका में लिख लेंगे। अध्यापक उनकी जाँच करें।

लिखे गये शब्दों को बिना देखे लिखवाने और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करवाने जैसे अभ्यास भी करवा सकते हैं।

गृहकार्यः कुछ कठिन शब्द देकर उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करने को कहा जायेगा।

तीसरा दिन

तीसरे सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने को कहा गया था। उनकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना।

4. पाठ का विश्लेषण-चर्चा-स्पष्टीकरण

पाठ को सुविधानुसार एक या दो भागों में विभाजित करके प्रत्येक भाग का विश्लेषण एक सत्र में करें। जैसे पाठ के दो भागों में से यहाँ एक भाग (तीन अनुच्छेद-एक बार एक जंगल में.........कहाँ जा रहे हैं?'')लिया जा रहा है।

पाठ को अध्यापक स्वयं पढ़कर छात्रों से भी पढ़ने को कहेगा। छात्रों के पढ़ने की प्रशंसा करते हुए उनसे व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनके उच्चारण संबंधी दोशों को सही करेगा। जिसके बाद अध्यापक स्वयं स्पष्ट उच्चारण के साथ पाठ पढ़ेगा। पाठ के संबंध में छात्रों से चर्चा करेगा-

बच्चों आपने पाठ पढ़ा हैं! अब बताइए कि आपने क्या समझा?
राजेश कहाँ जा रहा था?
राजेश को रास्ते में क्या दिखा?
सिक्का देख कर राजेश ने क्या सोचा?
उसने सिक्का किसे देना चाहा?
साधू ने क्या कहा?
राजा किस प्रकार जा रहा था?
राजा को देख कर राजेश ने क्या सोचा?
राजेश ने सैनिक से क्या पूछा?

इस तरह के प्रश्न पाठ से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जाय, यदि छात्रों से उत्तर न मिला तो अध्यापक स्वयं ही उनका विवरण दें। श्यामपट पर लिखें। इस प्रकार चर्चा द्वारा (अनुवाद न करें) संपूर्ण विश्लेषण के

बाद छात्रों से पाठ का सारांश कहने को कहे।
गृहकार्यः विश्लेशित पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा जायेगा।

चौथा दिन

चौथे सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा गया था। उसकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना और आवश्यक सूचनाएँ देना। पढ़ाये गये पाठ में से कुछ भाषा संबंधी प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में उन प्रश्नों के उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

इसके बाद पाठ के अगले भाग की ओर अग्रसर हो।

‘‘यह हमारे राजा शूर सिंह हैं,.............आरंभ कर दिया।

पाठ को अध्यापक स्वयं पढ़कर छात्रों से भी पढ़ने को कहेगा। छात्रों के पढ़ने की प्रशंसा करते हुए उनसे व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनके उच्चारण संबंधी दोशों को सही करेगा। जिसके बाद अध्यापक स्वयं स्पष्ट उच्चारण के साथ पाठ पढ़ेगा। पाठ के संबंध में छात्रों से चर्चा करेगा-

बच्चों आपने पाठ पढ़ा हैं! अब बताइए कि आपने क्या समझा?
सैनिक ने राजेश से क्या कहा?
राजेश ने राजा से क्या कहा?
राजा को आश्चर्य क्यों हुआ?
राजा ने क्या कहा?
राजेश ने सिक्का राजा को क्यों देना चाहा?
राजा को क्या समझ में आया?
राजा ने अपनी संपत्ती का क्या किया?

इस तरह के प्रश्न पाठ से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जाय, यदि छात्रों से उत्तर न मिला तो अध्यापक स्वयं ही उनका विवरण दें। श्यामपट पर लिखें। इस प्रकार चर्चा द्वारा (अनुवाद न करें) संपूर्ण विश्लेषण के बाद छात्रों से पाठ का सारांश कहने को कहे।
गृहकार्यः विश्लेशित पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा जायेगा।

पाँचवाँ दिन

पाँचवें सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा गया था। उसकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना और आवश्यक सूचनाएँ देना। पढ़ाये गये पाठ में से कुछ भाषा संबंधी प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में उन प्रश्नों के उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

5. सुनो-बोलो-पढ़ो

6. लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा

अभ्यास कक्षा में छात्रों को समूहों में, चर्चा करते हुए करवाये। इस कार्य में यथा संभव छात्रों को सक्रिय रखने का प्रयास करें। पाठ्य पुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

छठवाँ दिन

छठवें सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में सुनो-बोलो-पढ़ो-लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा दक्षताओं पर अभ्यास करवाया गया था। उनका पुनरावृत्ति करें, छात्रों से चर्चा करें और आवश्यक सूचनाएँ दें श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

7. शब्द भंडार-भाषा की बात

अभ्यास कक्षा में छात्रों को समूहों में, चर्चा करते हुए करवाये। इस कार्य में यथा संभव छात्रों को सक्रिय रखने का प्रयास करें। पाठ्य पुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

इसके बाद परियोजना कार्य करने को कहें।

परियोजना कार्यः छात्रों को इस कहानी के आधार पर कोई और कहानी बना कर लिखने को कहें।

अध्यापक हर दिन छात्रों को आकर्षित करने के लिए सहायक सामाग्री (चित्र, वस्तुएँ आदि) का उपयोग करें।

जिस देश में गंगा बहती है! (पद्य पाठ)

नमूना पाठ **कक्षाः नवीं**

पहला दिन

1.उन्मुखीकरणः

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद प्रस्तावना चित्र से संबंधित बातचीत करेगा। इसमें दो प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। जैसे-

चित्र में कौनसे संग दिखाई दे रहे हैं?
उड़ता हुआ पक्षी कौनसा है?
चित्र में कौन-कौनसे प्राकृतिक दृश्य हैं?
यह चित्र किस देश के बारे में बता रहा है?
सूरज किस दिशा से उगता है?
चित्र लिखे गये वाक्यों से क्या संदेश मिलता है?
(इसी प्रकार के अन्य प्रश्न बनाकर छात्रों से पूछें)

2. उद्देश्यः

पाठ की अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त करने के लिए अध्यापक पाठ्य विषय संबंधी चित्रों के संबंध में छात्रों से बातचीत करेंगे। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनका उत्तर संज्ञा शब्द हो। जैसे-

पानी में कौनसा फूल है?
चित्र में दिखने वाले जानवर कौनसे हैं?

इस के बाद क्रिया शब्दों पर बातचीत करें, इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिन के उत्तर क्रिया शब्द (Action words) हो। जैसे-

हिरण क्या कर रहा है?

कोयल क्या कर रही है?
इसके बाद छात्रों से वाक्य रचना करवाने के लिए बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर पूर्ण वाक्य में दिये जा सकें। जैसे-
मंदिर में क्या होता है?
बच्चे क्या कर रहे हैं?
इसके बाद छात्रों से वार्तालाप संबंधी बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर वार्तालाप में दिये जा सकें। जैसे-
चित्र में कोयल एक दूसरे से क्या कह रही होगी?
मोर क्या कह रहा होगा?
इस पूरे चित्र के आधार पर एक कहानी बताओ।
इसके बाद छात्रों से कथावस्तु संबंधी बात करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर कहानी के रूप में दिये जा सकें। जैसे-
इन सभी चित्रों को मिलाकर एक कहानी बनाओ।
इन चित्रों के प्रति अपने विचार व्यक्त करो।

3. पठन-पाठन काठिन्य निवारण

पाठ के विषयवस्तु संबंधी चित्रों के संबंध में अध्यापक छात्रों से बातचीत करने के बाद गीत को रागयुक्त गायेगा, और छात्र उसे ध्यान से सुनेंगे।

इसके बाद अध्यापक स्वयं गीत गाते हुए छात्रों से अनुकरण करवायेगा और सब मिलकर अभिनय के साथ गीत गायेंगे।

गृहकार्यः अभिनय सहित गीत गान के अभ्यास का गृहकार्य दिया जायेगा।

दूसरा दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे अभिनय के साथ गीत गाने को कहें।

समूहों में बैठे छात्रों से गीत में आये नये और कठिन शब्दों को रेखांकित करने और उनके अर्थ पुस्तक के अंत में दिये गए शब्दकोश की सहायता से जानने के लिए प्रेरित करेंगे। जब छात्र शब्द रेखांकित करेंगे तो सारे समूहों के शब्द और उनके अर्थ श्यामपट पर लिखें। छात्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में शब्दार्थ लिखेंगे। लिखे गये शब्दों को बिना देखे लिखवाने और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करवाने जैसे अभ्यास भी दिये जायें और उनकी जाँच करें।

गृहकार्यः कुछ नये शब्द देकर उन्हें वाक्यों में प्रयोग करने को कहा जायेगा।

तीसरा दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने को कहा गया था। उनकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना।

4. पाठ का विश्लेषण-चर्चा-स्पष्टीकरण

गीत को सुविधानुसार एक या दो भागों में विभाजित करके प्रत्येक भाग का विश्लेषण एक सत्र में करें। जैसे गीत के दो भागों में से यहाँ एक भाग लिया जा रहा है।

बच्चों के लिए जो धरती माँ,
सदियों से सभी कुछ सहती है।
हम उस देश के वासी हैं,

जिस देश में गंगा बहती है।।

कुछ लोग जो ज़्यादा जानते हैं,
इंसान को कम पहचानते हैं।
ये पूरब है पूरब वाले,
हर जान की क़ीमत जानते हैं।

इस गीत को अध्यापक स्वयं गाते हुए छात्रों से अनुकरण करवायेगा। छात्रों के गायन की प्रशंसा करते हुए व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनकी उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ सुधारेगा। इसके बाद अध्यापक गीत गायेगा और उसे श्यामपट पर लिख कर छात्रों से चर्चा करेगा।

बच्चो! आपने गीत गाया है न? अब बताइए कि-
हमें कैसी बात कहनी चाहिए?
हमारा दिल कैसा है?
भारत में कौनसी नदियाँ बहती हैं?
अपने लिए हमारा मेहमाँ कैसा होता है?
हमारा गुज़ारा कैसा होता है?
धरती माँ अपने बच्चों के लिए क्या करती है?
कौन इंसान को कम पहचानते हैं?
हर जान की क़ीमत कौन जानते हैं?

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। इस तरह के प्रश्न गीत से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जायें, यदि छात्रों से उत्तर न मिले तो अध्यापक स्वयं बतायें। उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

इसके बाद गीत के अगले भाग की ओर अग्रसर हों।

मिलजुल के रहो और प्यार करो,
एक चीज़ यही तो रहती है।
हम उस देश के वासी हैं,
जिस देश में गंगा बहती है।।

जो जिससे मिला सीखा हमने,
ग़ैरों को भी अपनाया हमने।
मतलब के लिए अंधे होकर,
रोटी को नहीं पूजा हमने।
अब हम तो क्या सारी दुनिया,
सारी दुनिया से कहती है।
हम उस देश के वासी हैं,
जिस देश में गंगा बहती है।।

होठों पे सचाई रहती है,
जहाँ दिल में सफ़ाई रहती है।
हम उस देश के वासी हैं,
जिस देश में गंगा बहती है।।

इस गीत को अध्यापक स्वयं गाते हुए छात्रों से अनुकरण करवायेगा। छात्रों के गायन की प्रशंसा करते हुए व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनकी उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ सुधारेगा। इसके बाद अध्यापक गीत गायेगा और उसे श्यामपट पर लिख कर छात्रों से चर्चा करेगा।

बच्चो! आपने गीत गाया है न? अब बताइए कि-
भारत वासियों को किस प्रकार रहना चाहिए?
हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?
हमारे बारे में दुनिया क्या कहती है?

इस तरह के प्रश्न गीत से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जाय, यदि छात्रों से उत्तर न मिला तो अध्यापक स्वयं ही उनका विवरण दें।श्यामपट पर लिखें। इस प्रकार चर्चा द्वारा (अनुवाद न करें) संपूर्ण विश्लेषण के बाद छात्रों से गीत का सारांश बताने को कहें।

गृहकार्यः विश्लेशित गीत का सारांश लिख कर आने को कहा जायेगा।

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में गीत का सारांश लिखने के लिए कहा गया था। उसकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना और आवश्यक सूचनाएँ देना। पढ़ाये गये गीत में से कुछ भाषा संबंधी प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में उन प्रश्नों के उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

5. सुनो-बोलो-पढ़ो
और
6. लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा

छात्रों को समूहों में बैठकर चर्चा करते हुए अभ्यास करने को प्रोत्साहन देगा। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

छठवाँ दिन

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में सुनो-बोलो-पढ़ो-लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा आदि दक्षताओं पर अभ्यास करवाया गया था। उनका पुनरावृत्ति करें, छात्रों से चर्चा करें और आवश्यक सूचनाएँ दें, श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

7. शब्द भंडार-भाषा की बात

छात्रों को समूहों में बैठकर चर्चा करते हुए अभ्यास करने को प्रोत्साहन देगा। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

8. परियोजना कार्यः छात्रों को इसी प्रकार के कुछ गीत इकट्ठा करने को कहें।

अध्यापक छात्रों में हर दिन उत्साह बढ़ाने के लिए सहायक सामाग्री (चित्र, वस्तुएँ, उदाहरण, गीत आदि) का उपयोग करें।

गाने वाली चिड़िया (गद्य पाठ)

नमूना पाठ **कक्षाः नवीं**

पहला दिन

1.उन्मुखीकरणः

अध्यापक छात्र संबोधन के बाद प्रस्तावना चित्र से संबंधित बातचीत करेगा। इसमें दो प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं। जैसे-

1. चित्र देखकर उत्तर देनेवाले प्रश्न	2. चित्र के आधार पर सोचकर उत्तर देने वाले प्रश्न
चित्र से कौनसी भावना प्रकट होती है? कुछ पालतू जानवरों के नाम बताओ। जानवरों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?	आपको कौन-कौनसी पक्षियाँ पसंद हैं? कुत्ते की क्या विशेषता है? यदि आपको कोई घायल पक्षी दिखती है तो आप उसके लिए क्या करेंगे?

(इसी प्रकार के अन्य प्रश्न बनाकर छात्रों से पूछें)

2. उद्देश्यः

पाठ की अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त करने के लिए अध्यापक पाठ्य विषय संबंधी चित्रों के संबंध में छात्रों से बातचीत करेंगे। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनका उत्तर संज्ञा शब्द हो। जैसे-

खेत में कौन काम करते हैं?

व्यक्ति बैलों की सहायता से क्या काम कर रहा है?

इस के बाद क्रिया शब्दों पर बातचीत करें, इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिन के उत्तर क्रिया शब्द (Action words) हो। जैसे-

चिड़िया कर रही है?

किसान क्या कर रहा है?

इसके बाद छात्रों से वाक्य रचना करवाने के लिए बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर पूर्ण वाक्य में दिये जा सकें। जैसे-

राजा कहाँ है?

राजा के पास कौन है?

इसके बाद छात्रों से वार्तालाप संबंधी बातचीत करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर वार्तालाप में दिये जा सकें। जैसे-

राजा क्या सोच रहा होगा?

आदमी औरत से क्या कह रहा होगा

इसके बाद छात्रों से कथावस्तु संबंधी बात करें। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जायें कि जिनके उत्तर कहानी के रूप में दिये जा सकें। जैसे-

इन चित्रों के आधार पर एक कहानी बनाओ।

इन चित्रों के प्रति अपने विचार व्यक्त करो।

3. पठन-पाठन काठिन्य निवारण

पाठ के विषयवस्तु संबंधी चित्रों के संबंध में अध्यापक छात्रों से बातचीत करने के बाद कुछ छात्र पाठ पढ़ेंगे और अध्यापक उनके अशुद्धियाँ सुधारेगा।

इसके बाद अध्यापक स्वयं पाठ का आदर्श वाचन करेगा।

गृहकार्यः छात्रों को पाठ पढ़कर आने का गृहकार्य दिया जायेगा।

दूसरा दिन

दूसरे सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पाठ पढ़ने को कहना-

छात्रों को समूहों में बिठाकर पाठ में नये और कठिन शब्दों को रेखांकित करने और उनके अर्थ पुस्तक के अंत में दिये गए शब्दकोश की सहायता से ढूंढ़ने को कहा जायेगा। (ये समूह नित्य प्रति दिन नहीं बनाये जाते एक बार बच्चों के स्तर के अनुकूल बनाये गए समूह हमेशा रहते हैं। समूह का एक नायक बनाया जाय। समूह के सभी सदस्य सक्रिय भाग लें।) जब छात्र शब्द रेखांकित करेंगे तो सारे समूहों के शब्द और उनके अर्थ श्यामपट पर लिखें या छात्रों से लिखवाया जाय। वे शब्दार्थ छात्र अपने अभ्यास पुस्तिका में लिख लेंगे। अध्यापक उनकी जाँच करें।

लिखे गये शब्दों को बिना देखे लिखवाने और उन्हें वाक्यों में प्रयोग करवाने जैसे अभ्यास भी करवा सकते हैं।

गृहकार्यः कुछ कठिन शब्द देकर उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करने को कहा जायेगा।

तीसरा दिन

तीसरे सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने को कहा गया था। उनकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना।

4. पाठ का विश्लेषण-चर्चा-स्पष्टीकरण

पाठ को सुविधानुसार एक या दो भागों में विभाजित करके प्रत्येक भाग का विश्लेषण एक सत्र में करें। जैसे पाठ के दो भागों में से यहाँ एक भाग (**एक राजा था।.........राजा को अपना गाना अवश्य सुनाऊँगी।''**) लिया जा रहा है।

पाठ को अध्यापक स्वयं पढ़कर छात्रों से भी पढ़ने को कहेगा। छात्रों के पढ़ने की प्रशंसा करते हुए उनसे व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनके उच्चारण संबंधी दोशों को सही करेगा। जिसके बाद अध्यापक स्वयं स्पष्ट उच्चारण के साथ पाठ पढ़ेगा। पाठ के संबंध में छात्रों से चर्चा करेगा-

बच्चों आपने पाठ पढ़ा हैं! अब बताइए कि आपने क्या समझा?

चिड़िया की विशेषता क्या थी?

यात्री अपने यात्रा वर्णन में क्या लिखते थे?

राजा ने अपने सेवकों से क्या कहा?

सेवकों को जंगल में कौन मिले?

लड़की ने सेवकों से क्या कहा?

चिड़िया ने लड़िकी से क्या कहा?

इस तरह के प्रश्न पाठ से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जाय, यदि छात्रों से उत्तर न मिला तो अध्यापक स्वयं ही उनका विवरण दें। श्यामपट पर लिखें। इस प्रकार चर्चा द्वारा (अनुवाद न करें) संपूर्ण विश्लेषण के बाद छात्रों से पाठ का सारांश कहने को कहे।

गृहकार्यः विश्लेशित पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा जायेगा।

चौथा दिन

चौथे सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा गया था। उसकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना और आवश्यक सूचनाएँ देना। पढ़ाये गये पाठ में से कुछ भाषा संबंधी प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में उन प्रश्नों के उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

जिसके बाद पाठ के अगले भाग की ओर अग्रसर हो।

(**अगले दिन दरबार लगा हुआ था।**.............**हमारे सुखदाता और अन्नदाता हैं।''**)

पाठ को अध्यापक स्वयं पढ़कर छात्रों से भी पढ़ने को कहेगा। छात्रों के पढ़ने की प्रशंसा करते हुए उनसे व्यक्तिगत वाचन करवायेगा और उनके उच्चारण संबंधी दोशों को सही करेगा। जिसके बाद अध्यापक स्वयं स्पष्ट उच्चारण के साथ पाठ पढ़ेगा। पाठ के संबंध में छात्रों से चर्चा करेगा-

बच्चों आपने पाठ पढ़ा हैं! अब बताइए कि आपने क्या समझा?

राजा ने चिड़ियासे क्या कहा?

चिड़िया ने राजा को क्या जवाब दिया?

राजा क्यों अस्वस्थ हो गये?

राजा कैसे स्वस्थ बने?

चिड़िया को संगीत किसको सुनाने में आनंद मिलता था?

राजा का कर्तव्य क्या है?

जनता के सुख दाता व अन्न दाता कौन है?

इस तरह के प्रश्न पाठ से संबंधित मुख्य शब्द, भाव एवं अर्थ पर पूछे जाय, यदि छात्रों से उत्तर न मिला तो अध्यापक स्वयं ही उनका विवरण दें। श्यामपट पर लिखें। इस प्रकार चर्चा द्वारा (अनुवाद न करें) संपूर्ण विश्लेषण के बाद छात्रों से पाठ का सारांश कहने को कहे।

गृहकार्यः विश्लेशित पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा जायेगा।

पाँचवाँ दिन

पाँचवें सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में पाठ का सारांश लिख कर आने को कहा गया था। उसकी जाँच छात्रों से आपस में करवाना और आवश्यक सूचनाएँ देना। पढ़ाये गये पाठ में से कुछ भाषा संबंधी प्रश्न श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में उन प्रश्नों के उत्तर लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

5. सुनो-बोलो-पढ़ो

6. लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा

अभ्यास कक्षा में छात्रों को समूहों में, चर्चा करते हुए करवाये। इस कार्य में यथा संभव छात्रों को सक्रिय रखने का प्रयास करें। पाठ्य पुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

छठवाँ दिन

छठवें सत्र के आरंभ में अध्यापक छात्रों से संबोधन के बाद पिछले सत्र का पुनरावृत्ति करेगा। जैसे पिछले सत्र में सुनो-बोलो-पढ़ो-लिखो-सृजनात्मक अभिव्यक्ति-प्रशंसा दक्षताओं पर अभ्यास करवाया गया था। उनका पुनरावृत्ति करें, छात्रों से चर्चा करें और आवश्यक सूचनाएँ दें श्यामपट पर लिखें। छात्रों को समूहों में लिखने और प्रदर्शित करने को कहा जाय।

7. शब्द भंडार-भाषा की बात

अभ्यास कक्षा में छात्रों को समूहों में, चर्चा करते हुए करवाये। इस कार्य में यथा संभव छात्रों को सक्रिय रखने का प्रयास करें। पाठ्य पुस्तक में दिये गये अभ्यास ही न होकर अध्यापक अपनी ओर से अभ्यास बनाकर करवाने का प्रयास करें।

इसके बाद परियोजना कार्य करने को कहें।

परियोजना कार्यः छात्रों को इस कहानी के आधार पर कोई और कहानी बना कर लिखने को कहें।

अध्यापक हर दिन छात्रों को आकर्षित करने के लिए सहायक सामाग्री (चित्र, वस्तुएँ आदि) का उपयोग करें।

अध्याय-6

अध्यापक की तैयारी और संसाधन

अध्यापक को कक्षा-कक्ष में जाने से पूर्व ही कक्षा संचालन की तैयारी करनी चाहिए। जिसके द्वारा अध्यापक हर विषय से छात्रों को प्रभावित कर सकता है।

अध्यापक की तैयारी और संसाधनः

* हमें पाठ्यपुस्तक को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।
* पाठों का कालांश में विभाजन करना चाहिए।
* हर पाठ के लिए निर्धारित कालांश की योजना बनानी चाहिए।
* कालांश में किये जाने वाले कार्य पहले से ही तैयार कर लेने चाहिए।
* अध्यापन कार्य में आने वाली कठिनाइयाँ दूर करने हेतु सहायक सामग्री तैयार कर लेनी चाहिए।
* सृजनात्मक गतिविधियों के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग करें।
* परियोजना कार्य करवाने के लिए छात्रों की मानसिक तैयारी अनिवार्य है। इस पर अध्यापक ध्यान दें।
* व्याकरणांश पढ़ाते समय पाठ्यपुस्तक से हटकर अतिरिक्त जानकारी के लिए प्रयास करें।

नवीन पाठ्यपुस्तक के संसाधनः

* शब्दकोश
* देशभक्ति गीत
* चुटकुले
* कहानियाँ (वर्षा, बादल संबंधी)
* ग्रामीण जीवन की जानकारी
* वैज्ञानिक संबंधी विषयों की जानकारी

- निबंध पुस्तक
- पत्र-पत्रिकाएँ
- महापुरुषों की जीवनी
- पशु-पक्षियों की कहानियाँ
- राष्ट्रीय एवं धार्मिक त्यौहारों से संबंधित पुस्तकें
- पर्यावरण संरक्षण, जागरूकता संबंधी नारे, कथाएँ, लेख, गीत, कविता आदि।
- मुहावरा व लोकोक्ति, सूक्ति कोश
- बालगीत
- जीवन संघर्ष की कहानियाँ (विशेष आवश्यकता वाले, पिछड़े वर्ग वाले बालक संबंधित कहानी)
- चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट व नेशनल बुक ट्रस्ट की पुस्तकें
- विभिन्न पेशे वाले, घुमक्कड़ प्रवृत्ति वाले जातियों का विवरण एवं चित्र
- चित्रकला और चित्रकारों के बारे में जानकारी
- डाक संबंधी जानकारी
- स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र एवं जीवनी
- ग्रीटिंग कार्ड, प्रशंसा पत्र आदि बनाने की जानकारी
- भारत के दर्शनीय स्थलों की जानकारी
- पेड़-पौधों की कविताएँ, गीत, चित्र
- संगीत वाद्‌य यंत्रों के चित्र और विवरण
- कृषक जीवन की कथाएँ
- स्वतंत्रता संग्राम की कहानियाँ
- प्राकृतिक सौंदर्य के चित्र (सूर्योदय, सूर्यास्त, हरित प्रदेश आदि।)
- प्रदर्शनी संबंधी विवरण

- पर्यावरण, प्रदूषण से संबंधी चित्र, पेयजल की कमी के कारण, व्यर्थ करना आदि की जागरूकता

उपर्युक्त विषयों की जानकारी के लिए अध्यापक अंतरजाल, समाचार पत्र, पुस्तकालय का उपयोग करें।

हिंदी शैक्षणिक मापदंडवार प्रश्न

अपेक्षित दक्षताएँ (आठवीं कक्षा):

1. सुनो-बोलो
2. पढ़ो
3. लिखो
4. सृजनात्मक अभिव्यक्ति
5. प्रशंसा
6. शब्द भंडार
7. भाषा की बात

1. सुनो-बोलो

सुनो-बोलो

1. चित्र के बारे में अपने साथियों से बातचीत करो।
2. यदि तुम सूरज होते तो क्या करते?
3. हरियाली हमारे लिए क्यों ज़रूरी है?
4. तुम्हारी समझ से नदियों को निर्मल क्यों कहा गया होगा?
5. कविता का सारांश अपने शब्दों में बताओ।

पढ़ो

(अ) नीचे दिये गये वाक्य पढ़ो। किसने कहा बताओ।

वाक्य	किसने कहा?
(अ) मैं क्या कर सकती हूँ जबकि मैं चल ही नहीं पाती हूँ?	
(आ) दौड़ की कला मैं तुम्हें सिखाऊँगा।	
(इ) ज़मीन पर अपने कदम सीधे नहीं रख पायेगी।	
(ई) क्या मैं दुनिया की सबसे तेज धावक बन सकती हूँ।	
(उ) तुम्हारी इसी इच्छाशक्ति की वजह से कोई भी तुम्हें नहीं रोक सकता।	

लिखो

(अ) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखो।

1. तुम्हें कौन-सा व्यवसाय पसंद है और क्यों?
2. कुम्हार क्या-क्या बनाता है?
3. कुछ घरेलू उद्योगों के नाम बताओ।

(आ) इस पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

प्रशंसा

प्रशंसा

चंद्रमा भूमि का उपग्रह है। इसकी सुंदरता से जुड़ी कोई कविता सुनाओ।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

(अ) कविता में चाँद, सूरज, नदी, पर्वत,झरना, पेड़, फूल, नभ, इंद्रधनुष आदि के बारे में उल्लेख हुआ है। अब तुम किसान, अध्यापक, डॉक्टर, डाकिया आदि शब्द के द्वारा कविता आगे बढ़ाओ।

अगर न होते किसान,
बताओ फसल उगाता कौन?
अगर न होते अध्यापक,
बताओ ज्ञान फैलाता कौन?
....
....
....

6. शब्द भंडार

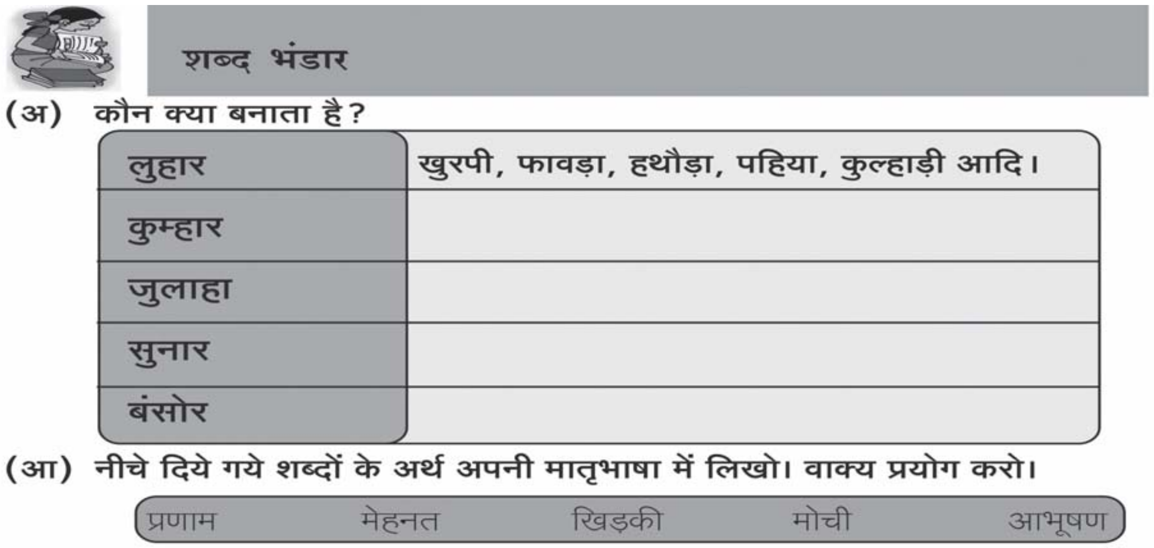

शब्द भंडार

(अ) कौन क्या बनाता है?

लुहार	खुरपी, फावड़ा, हथौड़ा, पहिया, कुल्हाड़ी आदि।
कुम्हार	
जुलाहा	
सुनार	
बंसोर	

(आ) नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ अपनी मातृभाषा में लिखो। वाक्य प्रयोग करो।

प्रणाम मेहनत खिड़की मोची आभूषण

7. भाषा की बात

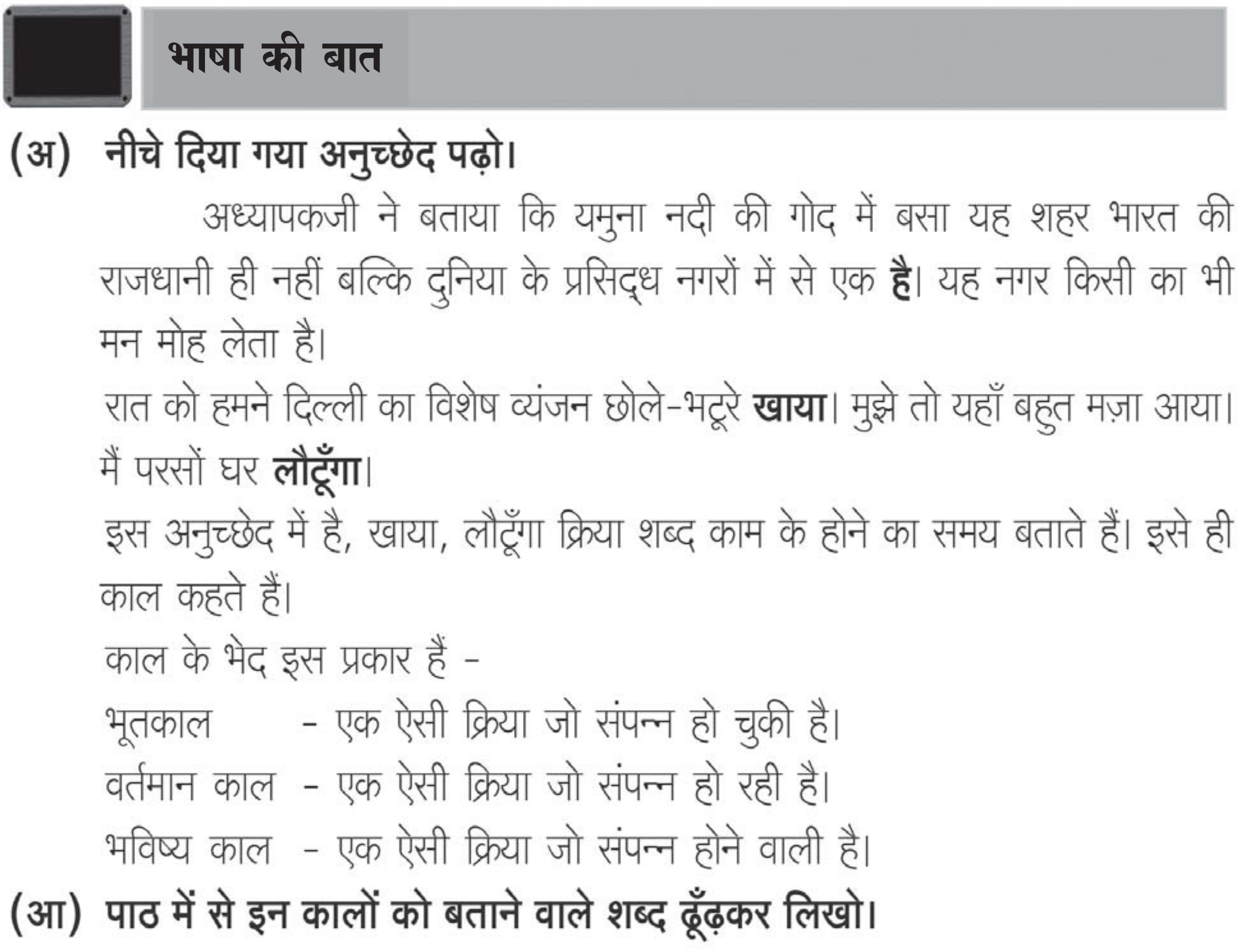

भाषा की बात

(अ) नीचे दिया गया अनुच्छेद पढ़ो।

अध्यापकजी ने बताया कि यमुना नदी की गोद में बसा यह शहर भारत की राजधानी ही नहीं बल्कि दुनिया के प्रसिद्ध नगरों में से एक **है**। यह नगर किसी का भी मन मोह लेता है।

रात को हमने दिल्ली का विशेष व्यंजन छोले-भटूरे **खाया**। मुझे तो यहाँ बहुत मज़ा आया। मैं परसों घर **लौटूँगा**।

इस अनुच्छेद में है, खाया, लौटूँगा क्रिया शब्द काम के होने का समय बताते हैं। इसे ही काल कहते हैं।

काल के भेद इस प्रकार हैं -

भूतकाल - एक ऐसी क्रिया जो संपन्न हो चुकी है।

वर्तमान काल - एक ऐसी क्रिया जो संपन्न हो रही है।

भविष्य काल - एक ऐसी क्रिया जो संपन्न होने वाली है।

(आ) पाठ में से इन कालों को बताने वाले शब्द ढूँढ़कर लिखो।

अपेक्षित दक्षताएँ (नवीं कक्षा):

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया
2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता
3. भाषा की बात
4. परियोजना कार्य

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिकि

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर बताइए।

1. भारतीयों के बारे में कवि ने क्या कहा है?
2. भारत में बहने वाली कुछ नदियों के बारे में बताइए।

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास-कार्य कीजिए।

- **कविता के आधार पर उचित क्रम दीजिए।**

एक चीज़ यही तो रहती है ( )
मिलजुल के रहो और प्यार करो (1)
जिस देश में गंगा बहती है ( )
हम उस देश के वासी हैं ( )

- **भाव से संबंधित कविता की पंक्तियाँ लिखिए।**

1. विश्व के मानचित्र में भारत पूरब में है। इसलिए भारतीयों को पूरब वासी भी कहते हैं। हमारे यहाँ इंसानियत को अधिक महत्व दिया जाता है।
2. हम ज्ञान को महत्व देते हैं। हमने सबसे कुछ न कुछ सीखा है। अंग्रेज़ों को भी अपनाया है। अपने लाभ के लिए किसी को हानि नहीं पहुँचायी।

- **पंक्तियाँ पढ़िए। भाव बताइए।**

भारत माँ की आँख के तारो!
नन्हें-मुन्ने राजदुलारो!
जैसे मैंने तुमको सवाँरा,
वैसे ही तुम देश सवाँरो।।

अपना किसी से वैर न समझो,
जग में किसी को ग़ैर न समझो।
आप पढ़ो, औरों को पढ़ाओ,
घर-घर ज्ञान की जोत जलाओ।।

2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

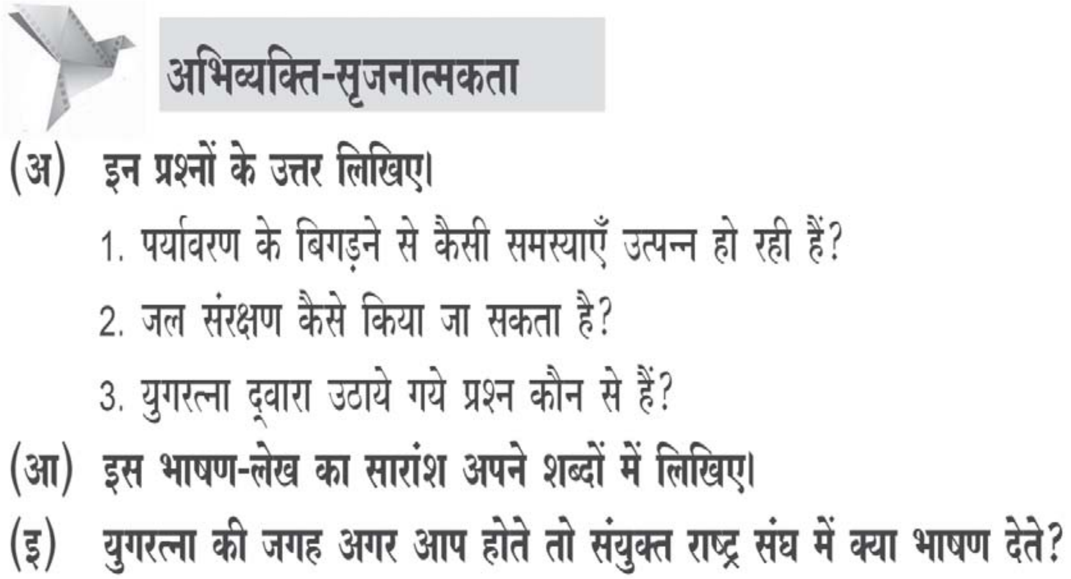

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. पर्यावरण के बिगड़ने से कैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं?
2. जल संरक्षण कैसे किया जा सकता है?
3. युगरत्ना दूवारा उठाये गये प्रश्न कौन से हैं?

(आ) इस भाषण-लेख का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) युगरत्ना की जगह अगर आप होते तो संयुक्त राष्ट्र संघ में क्या भाषण देते?

3. भाषा की बात

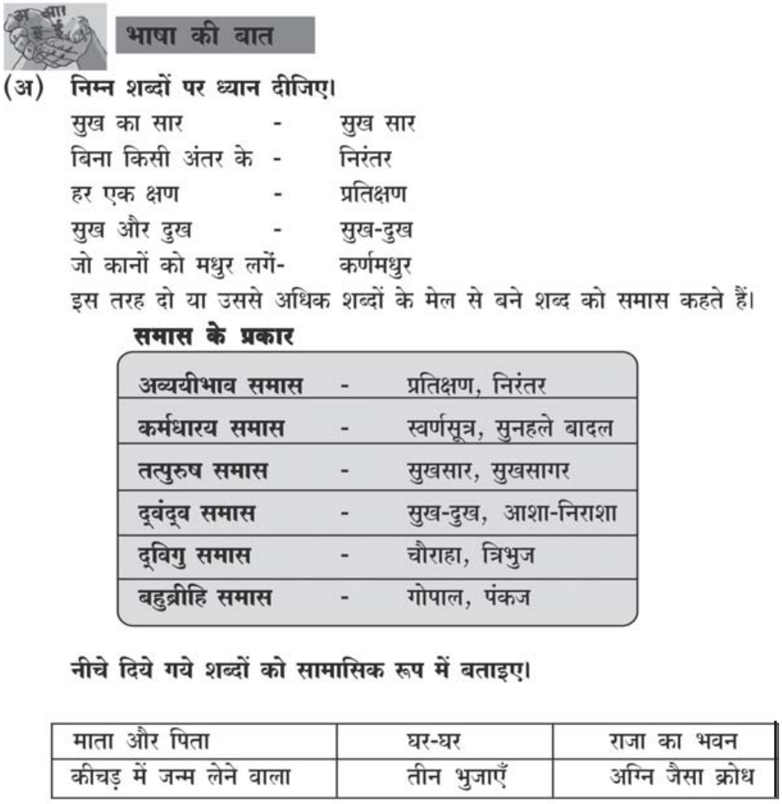

भाषा की बात

(अ) निम्न शब्दों पर ध्यान दीजिए।

सुख का सार - सुख सार
बिना किसी अंतर के - निरंतर
हर एक क्षण - प्रतिक्षण
सुख और दुख - सुख-दुख
जो कानों को मधुर लगें- कर्णमधुर

इस तरह दो या उससे अधिक शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।

समास के प्रकार

अव्ययीभाव समास	-	प्रतिक्षण, निरंतर
कर्मधारय समास	-	स्वर्णसूत्र, सुनहले बादल
तत्पुरुष समास	-	सुखसार, सुखसागर
दूवंदूव समास	-	सुख-दुख, आशा-निराशा
दूविगु समास	-	चौराहा, त्रिभुज
बहुब्रीहि समास	-	गोपाल, पंकज

नीचे दिये गये शब्दों को सामासिक रूप में बताइए।

माता और पिता	घर-घर	राजा का भवन
कीचड़ में जन्म लेने वाला	तीन भुजाएँ	अग्नि जैसा क्रोध

4. परियोजना कार्य

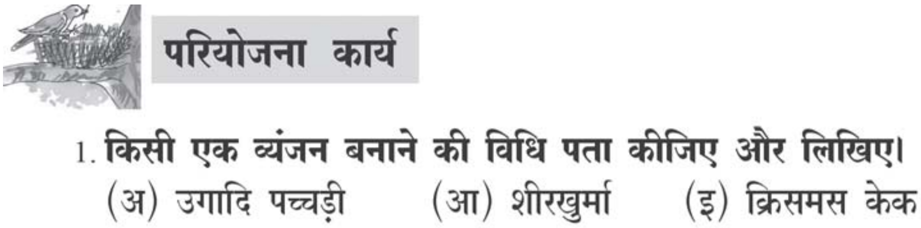

परियोजना कार्य

1. **किसी एक व्यंजन बनाने की विधि पता कीजिए और लिखिए।**

(अ) उगादि पच्चड़ी (आ) शीरखुर्मा (इ) क्रिसमस केक

अध्याय-7

संदर्भ सूची

आठवीं कक्षा द्‌वितीय भाषा

स्कूल चले हम

(1) स्कूल चले हम गीत सर्व शिक्षा अभियान का कथानक गीत है। इस गीत के माध्यम से भारत भर के बच्चों को पाठशाला की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया गया है। पाठशाला में मित्रों से मिलने, अध्यापकों के द्वारा सिखाये जाने वाले पाठों की प्यास लिये जम्मु-कश्मीर से लेकर तमिलनाडु और अरुणाचल प्रदेश से लेकर गुजरात के बच्चे पाठशाला की घंटी बजने से पहले ही घर से निकल पड़ते हैं। उनके इसी उत्साह को दर्शाते हुए स्कूल चले हम गीत को आठवीं कक्षा के मुख्यपृष्ठ के भीतरी हिस्से में स्थान दिया गया है। इस गीत के गीतकार महबूब हैं और संगीतकार शंकर-एहसान-लॉय हैं।

वंदेमातरम्

(2) भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् की रचना बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा की गई थी। इन्होंने ७ नवम्बर, १८७६ ई. में बंगाल के कांतल पाडा नामक गाँव में इस गीत की रचना की थी। वंदे मातरम् गीत के प्रथम दो पद संस्कृत में तथा शेष पद बंगाली भाषा में थे। राष्ट्रकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने इस गीत को स्वरबद्‌ध किया और पहली बार १८९६ में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में यह गीत गाया गया। अरबिंदो घोष ने इस गीत का अंग्रेज़ी में और आरिफ़ मौहम्मद ख़ान ने इसका उर्दू में अनुवाद किया। 'वंदे मातरम्' का स्थान राष्टीय गान 'जन गण मन' के बराबर है। यह गीत स्वतंत्रता की लड़ाई में लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत था।

बंकिमचंद्र चटोपाध्याय

(3) बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय (१८३८ - १८९४) बंगला के प्रख्यात उपन्यासकार, कवि, गद्यकार

और पत्रकार थे। भारत के राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम् उनकी ही रचना है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के काल में क्रान्तिकारियों का प्रेरणास्रोत बन गया था। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पूर्ववर्ती बांग्ला साहित्यकारों में उनका अन्यतम स्थान है।

सारे जहाँ से अच्छा

(4) सारे जहाँ से अच्छा या तराना-ए-हिन्दी उर्दू भाषा में लिखी गई देशप्रेम की एक ग़ज़ल है जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश राज के विरोध का प्रतीक बनी और जिसे आज भी देश-भक्ति के गीत के रूप में भारत में गाया जाता है। इसे अनौपचारिक रूप से भारत के राष्ट्रीय गीत का दर्जा प्राप्त है। इस गीत को प्रसिद्ध शायर मुहम्मद इक़बाल ने १९०५ में लिखा था और सबसे पहले सरकारी कालेज, लाहौर में पढ़कर सुनाया था। यह इक़बाल की रचना बंग-ए-दारा में शामिल है। उस समय इक़बाल लाहौर के सरकारी कालेज में व्याख्याता थे। उन्हें लाला हरदयाल ने एक सम्मेलन की अध्यक्षता करने का निमंत्रण दिया। इक़बाल ने भाषण देने के बजाय यह ग़ज़ल पूरी उमंग से गाकर सुनाई। यह ग़ज़ल हिन्दुस्तान की तारीफ़ में लिखी गई है और अलग-अलग सम्प्रदायों के लोगों के बीच भाई-चारे की भावना बढ़ाने को प्रोत्साहित करती है। १९५० के दशक में सितार-वादक पण्डित रवि शंकर ने इसे सुर-बद्ध किया। जब इंदिरा गांधी ने भारत के प्रथम अंतरिक्षयात्री राकेश शर्मा से पूछा कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है, तो शर्मा ने इस गीत की पहली पंक्ति कही।

मुहम्मद इक़बाल

(5) सर अल्लामा मुहम्मद इक़बाल (नवम्बर ९, १८७७ - २१ अप्रैल, १९३८) अविभाजित भारत के प्रसिद्ध कवि, नेता और दार्शनिक थे। उर्दू और फ़ारसी में इनकी शायरी को आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ शायरी में गिना जाता है। इकबाल के दादा सहज सप्रू हिंदू कश्मीरी पंडित थे जो बाद में सिआलकोट आ गए।१ इनकी प्रमुख अच्छा) शामिल है। फ़ारसी में लिखी इनकी शायरी ईरान और अफ़ग़ानिस्तान में बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ इन्हें इक़बाल-ए-लाहौर कहा जाता है। इन्होंने इस्लाम के धार्मिक और राजनैतिक दर्शन पर काफ़ी लिखा है।

राष्ट्रगान

(6) जन गण मन, भारत का राष्ट्र गान है जो मूलतः बाँग्ला में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखा गया था । राष्ट्र गान के गायन की अवधि लगभग ५२ सेकेण्ड है । कुछ अवसरों पर राष्ट्र गान संक्षिप्त

रूप में भी गाया जाता है, इसमें प्रथम तथा अन्तिम पंक्तियाँ ही बोलते हैं जिसमें लगभग २० सेकेण्ड का समय लगता है। संविधान सभा ने जन-गण-मन को भारत के राष्ट्र-गान के रुप में २४ जनवरी, १९५० को अपनाया था। इसे सर्वप्रथम २७ दिसम्बर, १९११ को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया था। पूरे गान में ५ पद हैं।

रवींद्रनाथ टैगोर

(7) गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म ७ मई सन् १८६१ को कोलकाता में हुआ था। रवींद्रनाथ टैगोर एक कवि, उपन्यासकार, नाटककार, चित्रकार, और दार्शनिक थे। रवींद्रनाथ टैगोर एशिया के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

हम होंगे कामयाब

(8) हम होंगे कामयाब अंग्रेजी गीत वी शेल ओवर कम का भावानुवाद है। हिंदी में इस गीत का भावानुवाद हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि श्री गिरजाकुमार माथुर ने किया था। अंग्रेजी में मूल रूप से लिखी गयी इस गीत के गीतकार हैं- चार्ल्स अल्बर्ट टिंड्ली। सन् १९५५-१९६८ के दौरान अमेरिका में चले अमेरिकी-आफ्रिकी नागरिक अधिकार आंदोलन का यह मुख्य गीत था। अंग्रेजी में यह गीत- वी शेल ओवर कम पंक्ति से आरंभ होता है।

प्यारा गाँव

(9) महात्मा गाँधी ने १९३८ में प्रकाशित हरिजन पत्रिका में गाँवों के बारे में यह विचार व्यक्त किया था।

ऐसा प्यारा देश है मेरा

(10) राकेश तरंगः राकेश तरंग हिंदी के प्रमुख बालसाहित्यकार हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में हुआ था। उन्हें बचपन से ही बाल साहित्य लिखने का शौक था। बच्चों की

मुसकान, किलकारियाँ, वो मेरा बचपन उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इन्होंने कुछ देशभक्ति कविताएँ भी लिखी हैं। इन्हें कई बालसाहित्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

धरती की आँखें

(11) धरती की आँखेः दिन दुनी रात चौगुनी उन्नति करनाः कम समय में अधिक सफलता अर्जित करना।

(12) खजाने का मुँह खोल देनाः असीमित धन खर्च करना।

दिल्ली से पत्र

(17) कुतुबुद्दीन ऐबक मध्य कालीन भारत में एक शासक, दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान एवं गुलाम वंश का स्थापक था। उसने केवल चार वर्ष (१२०६ - १२१०) ही शासन किया। वह एक बहुत ही प्रतिभाशाली सैनिक था जो दास बनकर पहले ग़ोरी साम्राज्य के सुल्तान मुहम्मद ग़ोरी के सैन्य अभियानों का सहायक बना और फिर दिल्ली का सुल्तान।

(18) कुतुब मीनारः अफ़गानिस्तान में स्थित, जाम की मीनार से प्रेरित एवं उससे आगे निकलने की इच्छा से, दिल्ली के प्रथम मुस्लिम शासक कुतुबुद्दीन ऐबक, ने कुतुब मीनार का निर्माण सन ११९३ में आरम्भ करवाया, परन्तु केवल इसका आधार ही बनवा पाया। उसके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने इसमें तीन मंजिलों को बढ़ाया, और सन १३६८ में फीरोजशाह तुगलक ने पाँचवीं और अन्तिम मंजिल बनवाई। कुतुब मीनार भारत में दक्षिण दिल्ली शहर के महरौली भाग में स्थित, ईंट से बनी विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। इसकी ऊँचाई ७२.५ मीटर (२३७.८६ फीट) और व्यास १४.३ मीटर है, जो ऊपर जाकर शिखर पर २.७५ मीटर (९.०२ फीट) हो जाता है। इसमें ३७९ सीढियाँ हैं।१ मीनार के चारों ओर बने आहाते में भारतीय कला के कई उत्कृष्ट नमूने हैं, जिनमें से अनेक इसके निर्माण काल सन ११९३ या पूर्व के हैं। यह परिसर युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में स्वीकृत किया गया है।

(19) दीवान-ए-खासः दीवान-ए-खास, जो राजा का मुक्तहस्त से सुसज्जित निजी सभा कक्ष था। यह सचिवीय एवं मंत्रीमण्डल तथा सभासदों से बैठकों के काम आता थाइस म्ण्डप में पीट्रा ड्यूरा से पुष्पीय आकृति से मण्डित स्तंभ बने हैं। इनमें सुवर्ण पर्त भी मढी है, तथा बहुमूल्य रत्न जडे.हैं। इसकी मूल छत को रोगन की गई काष्ठ निर्मित छत से बदल दिया गया है। इसमें अब रजत पर सुवर्ण मण्डन किया गया है।

(20) शाहजहाः शाहजहाँ का जन्म जोधपुर के शासक राजा उदयसिंह की पुत्री 'जगत गोसाई' (जोधाबाई) के गर्भ से ५ जनवरी, १५९२ ई. को लाहौर में हुआ था। उसका बचपन का नाम ख़ुर्रम था। ख़ुर्रम जहाँगीर का छोटा पुत्र था, जो छलबल से अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ था। वह बड़ा कुशाग्र बुद्धि, साहसी और शौक़ीन बादशाह था। वह बड़ा कला प्रेमी, विशेषकर स्थापत्य कला का प्रेमी था। उसका विवाह २० वर्ष की आयु में नूरजहाँ के भाई आसफ़ ख़ाँ की पुत्री 'आरज़ुमन्द बानो' से सन् १६११ में हुआ था। वही बाद में 'मुमताज़ महल' के नाम से उसकी प्रियतमा बेगम हुई। आगे चलकर शाहजहाँ ने मुमताज महल की याद में ताजमहल बनवाया था।

मिर्जा राजा जयसिंहः मिर्जा राजा जयसिंह वीर सेनानायक और कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ ही साथ साहित्य और कला का भी बड़ा प्रेमी था। उसी के आश्रय में कविवर बिहारी लाल ने अपनी सुप्रसिद्ध बिहारी सतसई की रचना सन् १६६२ में की थी। इन्होंने ही दिल्ली स्थित धूपघड़ी का निर्माण करवाया था।

(21) हजरत निजामुद्दीनः हजरत निज़ामुद्दीन चिश्ती घराने के चौथे संत थे। इस सूफी संत ने वैराग्य और सहनशीलता की मिसाल पेश की, कहा जाता है कि १३०३ में इनके कहने पर मुगल सेना ने हमला रोक दिया था, इस प्रकार ये सभी धर्मों के लोगों में लोकप्रिय बन गए। हजरत साहब ने ९२ वर्ष की आयु में प्राण त्यागे और उसी वर्ष उनके मकबरे का निर्माण आरंभ हो गया, किंतु इसका नवीनीकरण १५६२ तक होता रहा। दक्षिणी दिल्ली में स्थित हजरत निज़ामुद्दीन औलिया का मकबरा सूफ़ी काल की एक पवित्र दरगाह है।

(22) राष्ट्रपति भवनः राष्ट्रपति भवन भारत सरकार के राष्ट्रपति का सरकारी आवास है। सन १९५० तक इसे वाइसरॉय हाउस बोला जाता था। तब यह तत्कालीन भारत के गवर्नर जनरल का आवास हुआ करता था। यह नई दिल्ली के ह्रदय क्षेत्र में स्थित है। इस महल में ३४० कक्ष हैं और यह विश्व में किसी भी राष्ट्राध्यक्ष के आवास से बड़ा है। वर्तमान भारत के राष्ट्रपति, उन कक्षों में नहीं रहते, जहां वाइसरॉय रहते थे, बल्कि वे अतिथि-कक्ष में रहते हैं। भारत के प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल श्री सी राजगोपालाचार्य को यहां का मुख्य शयन कक्ष, अपनी विनीत नम्र रुचियों के कारण, अति आडंबर पूर्ण लगा जिसके कारण उन्होंने अतिथि कक्ष में रहना उचित समझा। उनके उपरांत सभी राष्ट्रपतियों ने यही परंपरा निभाई। यहां के मुगल उद्यान की गुलाब वाटिका में अनेक प्रकार के गुलाब लगे हैं और यह कि जन साधारण हेतु, प्रति वर्ष फरवरी माह के दौरान खुलती है। इस भवन की खास बात है कि इस भवन के निर्माण में लोहे का नगण्य प्रयोग हुआ है।

(23) इंडिया गेटः इण्डिया गेट (भारत द्वार) नई दिल्ली के राजपथ पर स्थित ४३ मीटर ऊँचा द्वार है व भारत का राष्ट्रीय स्मारक है। यह सर एडविन लुटियन द्वारा डिजाइन किया गया था। यह स्मारक पेरिस के आर्क डे ट्रॉयम्फ़ से प्रेरित है। यह १९३१ में बनाया गया था। मूल रूप से अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के रूप में जाना जाने वाला इस स्मारक क निर्माण उन ९०,००० ब्रिटिश भारतीय सेना के सैनिकों की स्मृति में हुआ था जिन्हें प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्धों में शहीद हुए। यह स्मारक लाल और पीला बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट से बना है।

शुरु में इंडिया गेट के सामने अब खाली चंदवा के तहत जार्ज पंचम के एक मूर्ति थी, लेकिन बाद में अन्य ब्रिटिश राज – युग मूर्तियों के साथ इसे कोरोनेशन पार्क में हटा दिया गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद, इंडिया गेट भारतीय सेना के अज्ञात सैनिक के मकबरे की साइट बन गया है तथा अब इसे अमर जवान ज्योति के रूप में जाना जाता है। सैनिकों की स्मृति में यहाँ एक राइफ़ल के ऊपर सैनिक की टोपी सजाई गई है जिसके चार कोनों पर सदैव अमर जवान ज्योति जलती रहती है। इसकी दीवारों पर हजारों शहीद सैनिकों के नाम खुदे हैं।

(24) अक्षरधाम मंदिरःनई दिल्ली में बना स्वामिनारायण अक्षरधाम मन्दिर एक अनोखा सांस्कृतिक तीर्थ है। इसे ज्योतिर्धर भगवान स्वामिनारायण की पुय स्मृति में बनवाया गया है। यह परिसर १०० एकड़ भूमि में फैला हुआ है। दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मन्दिर परिसर होने के नाते २६ दिसंबर २००७ को यह गिनीज बुक आफ व्र्ल्ड रिकार्ड्स में शामिल किया गया।

(25) लोटस टेंपलः कमल मंदिर, भारत की राजधानी दिल्ली के नेहरू प्लेस के पास स्थित एक बहाई उपासना स्थल है। यह अपने आप में एक अनूठा मंदिर है। यहाँ पर न कोई मूर्ति है और न ही किसी प्रकार का कोई धार्मिक कर्म–कांड किया जाता है, इसके विपरीत यहाँ पर विभिन्न धर्मों से संबंधित विभिन्न पवित्र लेख पढ़े जाते हैं। भारत के लोगों के लिए कमल का फूल पवित्रता तथा शांति का प्रतीक होने के साथ ईश्वर के अवतार का संकेत चिह्न भी है। यह फूल कीचड़ में खिलने के बावजूद पवित्र तथा स्वच्छ रहना सिखाता है, साथ ही यह इस बात का भी द्योतक है कि कैसे धार्मिक प्रतिस्पर्धा तथा भौतिक पूर्वाग्रहों के अंदर रह कर भी, कोई व्यक्ति इन सबसे अनासक्त हो सकता है। कमल मंदिर में प्रतिदिन देश और विदेश के लगभग आठ से दस हजार पर्यटक आते हैं। यहाँ का शांत वातावरण प्रार्थना और ध्यान के लिए सहायक है।

मंदिर का उद्घाटन २४ दिसंबर १९८६ को हुआ लेकिन आम जनता के लिए यह मंदिर १ जनवरी १९८७ को खोला गया। इसकी कमल सदृश आकृति के कारण इसे कमल मंदिर या लोटस टेंपल के नाम से ही पुकारा जाता है। बहाई उपासना मंदिर उन मंदिरों में से एक है जो गौरव, शांति एवं उत्कृष्ठ वातावरण को ज्योतिर्मय करता है, जो किसी भी श्रद्धालु को आध्यात्मिक रूप से प्रोत्साहित करने के लिए अति आवश्यक है। उपासना मंदिर मीडिया प्रचार प्रसार और श्रव्य माध्यमों में आगंतुकों को सूचनाएं प्रदान करता है। मंदिर में पर्यटकों को आर्किषत करने के लिए विस्तृत घास के मैदान, सफेद विशाल भवन, ऊंचे गुंबद वाला प्रार्थनागार और प्रतिमाओं के बिना मंदिर से आकर्षित होकर हजारों लोग यहां मात्र दर्शक की भांति नहीं बल्कि प्रार्थना एवं ध्यान करने तथा निर्धारित समय पर होने वाली प्रार्थना सभा में भाग लेने भी आते हैं। यह विशेष प्रार्थना हर घंटे पर पांच मिनट के लिए आयोजित की जाती है। गर्मियों में सूचना केंद्र सुबह ९:३० बजे खुलता है, जो शाम को ६:३० पर बंद होता है। जबकि सर्दियों में इसका समय सुबह दस से पांच होता है। इतना ही नहीं लोग उपासना मंदिर के पुस्तकालय में बैठ कर धर्म की किताबें भी पढ़ते हैं और उनपर शोध भी करने आते हैं। मंदिर का स्थापत्य वास्तुकार फ़रीबर्ज़ सहबा ने तैयार किया है।

(27) अतिथि देवो भवः भारत सरकार के केंद्रीय पर्यटन विभाग की ओर से विदेशियों को भारत

पर्यटन के प्रति आकर्षित करने की योजना का नाम ही अतिथि देवो भवः है।

त्यौहारों का देश

(28) राखीःपौराणिक प्रसंगः

स्कन्ध पुराण, पद्मपुराण और श्रीमद्भागवत में वामनावतार नामक कथा में रक्षाबन्धन का प्रसंग मिलता है। कथा कुछ इस प्रकार है- दानवेन्द्र राजा बलि ने जब १०० यज्ञ पूर्ण कर स्वर्ग का राज्य छीनने का प्रयत्न किया तो इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। तब भगवान ने वामन अबतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर राजा बलि से भिक्षा माँगने पहुँचे। गुरु के मना करने पर भी बलि ने तीन पग भूमि दान कर दी। भगवान ने तीन पग में सारा आकाश पाताल और धरती नापकर राजा बलि को रसातल में भेज दिया। इस प्रकार भगवान विष्णु द्वारा बलि राजा के अभिमान को चकनाचूर कर देने के कारण यह त्योहार बलेव नाम से भी प्रसिद्ध है।२१ कहते हैं एक बार बाली रसातल में चला गया तब बलि ने अपनी भक्ति के बल से भगवान को रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया।ङ भगवान के घर न लौटने से परेशान लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय बताया। उस उपाय का पालन करते हुए लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बांधकर अपना भाई बनाया और अपने पति भगवान बलि को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी। विष्णु पुराण के एक प्रसंग में कहा गया है कि श्रावण की पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने हयग्रीव के रूप में अवतार लेकर वेदों को ब्रह्मा के लिये फिर से प्राप्त किया था। हयग्रीव को विद्या और बुद्धि का प्रतीक माना जाता है।

ऐतिहासिक प्रसंगः राजपूत जब लड़ाई पर जाते थे तब महिलाएँ उनको माथे पर कुमकुम तिलक लगाने के साथ साथ हाथ में रेशमी धागा भी बाँधती थी। इस विश्वास के साथ कि यह धागा उन्हे विजयश्री के साथ वापस ले आयेगा। राखी के साथ एक और प्रसिद्ध कहानी जुड़ी हुई है। कहते हैं, मेवाड़ की रानी कर्मावती को बहादुरशाह द्वारा मेवाड़ पर हमला करने की पूर्व सूचना मिली। रानी लड़ने में असमर्थ थी अत: उसने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेज कर रक्षा की याचना की। हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज रखी और मेवाड़ पहुँच कर बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मावती व उसके राज्य की रक्षा की।२२ एक अन्य प्रसंगानुसार सिकन्दर की पत्नी ने अपने पति के हिन्दू शत्रु पुरूवास को राखी बाँधकर अपना मुँहबोला भाई बनाया और युद्ध के समय सिकन्दर को न मारने का वचन लिया। पुरूवास ने युद्ध के दौरान हाथ में बँधी राखी और अपनी बहन को दिये हुए वचन का सम्मान करते हुए सिकन्दर को जीवन-दान दिया।

(29) नवरोज़ःनवरोज का अर्थ होता है- नया दिन। यह ईरानी लोगों के पर्शियन कैलेंडर का नववर्ष है। नवरोज त्यौहार पारस के राजा जमशेद की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने पारसी कैलेंडर की

स्थापना की थी। इसे पारसी लोग बड़े आदर और सत्कार के साथ मनाते हैं। मुख्यतः यह त्यौहार ईरान में मनाया जाता है, किंतु इसकी लोकप्रियता तथा पारसी लोगों की बहुलता व विदेशों में इनकी व्यापकता के कारण यह अब लगभग दुनियाभर में मनाया जाता है।

(30) बुद्ध पूर्णिमाः वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं। यह गौतम बुद्ध की जयंती है और उनका निर्वाण दिवस भी। इसी दिन भगवान बुद्ध को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। आज बौद्ध धर्म को मानने वाले विश्व में ५0 करोड़ से अधिक लोग इस दिन को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए बुद्ध विष्णु के नौवें अवतार हैं। अतः हिन्दुओं के लिए भी यह दिन पवित्र माना जाता है। इसी कारण बिहार स्थित बोधगया नामक स्थान हिन्दू व बौद्ध धर्मावलंबियों के पवित्र तीर्थ स्थान हैं। गृहत्याग के पश्चात सिद्धार्थ सात वर्षों तक वन में भटकते रहे। यहाँ उन्होंने कठोर तप किया और अंततः वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें बुद्धत्व ज्ञान की प्राप्ति हुई। तभी से यह दिन बुद्ध पूर्णिमा के रूप में जाना जाता है।

(30) ओणमः ओणम केरल का एक प्रमुख त्योहार है। यह सितम्बर में मनाया जाता है। इस दिन सुन्दर फूलों से घरों को सजाया जाता है। महिलायें और किशोरियाँ इस दिन नाचने गाने में मस्त रहती हैं, और पुरूष तैरने और नौका-दौड़ में सम्मिलित होते हैं। कहा जाता है कि इस दिन इनके राजा महाबली इन्हें आशीर्वाद देने पाताल लोक से आते हैं। यह प्राचीन राजा महाबली के याद मे मनाया जाता है। यह पर्व दस दिनों तक चलाता है, इन दस दिनों मे घरों में फूलों की रंगोली बनाई जाती है। इस पर्व में वामन कथा का पौराणिक संदर्भ छिपा हुआ है। वामन कथा इस प्रकार हैः राक्षस नरेश महाबली, विष्णु भगवान के भक्त प्रह्लाद का पौत्र था। वह उदार शासक और महापराक्रमी था। राक्षसी प्रवृत्ति के कारण महाबलि ने देवदाओं के राज्य को बलपूर्वक छीन लिया था। दुराग्रही व गर्वदर्प से भरे राजा बलि ने देवताओं को कष्ट में डाल दिया। तब परेशान देवताओं ने भगवान विष्णु से सहायता की गुहार लगाई। प्रार्थना सुन भगवान श्री विष्णु ने वामन, अर्थात बौने के रूप में महर्षि कश्यप व उनकी पत्नी अदिति के घर जन्म लिया। एक दिन वामन महाबलि की सभी में पहुँचे। इस ओजस्वी, ब्रह्मचारी नवयुवक को देखकर एकाएक महाबलि उनकी ओर आकर्षित हो गया। महाबलि ने श्रद्धा से इस नवयुवक का स्वागत किया और जो चाहे माँगने को कहा।

श्री वामन ने शुद्धिकरण हेतु अपने लघु पैरों के तीन क़दम जितनी भूमि देने का आग्रह किया। उदार महाबलि ने यह स्वीकार कर लिया। किन्तु जैसे ही महाबलि ने यह भेंट श्रीवामन को दी, वामन का आकार एकाएक बढ़ता ही चला गया। वामन ने तब एक क़दम से पूरी पृथ्वी को ही नाप डाला तथा दूसरे क़दम से आकाश को। अब तीसरा क़दम तो रखने को स्थान बचा ही नहीं था। जब वामन ने बलि से तीसरा क़दम रखने के लिए स्थान माँगा, तब उसने नम्रता से अपना मस्तक ही प्रस्तुत कर दिया। वामन ने अपना तीसरा क़दम मस्तक पर रख महाबलि को पाताल लोक में पहुँचा दिया। बलि ने यह बड़ी उदारता और नम्रता से स्वीकार किया। चूँकि बलि की प्रजा उससे बहुत ही स्नेह रखती थी, इसीलिए श्रीविष्णु ने बलि को वरदान दिया कि वह अपनी प्रजा को वर्ष में एक बार अवश्य मिल सकेगा। अतः जिस दिन महाबलि केरल आते हैं, वही दिन ओणम के रूप में मनाया जाता है। इस त्योहार को केरल के सभी धर्मों के लोग मनाते हैं।

(31) मोहर्रमः इस्लामिक कैलेंडर का प्रथम मास।

(32) बैसाखीः बैसाखी नाम वैशाख से बना है। पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियाँ मनाते हैं। इसीलिए बैसाखी पंजाब और आसपास के प्रदेशों का सबसे बड़ा त्योहार है। यह खरईफ की फसल के पकने की खुशी का प्रतीक है। इसी दिन, १३ अप्रैल १६९९ को दसवें गुरु गोविंदसिंहजी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। सिख इस त्योहार को सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं।

चावल के दाने

श्रीकृष्णदेवराय विजयनगर साम्राज्य के राजा थे। इन्होंने हंपी को राजधानी बनाकर १५०९-१५२९ के मध्य शासन किया था। वे तुलुव वंश के तीसरे सम्राट थे। उनकी गिनती भारत के महान राजाओं में से होती है। उन्हें आंध्र भोज, मूडु रायर गंडा, कन्नड राज्य राज रमणा की उपाधि से भी जाना जाता है। उन्होंने तेलुगु भाषा के विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया। स्वयं तेलुगु के विद्वान थे। अमुक्तमाल्यदा उनके इसी विद्वत कार्य का परिचायक है। उन्हें सांस्कृतिक तथा ललित कलाओं में बड़ी रुचि थी, इसकी समृद्धि के लिए भी उन्होंने अथक प्रयास किये। इनके दरबार के अष्टदिग्गज विश्व प्रसिद्ध हैं। वे अष्टदिग्गज कवि हैं- अल्लासानि पेद्दन्ना, नंदी तिमन्ना, मडयगिरि मल्लन्ना, दुर्जटी, अय्यल राजु रामभद्रुडु, पिंगली सुरन्ना, रामराजु भुषणडु तथा तेनाली रामकृष्ण। उत्तर भारत में जिस तरह अकबर-बीरबल की कहानियाँ प्रसिद्ध हैं, उसी तरह दक्षिण भारत में श्रीकृष्णदेवराय-तेनाली रामकृष्ण की कहानियाँ अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

हार के आगे जीत है

पोलियो के बारे में महिला एवं शिशु कल्याण मंत्रालय, भारत की ओर से शंका-समाधान

प्रश्नः पोलियो क्या है?

उतर पोलियो एक संक्रामक रोग है जो पोलियो विषाणु से मुख्यतः छोटे बच्चों में होता है। यह बीमारी बच्चें के किसी भी अंग को जिन्दगी भर के लिये कमजोर कर देती है।

नवीं कक्षा द्‌वितीय भाषा

पाठ एक - जिस देश में गंगा बहती है...

(1) गंगा नदी

स्पष्टीकरण - गंगा विश्व की प्रसिद्‌ध नदियों में से एक है। भारत में इसका जन्म उत्तराखंड के गंगोत्री नामक स्थान से होता है। वहाँ से लगभग ढाई हज़ार कि.मी. बहते हुए गंगा नदी भारत के उत्तरी मैदानों को हरा-भरा बनाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भगीरथ ने अपने अथक प्रयत्नों से गंगा माता को धरती पर उतारा था। यही कारण है इस नदी के नाम के साथ ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता व परंपरा का वैभवशाली गौरव जुड़ जाता है। इस नदी के किनारे हरिद्‌वार, ऋषिकेश, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना तथा कोलकाता जैसे प्रसिद्‌ध नगर बसे हुए हैं। विश्व के लोग गंगा को भारत का प्रतीक भी मानते हैं।

(2) कुछ लोग जो ज्यादा जानते हैं,

इंसान को कम पहचानते हैं।

ये पूरब है पूरब वाले,

हर जान की कीमत जानते हैं।।

स्पष्टीकरण - कुछ लोग ज्ञान-विज्ञान की अधिकाधिक जानकारी रखते हुए इंसान को भूल जाते हैं। लेकिन भारतीय ज्ञान-विज्ञान में आसमान को छूने पर भी इंसानियत की राह नहीं छोड़ते। विश्व के मानचित्र में भारत पूरब दिशा में होता है। इसलिए यहाँ भारतीयों को पूरबवासी कहा गया है। हम अहिंसा को अपना धर्म मानते हैं। इसलिए हम हर जान की कीमत जानते हैं।

(3) जो जिससे मिला सीखा हमने

गैरों को भी अपनाया हमने।

मतलब के लिए अंधे होकर

रोटी को पूजा नहीं हमने।।

स्पष्टीकरण - हमने सारी दुनिया की विविध संस्कृतियों के सद्‌गुण अपनाये। अंग्रेजों के शासन को भी हमने अपनाया। हम अपने स्वार्थ के लिए कोई गलत क़दम नहीं उठाते। हम अपनी मेहनत से जीते हैं। यही हमारे लिए गर्व की बात है।

(4) अब हम तो क्या सारी दुनिया,

सारी दुनिया से कहती है।

हम उस देश के वासी हैं,

जिस देश में गंगा बहती है।।

स्पष्टीकरण - भारतीयों के इन सद्‌गुणों को सारी दुनिया जानती है। आज सारी दुनिया कहती है कि वास्तव में भारत महान देश है। यहाँ की भावनाएँ, यहाँ के गुण, यहाँ की प्रकृति, यहाँ का विज्ञान आदि आज सारी दुनिया में चार चाँद लगा रहे हैं। और हम हर क्षेत्र में पदार्पण कर देश का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ऊँचा कर रहे हैं।

पाठ दोः गाने वाली चिड़िया

(5) गानेवाली चिड़ियाः

स्पष्टीकरण - भारत में कोयल को गानेवाली चिड़िया कहते हैं। वहीं मध्य एशिया में बुलबुल को गानेवाली चिड़िया माना जाता है। जबकि पाश्चात्य देशों में हमिंग बर्ड को गानेवाली चिड़िया का प्रतीक माना जाता है। ऐसी गानेवाली चिड़ियों की व्याख्या दुनियाभर की कहानियों में देखने को मिलती है।

(6) महाराज मैं आपके पास रहूँगी। मैंने आपकी आँखों में खुशी के आँसू जो देखे हैं।

स्पष्टीकरण - इस बात से सहानुभूति की भावना प्रकट होती है।

(7) उन पेड़ों-पौधों को खोने की कगार पर हैं, जो लुप्त होते जा रहे हैं।

स्पष्टीकरण - सफ़ेद मसूली, गिलोय, कलिहारी, भूमि अमलकी, ब्राह्मी, चंदन, चिरायता, गुगुल, पिप्पली, पत्थर चूर, सर्पगंधा आदि औषधि पेड़-पौधे लुप्त होने की कगार पर हैं।

(8) प्रशांत महासागर का जल स्तर

स्पष्टीकरण - प्रशांत महासागर दक्षिणी ध्रुव से उत्तरी ध्रुव तक, पश्चिम में एशिया व आस्ट्रेलिया से पूर्व में दक्षिण से उत्तरी अमेरिका तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल साढ़े सोलह करोड़ वर्ग कि.मी. है। यह पृथ्वी का एक-तिहाई हिस्सा है। सन् १९६० से ही प्रशांत महासागर सुनामी जैसे जल तूफान के प्रति खतरे की घंटी बजा रहा है। इस समुद्र में प्रेशर सेंसर जैसे वैज्ञानिक उपकरणों की स्थापना कर इसके अस्तित्व को खतरे में डाल रहे हैं। दुनिया भर के देश में कूड़ा-कचरा डाल रहे हैं। इसमें प्लास्टिक की मात्रा अधिक है। इस कारण भविष्य में इसे 'प्लास्टिक महासागर' कहने की संभावना बढ़ गयी है। प्लास्टिक के कारण भी प्रशांत महासागर का स्तर बढ़ता जा रहा है।

(9) संयुक्त राष्ट्र संघ

स्पष्टीकरण - द्‌वितीय विश्व युद्‌ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति की स्थापना अनिवार्य बन गयी थी। इसके लिए २४ अक्तूबर, १९४५ में दुनिया भर कई देशों के आपसी सहयोग से संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। इसके कई अंग हैं। इनमें से यूनिसेफ यानी संयुक्त राष्ट्र बाल कोष एक है। इसकी स्थापना ११ दिसंबर, १९४६ को हुई थी। इसका मुख्यालय न्यूयार्क में है। सन् १९६५ में बच्चों के हितों में किये गये कार्यों के लिए शांति का नोबल पुरस्कार मिला। सन् १९८९ में भारत सरकार द्‌वारा इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इसके प्रमुख कार्य हैं- बच्चों को बुनियादी शिक्षा उपलब्ध कराना, लिंग के आधार पर समानता दिलाना, बच्चों का हिंसा से बचाव करना, बाल शोषण रोकना, एचआईवी बच्चों के हित में विशेष रूप से कार्य करना आदि।

(10) भूमंडलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग)

स्पष्टीकरण - भूमंडलीय ऊष्मीकरण का अर्थ पृथ्वी की निकटस्थ वायु और महासागर के औसत तापमान में बीसवीं सदी से हो रही वृद्‌धि और उसकी अनुमानित निरंतरता है।

उपवाचक पाठ-एक - तारे ज़मीं पर

स्पष्टीकरणः आमिर खान निर्देशित 'तारे ज़मीं पर' फिल्म का उद्घाटन २१ दिसंबर, २००७ को दुनिया भर के देशों में हुआ। इस फिल्म के लेखक और रचनात्मक निर्देशक अमोले गुप्ते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फिल्म का वितरण अधिकार वाल्ट डिज्नी कंपनी को प्राप्त हुआ था। भारतीय सिनेमा के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ था कि कोई विदेशी कंपनी बाल कथा फिल्म का अधिकार प्राप्त करने के लिए होड़ ले रहा था। वर्ष २००८ के लिए सर्वश्रेष्ठ फिल्म के रूप में तारे ज़मीं पर को गौरवान्वित किया गया। इसी फिल्म में श्रेष्ठ निर्देशन, अभिनेता तथा श्रेष्ठ समीक्षात्मक फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

पाठ चार - प्रकृति की सीख

स्पष्टीकरण

(11) *समझ रहे हो क्या कहती है,*

उठ-उठ गिर कर तरल तरंग।

भर लो, भर लो अपने मन में,

मीठे-मीठे मृदुल उमंग।।

स्पष्टीकरण - नदी के तरंगों में कल-कल करती मीठी ध्वनि होती है। ऐसी ही ध्वनि वाली मीठी उमंगें हमें अपने मन में भर लेना चाहिए।

(12) *सोहनलाल द्विवेदी*

स्पष्टीकरण - सोहनलाल द्विवेदी जी हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि हैं। इन्होंने गांधीवाद के मार्गदर्शन पर चलकर शांति, अहिंसा, न्याय और धर्म से संबंधी कई बालोपयोगी रचनाएँ लिखी हैं। शिशु भारती, बच्चों के बापू, बिगुल, बाँसुरी और झरना, दूध बतासा, भैरवी, पूजागीत, सेवाग्राम, प्रभाती, युगाधार, कुणाल, चेतना, बाँसुरी तथा बच्चों के लिए दूध बतासा आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। भारत सरकार ने साहित्य में इनकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए सन् १९६९ में इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।

पाठ पाँच - फुटबॉल

(13) फुटबॉल

स्पष्टीकरण - फुटबॉल खेल का दूसरा नाम सॉकर भी है। पैरों से खेले जाने वाला यह खेल दुनिया के लोकप्रिय खेलों में से एक है। यह एक सामूहिक खेल है। इसे ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ियों के दो दलों के बीच खेला जाता है। सामान्यतः यह खेल आयताकार वाले मैदान पर खेलते हैं। इसके दो छोर होते हैं। दोनों छोरों का प्रयास करते हैं। यही एकमात्र ऐसा खिलाड़ी होता है, जो गेंद रोकने के लिए हाथों का प्रयोग कर सकता है। अन्य खिलाड़ी हाथों को छोड़कर शेष शरीर का इस्तेमाल कर सकते हैं। खेल की समाप्ति पर जो दल सबसे अधिक गोल दागता है, उसे विजयी घोषित किया जाता है। सामान्यतः इस खेल का कुल समय नब्बे मिनट होता है। पहले पैंतालीस मिनट के बाद विराम दिया जाता है, जिसे हाफ कहते हैं। पंद्रह मिनट के विराम के बाद शेष पैंतालीस मिनट का खेल जारी रखते हैं। फुटबॉल खेलने के लिए फेडरेशन इंटरनेशनल डी फुटबॉल असोसिएशन (फीफा) के नियमों का पालन करना पड़ता है। फीफा असोसिएशन द्‌वारा हर चार साल को एक विश्व कप आयोजित किया जाता है, जिसे फीफा विश्व कप कहते हैं। इसमें बत्तीस देश भाग लेते हैं। वर्ष २०१४ में फीफा विश्वकप का आयोजन ब्राजील में होने वाला है। इसके अतिरिक्त यूरोपियन कप, कोपा अमेरिकन कप, राष्ट्रीय अफ्रीकन कप, एशिया कप, यूएफा खेल भी राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किये जाते हैं। फुटबॉल खेल के प्रसिद्‌ध खिलाड़ियों की सूची में पेले, माराडोना, रोनाल्डो, डेविड बेकहम, क्रिस्टियानो, मेस्सी, भाइचुंग भूटिया आदि के नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

पाठ सात - मेरा जीवन

(14) पाठ के बारे में

स्पष्टीकरण - प्रस्तुत रचना कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की कालजयी रचना है। यह रचना उनकी प्रसिद्‌ध कृति 'मुकुल' से ली गयी है।

(15) जग है असार सुनती हूँ मुझको सुख-सार दिखाता।

मेरी आँखों के आगे सुख का सागर लहराता।

उत्साह उमंग निरंतर रहते मेरे जीवन में।

उल्लास विजय का हँसता मेरे मतवाले मन से।

स्पष्टीकरणः दुनियावालों के अनुसार यह संसार दुखों से भरा है। किंतु कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान को केवल सुख ही दिखायी देता है। उनके आँखों के आगे सदैव सुख का सागर ही लहराता है। उनके जीवन में उत्साह व उमंग सदैव रहते हैं। यही कारण है कि उनके उन्मत्त मन में हमेशा आनंद ही आनंद छाया रहता है।

(16) *आशा आलोकित करती मेरे जीवन को प्रतिक्षण।*

है स्वर्णसूत्र से वलयित मेरी असफलता के धन।

सुख भरे सुनहरे बादल रहते हैं मुझको घेरे।

विश्वास, प्रेम, साहस जीवन के साथी मेरे।

स्पष्टीकरण - कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान दुखों को भी हँसकर गले लगाती हैं। उनके लिए दुख किसी स्वर्णसूत्र से कम नहीं है। दुखों का सामना करने की शक्ति उन्हें आशाओं से मिलती हैं। विश्वास, प्रेम, साहस उनके जीवन के साथी हैं। यही कारण हैं कि सदा उन्हें सुख के बादल घेरे रहते हैं।

पाठ आठ - यक्ष प्रश्न

(17) *यक्ष*

स्पष्टीकरण - यक्ष कोई और नहीं बल्कि स्वयं धर्मदेव थे। वे ही पहले हिरण और बाद में यक्ष का रूप धारण करते हैं।

(18) *पंच पांडवों का विवरण*

स्पष्टीकरण - पंच पांडवों का विवरण इस प्रकार है-

युधिष्ठिरः यम देव के आशीर्वाद से उत्पन्न माता कुंती और पिता पांडु की पहली संतान।

भीम : वायु देव के आशीर्वाद से उत्पन्न माता कुंती और पिता पांडु की दूसरी संतान।

अर्जुन : यम देव के आशीर्वाद से उत्पन्न माता कुंती और पिता पांडु तीसरी संतान।

नकुल और सहदेव : ये दोनों जुड़वाँ भाई हैं। अश्विनी देव के आशीर्वाद से उत्पन्न माता माद्री और पिता पांडु की चौथी और पाँचवीं संतान।

पाठ नौ - रमज़ान

(19) तौहीद

स्पष्टीकरण - अल्लाह के प्रति विश्वास।

(20) नमाज़

स्पष्टीकरण - मुसलमान बंधुओं द्‌वारा अल्लाह से की जाने वाली प्रार्थना।

(21) रोज़ा

स्पष्टीकरण - इस्लाम धर्म के नियमानुसार रखे जाने वाला उपवास।

(17) ज़कात

स्पष्टीकरण - इस्लाम धर्म के नियमानुसार अपनी संपत्ति में से कुछ प्रतिशत गरीबों में बाँटने वाला व्यय।

(22) पाँच फ़र्ज़ नमाज़

स्पष्टीकरण - फज़र (सूर्योदय के पूर्व की जाने वाली नमाज़), ज़ोहर (दोपहर में की जाने वाली नमाज़), असर (शाम में की जाने वाली नमाज़), मगरीब (सूर्यास्त के समय की जाने वाली नमाज़), इशां (रात में की जाने वाली नमाज़)

(23) फ़ितरा

स्पष्टीकरण - इस्लाम धर्म के नियमानुसार रमज़ान महीने में गरीबों में बाँटे जाने वाला व्यय।

(24) एतेकाफ़

स्पष्टीकरण - रमज़ान के महीने में मसजिद में ही रहकर अल्लाह की इबादत में बिताना।

(25) हमें मानवता के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देता है। उपवासों का यह पावन पर्व हमें सद्‌भावना के सूत्र में बांधकर मानव कल्याण का संदेश देता है।

स्पष्टीकरण - समाज में शांति, परोपकार, सहानुभूति, सहयोगिता आदि भावनाओं से सजगता लाने वाला यह पर्व सबके अपने-अपने व्यापारों में बढ़ोतरी लाकर धार्मिक सद्‌भावना में बाँधकर मानवता के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

उपवाचक पाठ - बुद्धिमान बालक

बालक चंद्रगुप्त

स्पष्टीकरण - बालक चंद्रगुप्त को सम्राट चंद्रगुप्त बनाने का श्रेय कुटिल अर्थशास्त्र पितामह चाणक्य को जाता है। चंद्रगुप्त मौर्य ने ही मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। इनकी गिनती श्रेष्ठ सम्राटों में की जाती है। इनका जन्म ईसा पूर्व ३४० में हुआ था। इन्होंने ईसा पूर्व ३२४ से ईसा पूर्व ३०० तक शासन किया था।

पाठ ग्यारह - सुनीता विलियम्स

(26) अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र

स्पष्टीकरण - अमेरिका की नासा संस्था द्वारा स्थापित अंतरिक्ष केंद्र ही अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र कहलाता है।

(27) मेरिलैंड स्थित टेस्ट पायलेट स्कूल

स्पष्टीकरण - अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन के मेरिलैंड नामक स्थान में टेस्ट पायलेट स्कूल है। यहाँ वायुयान चालक यानी पायलट का शिक्षण दिया जाता है। यह एक प्रसिद्ध पायलट प्रशिक्षण केंद्र है।

(28) जॉनसन अंतरिक्ष केंद्र

स्पष्टीकरण - अमेरिका की नासा संस्था द्वारा स्थापित अंतरिक्ष केंद्र ही जॉनसन अंतरिक्ष केंद्र कहलाता है।

(29) बॉस्टन

स्पष्टीकरण - यह अमेरिका का एक प्रसिद्ध शहर है। यहीं पर बॉस्टन विश्वविद्यालय स्थित है।

(30) हार्वर्ड

स्पष्टीकरण - यह अमेरिका का एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है। विश्व के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में गिनती की जाती है।

(31) कैंब्रिज

स्पष्टीकरण - यह दुनिया का विश्व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है। यह अंग्रेजी भाषी देशों में दूसरा सबसे पुराना और और यूरोप में चौथा सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। यह इंग्लैंड में स्थित है। इसकी स्थापना सन् १२०९ में हुई थी। वर्तमान में इसके कुलपति राजकुमार फिलीप, ड्युक ऑफ एडिनबर्ग हैं, जबकि उपकुलपति एलिसन रिचर्ड हैं। यहाँ ८६१४ कर्मचारी हैं और लगभग २० हजार छात्र हैं। यहाँ १२० देशों के छात्र शोधकार्य कर रहे हैं।

उपवाचक पाठ - अपना स्थान स्वयं बनायें

(32) लेखक - कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

स्पष्टीकरण - श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर का जन्म सन् १९०५ में हुआ और मृत्यु सन् १९९५ में हुई। 'विकास', 'ज्ञानोदय' और 'नया जीवन' का संपादन किया। कवि, निबंधकार, रिपोर्ताज लेखक, लघुकथा लेखक, संस्मरण लेखक, पत्रकार, जीवनी लेखक के रूप में ढेरों पुस्तकें लिखीं। राष्ट्रीय प्रश्नों पर, सामाजिक स्थितियों पर लेख टिप्पणियाँ लिखीं। सन् १९९० में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।

पाठ बारह - जागो ग्राहक जागो

(33) उपभोक्ता के अधिकार

स्पष्टीकरण - उपभोक्ता के कई अधिकार हैं। उनमें प्रमुख हैं-

- उपभोक्ता सुरक्षा का अधिकार
- उपभोक्ता चुनाव करने का अधिकार
- उपभोक्ता को सुनवाई करने का अधिकार
- उपभोक्ता शिक्षा का अधिकार
- क्षति प्राप्त करने का अधिकार आदि।

अध्याय - 8 उपसंहार

एक समय की बात है। समाज की लगातार बढ़ती जटिलता का सामना करने के लिए जानवरों ने तय किया कि कुछ किया जाना चाहिए। उन्होंने आपस में बैठक की और अंततः एक स्कूल शुरू करने की बात पर सभी सहमत हुए।

पाठ्यचर्या में दौड़ना, पेड़ों पर चढ़ना, तैरना और उड़ना शामिल था। चूँकि ज्यादातर विशेषताएँ जानवरों में मौजूद होती हैं, इसलिए उन्होंने यह निर्णय लिया कि सभी विद्यार्थी सभी विषय में भाग लेंगे।

बतख तैरने में सबसे आगे थी। बल्कि अपने शिक्षक से भी आगे। वह उड़ने में भी अच्छी थी। लेकिन दौड़ने में बहुत खराब रही। चूँकि वह इस विषय में कमजोर थी इसलिए उसे अभ्यास के लिए छुट्टी के बाद रोका गया। यहाँ तक कि उसे कुछछ दिनों के लिए तैरना भी छोड़ना पड़ा क्योंकि उसे दौड़ने के लिए अधिक समय चाहिए था। उसने दौड़ने का खूब अभ्यास किया और अंततः उसके जालीदार पैर बुरी तरह घायल हो गए। परिणामतः वह तैरने में भी औसत स्तर पर आ गई। लेकिन औसत से स्कूल को कोई परहेज नहीं था, इसलिए सिवाय बतख के किसी को इस बात का दुःख नहीं था।

इसी तरह खरगोश ने दौड़ने में टॉप किया, लेकिन तैरने में औसत प्रदर्शन के लिए किए गए जबरन अभ्यास ने उसे लगभग पागल कर दिया। तैरने से उसे नफ़रत थी।

गिलहरी पेड़ों पर चढ़ने में सबसे माहिर थी, लेकिन उड़ने में औसत प्रदर्शन के लिए किए गए प्रयास ने उसे भी मानसिक स्तर पर लगभग पंगु कर दिया। लेकिन उड़ने का प्रयास तब तक कराया जाता रहा जब तक वह पूरी तरह थक नहीं गई। परिणाम हुआ चढ़ने में सी और दौड़ने में डी ग्रेड के स्तर तक गिर गई।

चील अनुशासन के मामले में मुसीबत करने वाली साबित हुई थी। पेड़ के ऊपर तक चढ़ने में तो वह सबको पीछे छोड़ जाती, लेकिन उसका चढ़ने का अपना तरीका था, और परीक्षा के बीच में वह अपना यह तरीका छोड़ने को तैयार नहीं थी।

बिल खोदने वाले जानवर विद्यालय के बाहर रहे और उस टैक्स के लिए लड़े जो उन पर शिक्षा के लिए लगाया गया था क्योंकि जमीन खोदना पाठ्यचर्या में नहीं था। उन्होंने अपने बच्चों को बिज्जू के पास पढ़ने के लिए भेजा और बाद में उन्होंने वैकल्पिक शिक्षा के लिए एक प्राइवेट विद्यालय शुरू किया।

शिक्षक-शिक्षा : नयी दृष्टि

शिक्षक-शिक्षा में आमूल-चूल बदलाव इसलिए आवश्यक हो गया है कि इसके प्रभावों और संभावनाओं का विस्तार हो सके। इस आधार पत्र के पिछले अनुभागों में इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया कि शिक्षक-शिक्षा के उपागम में मूलभूत बदलाव किए जाने की जरूरत है। इस नए उपागम के मुख्य लक्षणों का खाका यहाँ प्रस्तुत है।

शिक्षक-शिक्षा : नयी दृष्टि शीर्षक इसलिए ही नहीं रखा गया है कि इसके सारे आयाम पूरी तरह नए हैं। बल्कि इसलिए यह शीर्षक रखा गया है क्योंकि यह शिक्षक-शिक्षा के बारे में हमारी दृष्टि में एक निश्चित बदलाव लाने की बात करता है। यह सही है कि पहले भी इस तरह के प्रयास हो चुके हैं। इनमें से कई बार शिक्षक-शिक्षा की समीक्षा करने, इसे पुनर्जीवित और पुनर्गठित करने की कोशिश की गई है। लेकिन ये प्रयास वास्तविक व्यवहार में नहीं लाए जा सके और कार्यक्षेत्रों में ये प्रासंगिक हैं या नहीं, ऐसा प्रमाण नहीं दे सके।

शिक्षक-शिक्षा को स्कूली व्यवस्था की आवश्यकताओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होना पड़ेगा। इसके लिए शिक्षकों को निम्नलिखित दोहरी भूयिका के लिए तैयार रहना होगा। वे सीखने-सिखाने की परिस्थितियों में उत्साहवर्धक, सहयोगी तथा सीखने को सहज बनाने वाले बनें जो अपने विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभाओं की खोज में, उनकी शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णता तक जानने में, उनमें अपेक्षित सामाजिक तथा मानवीय मूल्यों के तथा चरित्र के विकास में तथा जिम्मेदार नागरिकों की भूयिका निभाने में समर्थ बनाएँ।

एक समूह के सक्रिय सदस्य के रूप में विद्यार्थियों के बदलते हुए सामाजिक तथा व्यक्तिगत ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए स्कूली पाठ्यचर्या के नवीकरण की प्रक्रिया में योगदान देने के चेतन प्रयास करें। ऐसा करने में वे विगत के अनुभवों के साथ राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों और शैक्षणिक प्राथयिकताओं के प्रकाश में उभरती हुई जरूरतों और सरोकारों का ध्यान रखें।

इन अपेक्षाओं से पता चलता है कि अध्यापक बड़े संदर्भ और गतिकी में काम करता है और उससे बड़ी उम्मीदें जुड़ी होती हैं। कहा जा सकता है कि शिक्षक को शिक्षा के सामाजिक संदर्भों के प्रति जवाबदेह और संवेदनशील होना चाहिए। साथ ही उसे विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि के अंतर, राष्ट्रीय तथा वैश्विक संदर्भों, सामाजिक समता, न्याय आदि के राष्ट्रीय लक्ष्यों की जानकारी भी होनी चाहिए।

इन आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए शिक्षक-शिक्षा को इस प्रकार का होना चाहिए जो प्रत्येक प्रशिक्षु को समर्थ बना सकें ताकि वह-

- बच्चों का खयाल रख सके और उनके साथ रहना पसंद करे।
- सायाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।
- व्यक्तिगत अनुभवों से अर्थ निकालने को अधिगम अर्थात सीखना समझे।

♦ सीखने के तरीके समझे, सीखने की अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करने के संभावित तरीके जाने तथा सीखने के प्रकार, गति तथा तरीकों के आधार पर विद्यार्थियों की विभिन्नताओं को समझे।

♦ ज्ञान को चिंतनशील सीखने की सतत उभरती प्रक्रिया।

♦ ज्ञान को पाठ्मपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्मक्तिगत संदर्भों में उसके निर्याण को देखे।

♦ उन सायाजिक, पेशेवर और प्रशासनिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील हो जिनमें उसे काम करना है।

♦ ग्रहणशील हो और लगातार सीखता रहे, सयाज और विश्व को बेहतर बनाने की दिशा में अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके।

♦ वास्तविक परिस्थितियों में न केवल समझदारी वाले रवैमे को अपनाने की उपमुक्त योग्मता का विकास करे बल्कि इस तरह की परिस्थितियों का निर्याण करने के भी योग्म बने।

♦ उसका भाषामी ज्ञान और दक्षता का आधार ठोस हो। घ्घ व्मक्तिगत अपेक्षाओं, आत्मबोध, क्षमताओं, अभिरुचियों आदि की पहचान कर सके।

♦ अपना पेशेवर उन्मुखीकरण करने के लिए सोच समझ कर प्रयास करता रहे। यह विशेष परिस्थितियाँ अध्यापक के रूप में उसकी भूयिका तय करने में मदद करेंगी।

उद्देश्य

यह आवश्यक हो गया है कि शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम इन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए जवाबदेह हो। यह शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम में बुनियादी बदलावों द्वारा ही संभव है। इसका मतलब है कि हमें एकदम नयी दिशा में जाने की आवश्यकता है। जिसके लिए हमें आवश्यक सैद्धांतिक और व्यावहारिक बातें करनी चाहिए। इसके पश्चात् प्रचलित ज्ञान और व्मवहार करने को उचित रूप से शामिल करने के लिए, परिवर्तन के लिए या फिर उन्हें छोड़ने के लिए उन्हें जाँचा-परखा जाना चाहिए। उल्लेखनीय है कि शिक्षक-शिक्षा के इस नए उपागम में बहुत सारे पहलुओं पर विशिष्ट अवधारणात्मक और व्यावहारिक फोकस होना चाहिए। उनमें से कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं :

१. सीखना

विद्यार्थी अधिगम का अनुभव सक्रिय जुड़ाव और सहभागिता के आधार पर प्राप्त करते हैं। इसे करते हुए वे अपने अर्थ और विचार गढ़ते हैं या इन्हें संक्षेप में कहें तो इस प्रकार वे अपने ज्ञान का अपने तरीके से निर्माण करते हैं। इसलिए अधिगम कृत्यों की तलाश, विचारों का सम्मिलन, चिंतन, विश्लेषण और आत्मसातीकरण की प्रक्रिया होती है। इस पर विद्यार्थी के सामाजिक संदर्भ का बड़ा प्रभाव होता है।

२. अधिगम

अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जो कई माध्यमों से होती है न कि पूर्व-निर्धारित शिक्षक द्वारा केवल एक माध्यम से। यह आवश्यक रूप से सहभागिता-आधारित प्रक्रिया होती है जिसमें विद्यार्थी अपना ज्ञान अपने तरीके से बनाता है। इसे यह ग्रहण, पारस्परिक बातचीत, अवलोकन और चिंतन के माध्यम से निर्मित करता है। इस प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी के अधिगम में उतार-चढ़ाव होता रहता है। इसलिए यह प्रक्रिया रेखीम न होकर टेढ़ी-मेढ़ी और जटिल होती है।

अतः अधिगम कोई आसान और सीधी प्रक्रिया नहीं होती। यह जटिल, बहुआयामी और गतिशील प्रक्रिया है।

विद्यार्थी

चूँकि शिक्षक की भूमिका विद्यार्थी और ज्ञान के संदर्भ में आवश्यक मानी जाती है इसलिए शिक्षक-शिक्षा का मुख्य फोकस विद्यार्थी और सीखने पर होना चाहिए। विद्यार्थी को व्यक्ति विशिष्ट के रूप में उसके अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में देखा जाना चाहिए तथा यह जानना चाहिए कि इसमें अद्भुत क्षमता है। इस अर्थ में, विद्यार्थी केवल एक मनोवैज्ञानिक इकाई मात्र नहीं होता, वह जीवंत सहभागी होता है। वह अधिगम प्रक्रिया में भाग लेना चाहता है और उसके सुधार की दिशा में काम भी करना चाहता है। विद्यार्थी अपने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के आधार पर चीजों को समझते हैं, अपनी अभिवृत्ति का विकास करते हैं, और अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर अपने तरीके से चीजों की व्याख्या करते हैं।

सीखने के तरीके और गति के आधार पर विद्यार्थियों में भिन्नता पाई जाती है। एक ही अवस्था में वे अलग-अलग ढंग से सीखते हैं। यह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक से कहीं अधिक होती है। शिक्षकों को विद्यार्थियों में सीखने की वास्तविक क्षमता की पहचान करने और विद्यार्थियों के सीखने के रास्ते को प्रतिबंधित किए बिना या बिना किसी आदेश के आगे ले जाने के सरल तरीके ढूँढ़ने की जरूरत है। शिक्षक-शिक्षा को शिक्षकों को इस दिशा में सक्षम बनाने वाला होना चाहिए कि वह विद्यार्थियों की विविधताओं का सम्मान कर सके और यह भी समझ सके कि यह एक गतिशील प्रक्रिया है।

इस प्रकार विद्यार्थी सक्रिय और सहयोगी बनेंगे और अपने उद्देश्यों, रणनीतियों तथा परिस्थितियों के प्रति सजग होंगे और साथ ही जिम्मेदार भी होंगे। यहाँ सीखने वालों की क्षमता को स्थायी नहीं माना गया है बल्कि यह माना गया है कि अनुभव के साथ उनका विकास होता है।

शिक्षक

शिक्षक की मुख्य भूमिका सीखने के मार्ग में सहायता करने वाले की होती है। शिक्षक वह होता है जो विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं की पहचान कराए, उनके व्यक्तिगत तथा संदर्भ विशिष्ट अनुभवों को इस तरीके से सामने रखे कि वे राष्ट्र के संदर्भ में स्वीकृत हों।

शिक्षक को यह समझना चाहिए कि पाठ्यचर्या विद्यार्थी केंद्रित सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में विकसित होती है, वह पहले से कम नहीं हो सकती। शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा सीखे जाने की प्रक्रिया में संभव सहयोग देने के लिए ही तैयार किया जाता है। लेकिन प्रत्येक अधिगम परिस्थिति संचित रूप से शिक्षक को बच्चों की जरूरतों को पहचानने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

ऐसी कोई एक पद्धति नहीं है जो सभी विद्यार्थियों को एक ही ढंग से सिखा सके। हर शिक्षक को बोधगम्य अभ्यास द्वारा अलग-अलग विद्यार्थियों में सीखने के तरीके पहचानने होंगे लेकिन इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि सभी विद्यार्थी अपने-अपने ढंग से सीखते हैं। शिक्षण विधि की प्रभाविता और उपयुक्तता जाँचने के दो पहलू हैं। पहला है शिक्षक की अपनी शैली जिसमें वह विधि या विधियों का उपयोग करता है। इसका संबंध उसकी अपनी जरूरत से होता है। दूसरा है विद्यार्थियों के सीखने का अपना ढंग। अनोखे ढंग की सहभागिता, सीखने या जानने की प्रक्रिया में शिक्षक तथा विद्यार्थी की भूमिका स्पष्ट रूप से सामने लाती है। जब इसमें दोनों ज्ञान की प्रक्रिया में भाग लेते हैं तो लाभान्वित होते हैं। विद्यार्थी के लिए अधिगम ग्रहण करना शैक्षिक परिस्थितियों का एक बड़ा सरोकार है। इस दृष्टि में तकनीकी रूप से दोनों ही सीखने वाले हैं।

शिक्षक को अपने आपको ऐसे पेशेवर के रूप में देखने की आवश्यकता है जिसमें उपयुक्त क्षमता, लगन, उत्साह, नए तरीके अपनाने की लगन और चिंतनशीलता है। उसमें संवेदनशीलता भी है, न केवल विद्यार्थियों और संस्था के लिए बल्कि बृहत् सामाजिक संदर्भ में जिसमें व्यक्ति कार्य करता है, की उभरती चिंताओं के प्रति भी।

शिक्षक को समझ लेना चाहिए कि विद्यार्थी स्कूल में अब उसे ज्ञान के स्रोत के रूप में नहीं देखते। मीडिया ने उनके सामने अनंत संभावनाएँ खोली हैं। फिर भी बहुत सारी ऐसी बातों; जो अव्यवस्थित सूचनाओं के रूप में हैं, को विद्यार्थी को अर्थपूर्ण ढंग तथा सकारात्यक ढंग से सिखाना शिक्षक के हिस्से में ही आता है। अभी आई.सी.टी. जैसी सुविधाओं तक सभी की पहुँच होने में समय लगेगा। शिक्षक को इस तरह की परिस्थिति में आई.सी.टी. के साथ और इसके बिना प्रभावी रहने के लिए न केवल दक्षता चाहिए बल्कि ऐसी संवेदनशीलता भी जो युवा विद्यार्थियों को उपयुक्त संदर्भ में परिस्थिति को समझने और स्वीकार करने की ओर ले जाए।

शिक्षक को क्रिया-आधारित शिक्षण की प्रवृत्ति और गतिशीलता को समझना चाहिए। यह समझ चीजों को जैसे का तैसा संज्ञानात्मक रूप से स्वीकार करने के बदले खुद करने के लिए प्रेरित करेगी। और यह ध्यान दिलाएगी कि क्या काम करता है क्या नहीं। इसके साथ ही यह क्रिया का आलोचनात्मक विश्लेषण, चिंतन तथा आत्मसात् करने में मदद करेगी। इसलिए शिक्षक-शिक्षा व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए तैयार करती है।

शिक्षक और शिक्षा जैसे शब्दों के पारंपरिक अर्थ को बदले जाने की जरूरत है अगर सीखने को शिक्षक-शिक्षा के केंद्र में रखना है। क्योंकि शिक्षण में यह निश्चित होता है कि एक शिक्षक क्या करता है? इससे यह पता चलता है कि सीखना

शिक्षण का परिणाम होता है। शिक्षक, शिक्षक के क्रियाकलापों और शिक्षक की तैयारी में बदलाव लाना ही होगा ऐसी परिस्थितियों के लिए जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अलग ढंग से अलग-अलग स्तरों पर, अलग गति और शैली से साथ-साथ सीखता है।

हमारे देश में अलग-अलग विशिष्टताओं वाली विविध स्कूली व्यवस्थाएँ हैं, फिर भी वे राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न चरणों की स्कूली शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों में हिस्सेदारी निभाती हैं। शिक्षक को इन विविधताओं और इनकी अपेक्षाओं का अंदाजा होना चाहिए। इससे शिक्षक को किसी भी स्कूल व्यवस्था में सयायोजन करने में और ठीक से काम करने में मदद मिल सकती है।

ज्ञान

शिक्षक-शिक्षा में ज्ञान का अवयव शिक्षा अनुशासन के विस्तृत क्षेत्रा से लिया गया है और इसे इसी तरह से दर्शाए जाने की जरूरत है। इसलिए भी शिक्षा के संदर्भ में इसकी पद्धति बहु-अनुशासनिक है। दूसरे शब्दों में, शिक्षक-शिक्षा में अवधारणात्मक इनपुट इस तरीके से उच्चारित किए जाने चाहिए ताकि वे शैक्षिक घटनाओं, क्रियाकलापों, कार्यों, प्रयासों, प्रक्रियाओं, अवधारणाओं, घटनाओं इत्यादि का वर्णन कर सकें तथा इनकी व्याख्या कर सकें। अत: ऐसा करने के लिए अन्य संज्ञानात्मक विषयों से अवधारणाओं को लिया जा सकता है परंतु शैक्षिक घटकों की मिश्रित समझ के लिए इन्हें समायोजित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, सीखने संबंधी विविध सैद्धांतिक विचार जिन्हें आवश्यक रूप से मनोविज्ञान से लिया गया है इन्हें, इस तरह से देखने की जरूरत है कि ये शिक्षक को यह समझने के लिए कि अधिगम को कैसे समझा गया, कैसे इस पर चर्चा हुई, इसे कैसे पहचाना गया और सबसे जरू री है कि यह कैसे हो सकता है, अवधारणात्मक आधार देता है। अर्थात् इस बात की समझ कि कैसे एक शिक्षक की अवधारणात्मक समझ उसके सीखने की परिस्थितियों के निर्माण के संबंध में लिए गए निर्णयों को प्रभावित करती है। इन निर्णयों के पीछे सैद्धांतिक व्याख्याएँ होती हैं। इसी तरह समाज में सदा बदलने वाले सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक दृष्टिकोण न केवल शिक्षक के बोध और धारणा को प्रभावित करते हैं बल्कि सीखने वालों के विचारों और प्रतिक्रियाओं को भी। इस तरह के अंतर-क्रियात्मक बलों को सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों की मदद से समझना होगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे प्रयास किए जाएँ कि शिक्षक-शिक्षा के ज्ञान निर्माण के क्रम में व्याख्याओं के प्रस्तुतीकरण में शिक्षा का दष्टिकोण हो न कि अन्य विषयों के शिक्षा संबंधी दष्टिकोण शिक्षा में निहितार्थ के साथ। कोशिश पहले से विद्यमान सिद्धांत से व्यवहार की बजाय व्यवहार से सिद्धांत की ओर जाने की हो।

शिक्षक-शिक्षा में कई तरह के ज्ञान शामिल हैं उदाहरण के लिए, अवधारणात्मक, तकनीकी तथा पेशेवर इत्यादि। घ्घ शिक्षक-शिक्षा में ज्ञान के विविध अवयव शुरुआत करने वाले के लिए स्पज्ट होने चाहिए जैसे विद्यार्थी, शिक्षक और शैक्षिक दृज्टिकोण जिसमें किसी के कार्यों को समझा जा सके और शिक्षक-शिक्षा के दौरान अधिगम को अधिक सार्थक, अर्थपूर्ण और उपयोगी बनाया जा सके।

इस तरह समर्थ और सक्षम शिक्षक अच्छा अधिगम वातावरण देनेवाला बन जाता है जो यांत्रिक रूप से विद्यमान परिस्थितियों से सयायोजन ही नहीं करता बल्कि उन्हें सुधारने का प्रयत्न भी करता है और उसमें आवश्यक तकनीकी जानकारी तथा आत्मविश्वास भी होता है।

सामाजिक संदर्भ

शिक्षा पर उस परिवेश का बड़ा प्रभाव होता है जिससे शिक्षक और विद्यार्थी आते हैं। स्कूल और कक्षा के सामाजिक संदर्भ का सीखने की प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसे देखते हुए विद्यार्थी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की जगह उसके सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक संदर्भों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए।

♦ संदर्भ बदलने पर सीखने की प्रक्रिया में भी अंतर आता है। स्कूली शिक्षा और सीखना दोनों बाहर के सामाजिक संदर्भों से प्रभावित होते हैं तथा बढ़ते हैं। शिक्षा केवल एक संस्थान के अंदर अवकल्पित उद्देश्य तक सीमित नहीं होती। बाहर के ज्ञान को स्कूल के भीतर के ज्ञान से जोड़ा जाए तो वह बहुत मूल्यवान हो सकती है।

♦ ऐसी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए जो सामाजिक और रोजमर्रा के संदर्भों से जुड़ी हो। साधारणत: शैक्षिक चिंतकों जैसे गांधी, टैगोर, गिजूभाई, डिवी एवं अन्य द्वारा व्यक्त कई विचारों को उनके सामाजिक, ऐतिहासिक संदर्भों को समझे बिना जिसमें वे विकसित होते हैं, पढ़ा जाता है।

♦ शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम में आधुनिक भारतीय समाज के मुख्य मुद्दों जैसे समाज का बहुलतावादी स्वभाव और अस्मिता के मुद्दे, जेंडर, समानता और गरीबी को महत्व दिया जाना चाहिए। इससे शिक्षकों को शिक्षा को संदर्भित करने में सहूलियत होगी और शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों की गहरी समझ और समाज से उसके संबंधों का बोध भी हो सकेगा।

मूल्यांकन

♦ यह समझने की आवश्यकता है कि सीखने का मूल्यांकन एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें पर्याप्त संवेदनशीलता और लचीलापन होना चाहिए ताकि यह अनुमान हो सके कि विद्यार्थी ने वास्तव में क्या सीखा है।

♦ नए शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम में मूल्यांकन की प्रक्रिया सतत हो, ऐसा सुझाव है। शिक्षक-प्रशिक्षक विद्यार्थी-शिक्षकों का मूल्यांकन उनके गुणों जैसे सहयोग और सहभागिता, अन्वेषण और एकीकरण के आधार पर करते हैं। साथ ही लिखित व मौखिक कौशलों, उनकी शैली तथा प्रस्तुतीकरण में नवीनता आदि के आधार पर भी मूल्यांकन किया जाता है।

♦ मूल्यांकन कई प्रकार के होते हैं जैसे स्व-मूल्यांकन, छात्र मूल्यांकन, शिक्षक का सकारात्मक प्रतिपुष्टि तथा वर्ष के अंत में किया गया औपचारिक मूल्यांकन। इन सभी मूल्यांकनों का उद्देश्य है विद्यार्थी-अध्यापक अपनी कमियों और अच्छाइयों को समझ सकें और यह समझ सकें कि उसमें क्या सुधार लाया जा सकता है तथा सीखने की प्रक्रिया का अगला लक्ष्य भी निर्धारित कर सकें।

♦ मूल्यांकन आमतौर पर गुणात्मक होगा न कि मात्रात्मक

जिससे कि लगातार यह प्रक्रिया सतत हो और विविध गतिविधियों में उनकी निष्पत्ति के आधार पर उनका स्थान कम होगा।